आरसी

राजकीय पोर्ट बहुद्देशीय उच्चतर माध्यमिक शाला

की

वार्षिक पत्रिका

वर्ष ३ अङ्क ७

सम्पादक मंडल

लाल बहादुर शास्त्री स्मृति अंक

जय किसान

स्वर्गीय शास्त्री जी ने हमें 'जय जवान, जय किसान' का जो नारा दिया था, वह अर्थ-गर्भित एवं प्रेरणाप्रद था। जवानों ने इससे प्रेरणा प्राप्त कर शत्रुओं के दांत खट्टे किए और देश का मस्तक गर्वोन्नत किया। अब उनके 'जय किसान' के नारे में अंतर्भूत भावना को आत्मसात् कर देश को अन्न की दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाना है। जिस देश में कभी दूध और घी की नदियां बहती थीं और अन्न की बहुतायत थी, वह आज अपनी बुभुक्षा शांत करने के लिए अपने हाथों मे भिक्षापात्र लेकर दर-दर अन्न मांगे—यह कितनी लज्जा, बेहयाई, पुरुषार्थहीनता एवं दयनीयता की बात है। हमारी जनसंख्या अमेरिका, आस्ट्रेलिया एवं कनाडा से कई गुना अधिक है, हमारे पास भूमि भी उनसे ज्यादा है, फिर भी हम अपने से छोटे उन देशों से उदर पूर्ति के लिए खाद्यान्न मंगाकर देश को उनकी आर्थिक गुलामी में बांधने का उपक्रम कर रहे हैं। आर्थिक परतंत्रता राजनीतिक पराधीनता से अधिक भयावह होती है। अतः यदि हम चाहते हैं कि विश्व में हमारा स्वाभिमान बना रहे, अन्न के आयात में करोड़ों की विदेशी

पूंजी खर्च कर देश को औद्योगिक दृष्टि से पंगु न बनाएँ, तो हमें शास्त्री जी के 'जय किसान' के नारे को शीघ्र क्रियान्वित करना होगा।

इस नारे की क्रियान्विति में छात्रों के सहयोग की नितान्त आवश्यकता है। छात्रों की शक्ति का सदुपयोग न करने के कारण आज वह देश के लिए अत्यन्त घातक और विस्फोटक बन गई है। रचनात्मक कार्यों के अभाव में उनकी शक्तियाँ विघातक दिशा की ओर उन्मुख हो रही हैं। संपत्ति के उत्पादन के स्थान पर वे उसका विनाश करने पर तुले बैठे हैं। आज देश को पुस्तककीटों की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता है उन कर्मठ कृषि-विशारदों की जो गांवों में जाकर स्वयं नये तरीकों से खेती करें तथा किसानों को भी आधुनिक प्रणाली से अन्नोत्पादन में सहयोग और सहायता दें। ग्रामीण युवकों के लिए गांवों में कृषि विद्यालय एवं छोटे उद्योग-धंधों के लिए औद्योगिक शालाएं खोल कर उन्हें वहीं प्रशिक्षित किया जाए ताकि वे शहरों की ओर न भाग कर अपने गांवों में ही जमे रहें तथा उनके विकास में अपनी समस्त शक्तियाँ नियोजित कर दें। आज हमारे नवयुवक छात्र विवेकहीनता के कारण पथभ्रष्ट हो रहे हैं। वे अपनी समस्याओं के हल के लिए सरकार पर निर्भर न रहें तथा संगठित होकर अपनी समस्याओं का गहन विचार-मंथन द्वारा स्वयं हल ढूंढ़ें। इंडोनेशिया तथा अन्य देशों में छात्र राजनीतिज्ञों एवं शासकों का पथ-निर्देशन कर रहे हैं। उनकी अपरिमेय शक्ति एवं दुर्दमनीय साहस के समक्ष राज-सत्ताएं थर्रा रही हैं। छात्रों की यही शक्ति यदि संगठित होकर खेतों में जुट जाय तो देश की खाद्य-समस्या अविलंब रूप से हल हो सकती है। छात्रों की ओर से किया गया इस प्रकार का प्रयत्न स्वर्गीय शास्त्री जी की स्मृति को अर्पित सबसे बड़ी पुण्यमयी एवं सच्ची श्रद्धांजलि होगी। हम आशा करते हैं कि हमारे नवयुवक और छात्र चहुं-दिशि निर्माणकारी प्रवृत्तियों में संलग्न हो देश का उत्थान करेंगे।

सन्देश

राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली-4 ।
RASHTRAPATI BHAVAN,
NEW DELHI-4

अक्टूबर १०, १९६६.

प्रिय श्री मक्खन सिंह,

स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री की याद में 'भारती' का सप्तम संस्करण निकालने के प्रयास में मैं आपकी सफलता चाहता हूं ।

भवदीय,

स राधाकृष्ण

(स० राधाकृष्णन)

श्री मक्खन सिंह,
प्रधानाध्यापक,
गवर्नमेन्ट फोर्ट एम.पी.एच.एस. स्कूल,
बीकानेर ।

७, त्यागराज मार्ग,
नई दिल्ली-११.

६ अक्तूबर, १९६६

भाई श्री मक्खन सिंह,
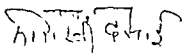
आपका १ अक्तूबर का पत्र और साथ में भेजा हुआ 'भारती' का अंक मुझे मिले हैं। 'भारती' का सप्तम अंक श्री लाल बहादुर शास्त्री की स्मृति के लिए समर्पित किया जा रहा है, जानकर खुशी हुई। श्री लाल बहादुर शास्त्री एक परम देशभक्त हैं और उनके जीवन से 'भारती' के पाठकों को प्रेरणा मिले, ऐसी मेरी शुभ कामनाएं हैं।

(मोरारजी देसाई)

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि राजकीय फोर्ट मल्टीपरपज़ हायर सेकण्डरी स्कूल, बीकानेर अपनी पत्रिका "भारती" का सप्तम संस्करण स्वर्गीय श्री लाल बहादुर शास्त्री के सम्मान में निकाल रहा है ।

लघुकाय विराट मानव श्री लाल बहादुर शास्त्री वस्तुतः भारत की कोटि कोटि जनता के प्रतिनिधि थे । उन्होंने अपने शासन के स्वल्पकाल में भारत को नई गरिमा, नया ओज और नया रूप दिया । इतने लाभ की विजयी होते हुए भी ताशकंद-घोषणा के द्वारा संसार की मानवता को शान्ति का एक नया सन्देश दिया । इस प्रकार एक बार फिर उन्होंने देवानां प्रिय अशोक के आदर्श संसार के सामने रखा और "जय जवान जय किसान" का घोष करके राष्ट्र को स्वावलम्बी बनने का मंत्र दिया । मुझे आशा है कि इस विशेषांक से प्रत्येक अध्यापक, विद्यार्थी तथा अन्य अभिभावकों को नई प्रेरणा मिलेगी और वे शास्त्री जी के पद चिन्हों पर चल कर देश का निर्माण एवं उत्थान करेंगे ।

मैं इस विशेषांक की सफलता चाहता हूं ।

धर्मवीर

(धर्मवीर)

राज्यपाल, पंजाब

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि राजकीय फोर्ट मल्टीपरपज़ हायर सैकण्डरी स्कूल, बीकानेर अपनी पत्रिका "भारती" का सप्तम संस्करण स्वर्गीय श्री लाल बहादुर शास्त्री के सम्मान में निकाल रहा है ।

लघुकाय विराट मानव श्री लाल बहादुर शास्त्री वस्तुतः भारत की कोटि कोटि जनता के प्रतिनिधि थे । उन्होंने अपने शासन के स्वल्पकाल में भारत को नई गरिमा, नया ओज और नया रूप दिया । इसके साथ ही विजयी होते हुए भी ताशकंद-घोषणा के द्वारा संसार की मानवता को शान्ति का एक नया सन्देश दिया । इस प्रकार एक बार फिर उन्होंने "देवानां प्रिय अशोक" का आदर्श संसार के सामने रखा और "जय जवान जय किसान" का घोष करके राष्ट्र को स्वावलम्बी बनने का मंत्र दिया । मुझे आशा है कि इस विशेषांक को पढ़कर अध्यापक, विद्यार्थी तथा अन्य अभिभावकों को नई प्रेरणा मिलेगी और वे शास्त्री जी के पद चिन्हों पर चल कर देश का निर्माण एवं उत्थान करेंगे ।

मैं इस विशेषांक की सफलता चाहता हूं ।

धर्मवीर

(धर्मवीर)

गवर्नर, पंजाब

[illegible]

रेल मंत्री, भारत
MINISTER FOR RAILWAYS
INDIA

नयी दिल्ली

दिनांक १६-१०-१९६६

प्रधानाध्यापक
राजकीय फोर्ट चंडीदान उज्ज्वल
माध्यमिक शाला,
बीकानेर।

महोदय,

आपके १ जनवरी के पत्र के लिए धन्यवाद।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप अपने विद्यालय की पत्रिका "भारती" का एक विशेषांक स्व० श्री लाल बहादुर शास्त्री जी के सम्मान में निकाल रहे हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि स्व० शास्त्री जी ने अपने कार्यकाल में अपूर्व सौजन्य का जो परिचय दिया और राष्ट्रवासियों का जो मार्गदर्शन किया वह पीढ़ियों तक याद रहेगा। उनके कारण हमारे देश का सम्मान बढ़ा है। मुझे विश्वास है कि इस विशेषांक को पढ़कर सभी अध्यापकों, विद्यार्थियों तथा अभिभावकों को भी नयी प्रेरणा मिलेगी। विशेषांक की सफलता के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय,

(स. का. पाटिल)

MINISTER
INFORMATION & BROADCASTING
INDIA

सं० 10626 -आर०बी०एम०।66/8649 नई दिल्ली
दिनांक, 22 अक्टूबर 1966

प्रिय श्री मक्खन सिंह जी,

नमस्कार ।

मुझे यह जान कर प्रसन्नता हुई कि राजकीय फोर्ट बहुउद्देशीय उच्चतर माध्यमिक शाला की गृह पत्रिका " भारती का सप्तम संस्करण स्वर्गीय श्री लाल बहादुर जी शास्त्री को समर्पित किया जा रहा है । आशा है भारती का यह अंक स्व० शास्त्री जी की विशेषताओं को जनसाधारण तक प्रसारित करने में सफल होगा ।

मेरी शुभ कामनायें ।

आपका
राज बहादुर
(राज बहादुर)

श्री मक्खन सिंह,
प्रधानाध्यापक,
राजकीय फोर्ट बहुउद्देशीय उच्चतर
माध्यमिक शाला,
बीकानेर ।

Encl. one photograph

कुमार

[illegible]

उप शिक्षा मंत्री
भारत
DEPUTY EDUCATION MINISTER
INDIA
नई दिल्ली
अगस्त १४, १९६६ ई०
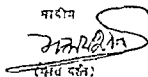
प्रिय महोदय,

आपके १ अगस्त के पत्र संख्या २४४।६६ के लिये धन्यवाद।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपके विद्यालय की गृह-पत्रिका का एक विशेषांक स्वर्गीय श्री लालबहादुर शास्त्री जी की स्मृति में प्रकाशित किया जा रहा है। जिस सुन्दर उद्देश्य से आप इस विशेषांक को प्रकाशित कर रहे हैं, उसके लिये बधाइयां स्वीकार कीजिये। मुझे पूरा भरोसा है कि आपके विद्यालय से सम्बन्धित अध्यापक तथा छात्र और उनके अभिभावक स्वर्गीय शास्त्री जी के जीवन और उनके कार्यों से प्रेरणा लेंगे। अपने आयोजन के लिये मेरी हार्दिक शुभकामनायें स्वीकार कीजिये।

भवदीय
भक्तदर्शन
(भक्त दर्शन)

श्री मस्तानसिंह जी,
प्रधानाध्यापक,
गवर्नमेंट फोर्ट एम० पी० एच० एस० स्कूल,
बीकानेर (राजस्थान)।
- - - - - - - - -

JODHPUR
१०-१०-१९६६

मुझे यह जानकर परम प्रसन्नता है कि राजकीय पटेल बहुद्देशीय उच्चतर माध्यमिक शाला की मुख्य पत्रिका "भारती" का सप्तम संस्करण स्वर्गीय श्री लालबहादुर शास्त्री की स्मृति में प्रकाशित किया जा रहा है।

शास्त्रीजी का जीवन आदर्शमय था। एक साधारण से परिवार में जन्म लेकर किस प्रकार उन्होंने अर्थाभाव होते हुए भी लगन और उत्साह के साथ विद्याध्ययन किया, किस प्रकार निःस्वार्थ भाव से देश की तन मन से सेवाएं कीं, किस प्रकार नेकनीयती से देश के प्रशासन को चलाते हुए प्रधानमंत्री पद को सुशोभित किया और अन्त में किस प्रकार शान्ति स्थापित करने के प्रयास में देश के लिए अपने प्राण न्यौछावर किये- यह सब घटनायें भारतवासियों के लिए एक प्रेरणा-दायक जीवन स्रोत हैं। वह एक निष्काम कर्मयोगी थे। उनके जीवन से अवश्य ही विद्यार्थीगण शिक्षा ग्रहण करेंगे। साथ ही उन्हें उस दिव्य आत्मा के प्रति भावात्मक श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर भी प्राप्त होगा। अतः शाला का यह प्रयास अत्यन्त सराहनीय है और शाला परिवार बधाई का पात्र है।

भारती के सप्तम संस्करण के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनायें हैं।

दुर्गाशंकर दवे

(दुर्गाशंकर दवे)

प्रिय श्री मक्खनसिंह,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि फोर्ट बहूद्देशीय उच्चतर माध्यमिक शाला, बीकानेर १९६५-६६ के सत्र की शाला-पत्रिका 'भारती' प्रकाशित कर रही है जो स्व० प्रधान मन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री की स्मृति मे होगी। भारती गत दो वर्षों से समूचे राजस्थान की शालेय-पत्रिकाओ मे प्रथम रही है जिसके लिये प्रधानाध्यापक तथा सपादकगण बधाई के पात्र हैं। भारती का यह अङ्क शास्त्री जी के आदर्शों के अनुरूप सर्वांग-सुन्दर सामग्री प्रस्तुत कर छात्रों में साहस, देश-प्रेम एव अनुशासन की भावना जाग्रत करेगा, ऐसा विश्वास है। मेरी शुभ कामनाएं।

रामचन्द्र कल्ला
उपाध्यक्ष—शिक्षा विभाग
जोधपुर बीकानेर रेंज
जोधपुर

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि राजकीय फोर्ट बहुद्देशीय उच्चतर माध्यमिक शाला, बीकानेर इस वर्ष भारती का अंक स्व० प्रधान मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री की पुण्य स्मृति मे प्रकाशित कर रहा है।

स्व० श्री शास्त्री की स्मृति भारत जैसे आर्थिक दृष्टि से हीन देश के हर परिवार को रखना आवश्यक है। छात्र यह स्मरण रखने का प्रयास करेंगे कि स्व० शास्त्री जी का जन्म साधारण परिवार मे हुआ। किस प्रकार वे आर्थिक संकटो मे होते हुए भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने मे सफल हुए। श्री शास्त्री जी की शिक्षा और व्यक्तित्व उस आम्र वृक्ष के समान है जिसका फल स्वयं प्राप्त न कर समाज के प्राणी प्राप्त करते है और एक विशेष सुख और स्वाद का अनुभव करते है। श्रीमान शास्त्री जी के जीवन ने स्पष्ट कर दिया कि समाज को किस प्रकार अपनी सेवाओं से लाभान्वित किया जा सकता है। उनके जीवन को याद करते-करते यह उक्ति स्वतः याद आती है— A crowded hour of glory is worth an age without a name"

यों तो लोगों के शासनकाल दीर्घ काल तक देखे गए हैं लेकिन अल्प काल में कितने व्यक्ति देश को लाभान्वित करने मे सफल हुए हैं, वह सदैव ही विचारणीय है। और इस विचार के साथ उक्त उक्ति छात्र सदैव ही हृदयगम करेंगे।

ए० एस० दवे
निरीक्षक, शिक्षणालय
बीकानेर

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

विज्ञान विभाग

★

संस्कृत विभाग

★

निष्कामेश्वर मिश्र का आना देखकर सभी लड़के भाग खड़े हुए। लाल बहादुर ने देखा कि वह निष्कामेश्वर मिश्र के सामने खड़े हुए हैं। लाल बहादुर की आखें डबडबा आयी। जब लाल बहादुर ने बताया कि उन्होंने बाल क्यों कटवा लिये हैं तो निष्कामेश्वर मिश्र पसीज उठे। लाल बहादुर को तो वे शुरु से ही बहुत प्यार करते थे।

यही लाल बहादुर आगे जाकर लाल बहादुर शास्त्री बने। इनमे आत्म-त्याग की प्रबल भावना थी। इस बात का पता इस घटना से चलता है।

१९५२ मे जवाहर लाल जी ने इन्हे परिवहन व रेल मन्त्री बना दिया। नवम्बर १९५६ मे एक दिन रेल-मन्त्री लाल बहादुर शास्त्री अपने कमरे मे टहल रहे थे। आधी रात का वक्त था। लेकिन फिर भी उनकी आखो मे नींद नही थी। बार-बार उनका हृदय अपने को ही धिक्कार उठता। इसका कारण था अरियालूर की रेल दुर्घटना, जिनने डेढ सौ से भी अधिक लोग मौत की नींद सो गये। यदि शास्त्री जी के स्थान पर कोई और होता तो कभी न सोचता कि इस दुर्घटना की सारी जिम्मेदारी रेल-मन्त्री की है। वह यही कहता कि ड्राइवर की गल्ती हुई होगी, स्टेशन मास्टर की या स्टेशन के ही अन्य कर्मचारी की गल्ती हुई होगी।

लेकिन शास्त्री जी व अन्य मत्रियो मे यही तो अन्तर था। आधी रात हो गई, लेकिन शास्त्री जी ने एक क्षण के लिए भी पलक नही झपकाई। अगर रेल-विभाग मे कोई कमजोरी आई थी तो उसे दूर करना रेल मन्त्री का काम था। वे यही सोच रहे थे। मैं यह काम पूरा न कर सका इसीलिये यह दुर्घटना हुई। मेरे ही कारण इतने बेकसूर लोग मारे गए। कितना भयकर अपराध हो गया मुझ से! लेकिन अब?

अब क्या किया जाय? क्या प्रायश्चित है इसका? टहलते-टहलते उनके कदम रुक गए। हा......एक उपाय है। मुझे अपने पद से स्तीफा दे देना चाहिए।

उपाय सूझते ही उनके मन को परम शान्ति मिली। वे मेज के पास आए। कागज, कलम निकाली और जवाहर लाल नेहरु के नाम उन्होने अपना स्तीफा लिखा और लिफाफे मे बंद कर दिया। सुबह यह लिफाफा नेहरु जी को पहुचा दिया।

"लाल बहादुर! मै नही सोचता कि तुम्हे स्तीफा देना चाहिये।" पडित नेहरु ने समझाते हुए कहा, 'दुर्घटनाए सयोग वश होती हैं। रेल मन्त्री का उसमे क्या कसूर?"

"नही पडित जी, कसूर हो या न हो, लेकिन सोचिये, अगर मैं स्तीफा देता हूं तो इसका पूरे रेल-विभाग पर कितना असर पड़ेगा। अगर मेरे स्तीफे के कारण उसमे जरा भी मुस्तैदी आती है तो बस मैं स्तीफे को सफल मानूगा।" शास्त्री जी ने दृढ़ता से कहा।

"अच्छा तो, लाल बहादुर मैं तुम्हे अपने मन्त्रि-मण्डल से खोना नही चाहता। तुम्हारे जैसे

पर आकर सूर्य डूब गया। इतिहास का महान् अध्याय लिखने वाली आत्मा परमात्मा में लीन हो गई।

उत्साह की किरणों के नृत्य को हटाकर दुःख के बादल छा गये। जहाँ होठों को मुस्कराना था वहा आखें बरसने लगीं। अर्थात् मुस्कान आसुओं में बदल गई। देशवासी सोच रहे थे कि नन्हा-सा प्रधानमन्त्री शान्ति के ऊंचे शिखर को छूता हुआ विमान से उतरेगा तो कहेंगे —"जो काम स्व० प्रधान मन्त्री जवाहर लाल जी अठारह वर्ष में भी न कर सके वही काम श्री शास्त्री जी ने अठारह मास में कर दिखाया।" परन्तु विमान आया अवश्य, उसमें लाल बहादुर भी थे, उनकी महानता भी थी, लेकिन कोई कुछ कह नहीं सका। हर बात, हर भाव आसुओं में डूबने लगे।

मृत्यु वास्तव में बड़ी बलवान है, तो भी केवल राही को छीन सकती है, रास्ते के पद-चिन्हों को नहीं मिटा सकती। श्री लालबहादुर शास्त्री अपने संक्षिप्त शासन-काल में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में एक महान् नेता के रूप में उपस्थित हुए थे। उन्होंने जिस समस्या को स्पर्श किया उसका हल ढूंढ निकाला। शास्त्री जी के ही समय में भारत को सबसे गंभीर खाद्य संकट का सामना करना पड़ा परन्तु उन्होंने अपूर्व धैर्य से उसे सुलझा दिया।

श्री शास्त्री के जीवन का हर क्षण देश सेवा में गुजरा है। इसलिये उनके उपकारों के नीचे सारा देश दबा हुआ है। पाकिस्तान और भारत का यह समझौता एक चमत्कार है। शास्त्री जी का यह काम भी उन्हें अमर कर देने योग्य है। लेकिन वह चमत्कार करने वाला रहा नहीं शान्ति की खोज करने वाला स्वयं शान्ति की नींद में सो गया। जीवन की अन्तिम घड़ी तक वे देश की सेवा करते रहे। भारत के इस सच्चे शान्ति-प्रेमी को भारत के राष्ट्रपति द्वारा भारतरत्न की उपाधि से बारह जनवरी को विभूषित किया गया। शोक में डूबा भारत देशरक्षक भारतरत्न लालबहादुर के चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

मेरे देशवासियो !

इसमें संदेह नहीं कि जो खूब सोते हैं, वे खूब जागते भी हैं। भारतवर्ष बहुत काल तक सोता रहा है। इसलिए हम निःसंदेह यह कह सकते हैं कि अंधविश्वास या पुराने सड़े-गले रीति-रिवाज अब धीरे-धीरे दूर हो रहे हैं और आलस्य उड़ता जा रहा है।

उन्नति का नियम बाहरी क्रिया में विभिन्नता और भीतरी स्वरूप एवं भाव में पूर्ण एकता चाहता है। ऐसा न होने पर जड़ता पैदा हो जाती है। किसी ने व्याकरण को भाषा का श्मशान कहा है। ज्यों ही आप भाषा को अचल और सुरक्षित बनाने का प्रयत्न करेंगे, वह तत्काल निर्जीव हो जायेगी। ठीक इसी प्रकार नियमों और कर्मकांड की दृढ़ अचलता राष्ट्र का सत्व भक्षण कर लेती है।

—स्वामी रामतीर्थ

वर्तमान संकट में भारतीय छात्रों का राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य

देश की स्वतन्त्रता से पूर्व भारतीय छात्रों के सोचने के लिये दो प्रश्न हो सकते थे। वह स्वतंत्र देश का छात्र होकर अपना जीवन निर्वाह करे अथवा एक गुलाम पशु की तरह विदेशी सरकार के अधीन रह कर अपनी जिन्दगी के छकड़े को चलाता रहे। लेकिन उस समय भारतीय छात्रों ने स्वतंत्र देश का छात्र रहना ही पसन्द किया। उसने विश्व के सम्मुख एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करते हुए मातृभूमि के लिये तन-मन-धन न्यौछावर कर दिया। उसने १६४७ का स्वतंत्रता दिवस हमारे सम्मुख लाकर इस बात का प्रमाण दिया कि वह देश को ऊँचा उठा सकने में समर्थ है।

नापाक पड़ौसी दुश्मनो द्वारा किए हमलों के समय भी भारतीय छात्रों ने भावात्मक एकता मजबूत करते हुए बिना लिंग व जाति-भेद के कन्धे से कन्धा मिलाकर खूनी पजों को नाकामयाब किया और देश ने जब कभी भी उनको आमन्त्रित किया, उन्होंने बडी तत्परता दिखाई। उन्होने विश्व को दिखा दिया कि छात्रो की ताकत के सम्मुख ईश्वर की ताकत को भी झुकना पड़ता है। इस का नाजायज फायदा कुछ स्वार्थी तत्व उन्हें साधन के रूप में इस्तेमाल कर उठाते हैं और वे परोक्ष रूप मे अपना स्वार्थ सिद्ध करने मे लगे रहते है!

आज भारत के प्रायः सभी बड़े-बडे प्रान्त छात्रो की अनुशासनहीनता से छटपटा रहे हैं। छात्रो को अपनी ताकत का लाभ देश को देना है, न कि राष्ट्रीय सम्पत्ति को नष्ट-भ्रष्ट करने में। देश की किसी भी वस्तु को यदि नष्ट किया जाता है तो परोक्ष रूप से राष्ट्रीय सम्पत्ति का ही नष्ट होना है जिसका प्रभाव देशवासियों पर प्रत्यक्ष रूप मे पड़े बिना नहीं रहेगा। जिन छात्रो ने खून की होली खेल कर लाल किले पर तिरंगा झण्डा लगाने में जबरदस्त हाथ बटाया, जिन छात्रो ने चीनी चूहों को मार भगाने में तत्परता दिखाई और जिन छात्रों के बलबूते पर पाकिस्तानी पेटन टैंक बैल गाडी के रूप में परिणत कर दिये गये वे ही छात्र राष्ट्रीय सम्पत्ति को खुले आम नष्ट कर रहे हैं। विश्व ऐसे छात्रो के कर्तव्यों पर हँसेगा नहीं तो और क्या करेगा!

छात्रो ! प्रजातन्त्र में किसी व्यक्ति विशेष या जमात विशेष का राज्य नहीं है। सत्ता जनता की है, जनता जनार्दन का समर्थन प्राप्त करते हुए अपनी जायज मांगो को सही ढंग से मनवाने हेतु सरकार के सम्मुख प्रस्तुत करो न कि हिंसात्मक कार्यवाही द्वारा । मंत्री तो केवल अपने नुमाइन्दे अथवा एजेन्ट के रूप में हैं। सरकार रूपी कम्पनी के शेयर होल्डर सभी भारतीय नर-नारी हैं। इसलिये अपनी जो भी मांगें रक्खी जायें वे पढ़े-लिखे समुदाय की तरह हो। यदि ऐसा नहीं हुआ तो अशिक्षित समुदाय और छात्रों के संगठनों में क्या फर्क रहेगा ? यदि बिना पढ़े-लिखे लोग छात्रों के आचरणों का अनुकरण करें तो उनका भला क्या दोष हो सकता है ? भारत देश में छात्रों की जिम्मेवारी और भी ज्यादा है। क्योंकि आन्तरिक और बाह्य दोनों ओर संकट मुँह बाये खड़े हैं जो देश को निगल जाना चाहते हैं।

जिस तरह भारत समुद्र द्वारा तीन तरफ से घिरा है, ठीक उसी प्रकार तीनों ओर से संकटों से भी। पड़ोसी चीन व पाकिस्तान से हर समय युद्ध जैसी स्थिति बनी है। हम खाने के मामले में आत्म निर्भर होने के लिये भरसक प्रयत्न करते है। इस मौके पर यदि छात्र आन्तरिक अशान्ति पैदा करते हैं तो निश्चय ही वे पड़ोसी दुश्मनों व देशद्रोही काले बाजारी व्यापारियों को परोक्ष रूप से बल प्रदान करते है जो छात्र जाति के नाम पर अमिट कलंक स्वरूप है। आप तो समस्त विश्व के समक्ष हैं। हमें उन देशद्रोही व्यापारियों व आन्तरिक आतंक फैलाने वाले शत्रुओं का मुकाबला भी करना है। आज सरकार व नागरिक दोनों ही नाजुक स्थिति से गुजर रहे है। देश के सिपाही सर्दी, गर्मी, आँधी, तूफानों की परवाह न कर देशवासियों के लिए सामने दुश्मनों से रक्षा हेतु सरहदों पर तैनात हैं। दूसरी तरफ सरकार खाद्य संकट को नियन्त्रण में लाने के लिये, (देशद्रोही पूंजीपतियों को कानून के शिकंजे में लेकर) अध्यादेश जारी कर रही है।

भारत के सच्चे रत्न छात्र जिन के कन्धों पर कल राष्ट्र का भार पड़ने वाला है अपनी शक्ति का दुरुपयोग करते है। प्रजातन्त्र में पत्रकारिता जो इसका स्तम्भ है, उस पर भी हमला करके उस पर कलंक लगाने से नहीं चूकते। क्या १६ वर्षों के काल में ही फिर से भारतीय छात्रा गुलाम देश में जीवन बिताने की ठानी है ? यदि नहीं तो फिर से वे अपना तन-मन-धन देश हित के कार्यों के लिए करें जैसा उन्होंने अंग्रेजो के राज्यकाल में किया था। प्रत्येक देश में आन्तरिक व बाह्य दोनों तरह की रक्षा का भार युवक छात्रों पर ही है। इसी को ध्यान में रख कर नेपोलियन ने युद्ध के समय कहा था, – वाटरलू का युद्ध ईटन स्कूल के खेल के मैदान में लड़ा गया और जीता गया।' इस का सीधा अर्थ है कि किसी भी देश को युद्ध में विजय दिलाने वाले छात्र ही होते है। भला भारतीय छात्र जो चरित्र की दृष्टि से विश्व में अनुकरणीय रहे है अनुशासनहीनता का नंगा ताण्डव करते है। इससे बड़ा दुर्भाग्य भारत के लिए और क्या हो सकता है कि वह उत्तरोत्तर पतन की ओर अग्रसर हो रहा है।

छात्र के अनुशासनपूर्ण जीवन बिताने का तरीका यह है कि वे आन्तरिक व बाह्य रूप से अपनी प्रवृत्तियों में परिवर्तन करें तथा देश के सम्मुख में अच्छे नागरिक बनें। छात्र देश का स्तम्भ है

वर्तमान संकट में भारतीय छात्रों का राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य

देश की स्वतन्त्रता से पूर्व भारतीय छात्रों के सोचने के लिये दो प्रश्न हो सकते थे। वह स्वतन्त्र देश का छात्र होकर अपना जीवन निर्वाह करे अथवा एक गुलाम पशु की तरह विदेशी सरकार के अधीन रह कर अपनी जिन्दगी के दुखड़े को रोता रहे। लेकिन उस समय भारतीय छात्रों ने स्वतंत्र देश का छात्र रहना ही पसन्द किया। उन्होंने विश्व के सम्मुख एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करते हुए मातृभूमि के लिये तन-मन-धन न्यौछावर कर दिया। उन्होंने १९४७ का स्वतन्त्रता दिवस हमारे सम्मुख लाकर इस बात का प्रमाण दिया कि वह देश को ऊँचा उठा सकने में समर्थ है।

नापाक पड़ौसी दुश्मनों द्वारा किए हमलों के समय भी भारतीय छात्रों ने भावात्मक एकता मजबूत करते हुए बिना लिंग व जाति-भेद के कन्धे से कन्धा मिलाकर खूनी पञ्जों को नाकामयाब किया और देश ने जब कभी भी उनको आमन्त्रित किया, उन्होंने बड़ी तत्परता दिखाई। उन्होंने विश्व को दिखा दिया कि छात्रों की ताकत के सम्मुख ईश्वर की ताकत को भी झुकना पड़ता है। इस का नाजायज फायदा कुछ स्वार्थी तत्व उन्हें साधन के रूप में इस्तेमाल कर उठाते हैं और वे परोक्ष रूप से अपना स्वार्थ सिद्ध करने में लगे रहते हैं!

आज भारत के प्रायः सभी बड़े-बड़े प्रान्त छात्रों की अनुशासनहीनता से छटपटा रहे हैं। छात्रों को अपनी ताकत का लाभ देश को देना है, न कि राष्ट्रीय सम्पत्ति को नष्ट-भ्रष्ट करने में। देश की किसी भी वस्तु को यदि नष्ट किया जाता है तो परोक्ष रूप से राष्ट्रीय सम्पत्ति का ही नष्ट होना है जिसका प्रभाव देशवासियों पर प्रत्यक्ष रूप से पड़े बिना नहीं रहेगा। जिन छात्रों ने खून की होली खेल कर लाल किले पर तिरंगा झण्डा लगाने में जबरदस्त हाथ बटाया, जिन छात्रों ने चीनी चूहों को मार भगाने में तत्परता दिखाई और जिन छात्रों के बलबूते पर पाकिस्तानी पेटन टैंक बैल गाड़ी के रूप में परिणत कर दिये गये थे वही छात्र राष्ट्रीय सम्पत्ति को खुले आम नष्ट कर रहे हैं। विश्व ऐसे छात्रों के कर्तव्यों पर हँसेगा नहीं तो और क्या करेगा!

छात्रो ! प्रजातन्त्र मे किसी व्यक्ति विशेष या जमात विशेष का राज्य नही है। सत्ता जनता मे है, जनता जनार्दन का समर्थन प्राप्त करते हुए अपनी जायज मांगो को सही ढंग से मनवाने हेतु सरकार के सम्मुख प्रस्तुत करो न कि हिंसात्मक कार्यवाही द्वारा। मंत्री तो केवल अपने नुमाइन्दे अथवा एजेन्ट के रूप मे है। सरकार रूपी कम्पनी के शेयर होल्डर सभी भारतीय नर-नारी हैं। इसलिये अपनी जो भी मांगें रखी जाये वे पढ़े-लिखे समुदाय की तरह हो। यदि ऐसा नही हुआ तो अशिक्षित समुदाय और छात्रो के संगठनो मे क्या फर्क रहेगा ? यदि बिना पढ़े-लिखे लोग छात्रो के आचरणों का अनुकरण करें तो उनका भला क्या दोष हो सकता है ? भारत देश मे छात्रो की जिम्मेवारी और भी ज्यादा है। क्यों-कि आन्तरिक और बाह्य दोनो ओर संकट मुंह बाये खडे हैं जो देश को निगल जाना चाहते हैं।

जिस तरह भारत समुद्र द्वारा तीन तरफ से घिरा है, ठीक उसी प्रकार तीनो ओर से संकटो मे भी। पडोसी चीन व पाकिस्तान मे हर समय युद्ध कीसी स्थिति बनी है। हम खाने के मामले मे आत्म निर्भर होने के लिये भरसक प्रयत्न करते है ! इस मौके पर यदि छात्र आन्तरिक अशान्ति पैदा करते हैं तो निश्चय ही वे पड़ोसी दुश्मनो व देशद्रोही काले बाजारी व्यापारियो को परोक्ष रूप से बल प्रदान करते हैं जो छात्र जाति के नाम पर धमिट कलंक स्वरूप है। शत्रु तो समस्त विश्व के समक्ष हैं। हमे उन देशद्रोही व्यापारियो व आन्तरिक आतंक फैलाने वाले शत्रुओ का मुकाबला भी करना है। आज सरकार व नागरिक दोनो ही नाजुक स्थिति से गुजर रहे है। देश के सिपाही सर्दी, गर्मी, आंधी, तूफानो की परवाह न कर देशवासियो के लिए नापाक दुश्मनो से रक्षा हेतु प्रहरी के रूप मे तैनात है। दूसरी तरफ सरकार खाद्य संकट को नियन्त्रण में लाने के लिये, (देशद्रोही पूंजीपतियो को कानून के शिकन्जे मे लेकर) अध्यादेश जारी कर रही है।

भारत के सच्चे रत्न छात्र जिन के कन्धो पर कल राष्ट्र का भार पडने वाला है अपनी शक्ति का दुरुपयोग करते हैं। प्रजातन्त्र मे पत्रकारिता जो इसका सम्बल है, उस पर भी हमला करके अपने पर कलंक लगाने मे नही चूकते। क्या १६ वर्षो के काल मे ही फिर से भारतीय छात्रो ने गुलाम देश मे जीवन बिताने की ठानी है ? यदि नही तो फिर से वे अपना बल-प्रदर्शन देश हित के कार्यों के लिए करें जैसा उन्होने अंग्रेजो के राज्यकाल मे किया था। प्रत्येक देश मे आन्तरिक व बाह्य दोनो तरह की रक्षा का भार युवक छात्रो पर ही है। इसी को ध्यान मे रख कर नेपोलियन ने युद्ध के समय कहा था,—"वाटरलू का युद्ध ईटन स्कूल के खेल के मैदान मे लड़ा गया और जीता गया।" इस का सीधा अर्थ है कि किसी भी देश को युद्ध मे विजय दिलाने वाले छात्र ही होते है। भला भारतीय छात्र जो चरित्र की दृष्टि से विश्व मे अनुकरणीय रहे है अनुशासनहीनता का खुला ताण्डव करते है। इससे बडा दुर्भाग्य भारत के लिए और क्या हो सकता है कि वह उत्तरोत्तर पतन की ओर अग्रसर हो रहा है।

छात्र के अनुशासनपूर्ण जीवन बिताने का तरीका यह है कि वे मानसिक व शारीरिक रूप से अच्छी प्रवृतियो मे संलग्न रहे तथा देश के झन्डे मे झन्डे तथा वीर सेनानी बनें। आज देश को शत्रुओं से रक्षार्थ वैज्ञानिको तथा टेक्नीशियनो की अधिक आवश्यकता है। आज अमेरिका तथा रूस संसार मे सबसे ज्यादा

भारती के लिए विशेष

शक्तिशाली राष्ट्र क्यों माने जाते हैं ? छात्रों ने विज्ञान तथा टैक्नोलोजी की शिक्षा अनुशासनबद्ध ढंग से प्राप्त की है !

छात्रो ! अपनी आन्तरिक शक्ति को पहचानो ! अपनी शक्ति को अपने दिमाग द्वारा काम मे आज बूढा हिमालय आप द्वारा राष्ट्रीय सम्पत्ति को नष्ट करने पर आंसू की धाराएं बहा रहा है। आवश्यकता है अधिक से अधिक उच्च वैज्ञानिक शिक्षा प्राप्त किये छात्रों तथा कुशल पुरुषों की जो देश रक्षा करने के लिए नए २ हथियार तैयार कर सकें ! उन योग्य व्यक्तियों की आवश्यकता है जो देश नाव संकट रूपी तूफान से कुशल नाविक की तरह पार लगा सकें। आज शत्रु के प्रचार का खण्डन नागरिकों का मानसिक सन्तुलन बनाये रखने का भार भी देश के छात्रों पर ही है। द्वितीय विश्व युद्ध इंग्लैंड को परास्त करने के लिए जर्मनी ने अनर्गल प्रचार व हमलों के नापाक हथकण्डों का सहारा चाहा लेकिन छात्रों ने सिविल डिफेन्स द्वारा हिटलर के मंसूबों पर पानी फेर दिया।

संकटकालीन अवस्था मे प्रत्येक देश मे आयात कम हो जाता है फलतः फौजी सामान तथा जीवनोपयोगी सामान की प्रचुर मात्रा मे आवश्यकता पड़ती है। यह कार्य देश के बूढ़े व अशक्त समूह से होकर शिक्षित छात्रों द्वारा ही होता है !

भारत के तिरंगे के सम्मान की रक्षा के लिए यदि प्रथम पंक्ति सेना है तो दूसरी पंक्ति छात्रों की है जो हताहत सैनिकों का स्थान लेते है। आज देश अपने पुत्रों (छात्रों) को टेरिटोरियल फोर्स, एन. सी., तोपखाने, नागरिक सुरक्षा आदि कार्यों हेतु पुकार रहा है। छात्रो को अपने बल को उचित कार्य लगाने की आवश्यकता है। स्वतंत्रता से पूर्व छात्रो ने किस प्रकार अपना रक्त और प्राण दिये उस का अंग्रेजी अफसरो की गुप्त रिपोर्टों से चलता है। वर्तमान छात्रों पर भारी जिम्मेवारी हैं। अगली पीढ़ी छात्र वर्तमान छात्रों का ही अनुकरण करेंगे ! अतः आज के छात्र अनुशासनहीनता द्वारा केवल अपना नहीं बल्कि परंपरा का भी विनाश करते हैं। छात्र-समूह के हित के लिए संगठन को अपनी मांगें सही से रखनी चाहिए। किसी समुदाय विशेष का हित देश-हित नही हो सकता। यह सर्व मान्य है कि कुछ पाने लिए महान बलिदान चाहिये। लेकिन बलिदान भी सही ढंग से होना चाहिये। बलिवेदी पर एक मर्द की तरह मरो न कि बकरे की तरह।

हरि चतुर्वेदी

राज्य-स्तरीय विजेता फुटबाल टीम शिक्षा-संचालक के साथ

भौतिक-विज्ञान कक्ष

रसायन-विज्ञान कक्ष

वाचनालय कक्ष

जीव-विज्ञान कक्ष

के अवसर पर भीड़भाड़ ज्यादा होने के कारण वह नन्हा शिशु माता के हाथ से छूट गया और एक किसान की टोकरी में गिर गया। माता रामदुलारी ने सोचा कि वह गंगा-वरद-पुत्र गंगा माता की ही गोद में चला गया। लेकिन उधर वह किसान उसे गंगा माता का प्रसाद समझ कर बहुत प्रसन्न हुआ। काफी खोजबीन के बाद वह उनके माता-पिता को वापिस कर दिये गये। कौन जानता था कि यही नन्हा-सा जाह्नवी का वरदान आगे चलकर भारत का भावी-निर्माता कर्णधार प्रधानमन्त्री बनेगा। जब लाल बहादुर एक साल और सवा छः महीने के ही हुए थे, तब ही उनके सिर पर से पिता की छत्र-छाया हमेशा के लिए उठ गई। पिता की मृत्यु से सारा भार उनकी माता रामदुलारी पर आ गया।

माध्यमिक शिक्षा

जब शास्त्री जी पाँच वर्ष के थे तब उनकी माता उन्हें शिक्षा के लिए अपने पिता हजारी प्रसाद अर्थात् शास्त्री जी के नानाजी के पास ले गई। मुगलसराय में उन्होंने दस वर्ष की आयु में छठी कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वहाँ उच्च माध्यमिक स्कूल न होने की वजह से वे अपनी माता के साथ अपने मौसा रघुनाथ प्रसाद जी के यहा चले गये, जो कि वाराणसी की नगर-पालिका में क्लर्क का काम करते थे। उनके मौसा जी ने इनका वहा हरिशचन्द्र हाई स्कूल में प्रवेश करवा दिया। यहा उनके प्रधानाध्यापक डॉ० रा० मन्केकर थे। वे सब विषयों में बहुत होशियार थे। केवल गणित में उनकी गति इतनी नहीं थी, इसे वह ज्यामिति और बीजगणित में पूरा कर लेते थे। अंग्रेजी भाषा में उनकी बहुत रुचि थी, उसमें वे निपुण थे। बहुत अधिक अध्ययनशील न होने पर भी वे अपने शिक्षकों के स्नेह-पात्र रहे। १२ वर्ष की आयु में जब लाल बहादुर दवीं कक्षा में पढ़ते थे, उन्होंने गाँधी जी के प्रथम बार दर्शन किये। उस समय गाँधी जी वाराणसी (बनारस) में "बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय" का उद्घाटन करने गये थे। तभी से गाँधी जी के चरित्र की उन पर अमिट छाप पड़ गयी थी।

हरिशचन्द्र हाई स्कूल में उनके सहपाठियों में त्रिभुवन नारायण सिंह (वर्तमान केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में राज्य-मन्त्री), अलगू राय शास्त्री (उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य एवं उत्तर प्रदेश सरकार के भूतपूर्व मन्त्री), भी थे।

गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन के समय हरिशचन्द्र स्कूल में श्री कामेश्वर प्रसाद मिश्र इनके गणित और अंग्रेजी के शिक्षक थे। वे स्काउट-मास्टर की हैसियत से सबको तिलक के 'स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है' नारे का रहस्य समझाते थे। वे इन्हें वीरों की कहानियाँ भी सुनाया करते थे। इसलिए शास्त्री जी का झुकाव क्रान्तिकारी गतिविधियों की ओर हो गया था। अगर महात्मा गाँधी सन् १६२० में पुनः बनारस न पधारते तो लाल बहादुर अवश्य ही क्रांतिकारी दल में हो गये होते। सन् १६२१ ई० में जब शास्त्री जी केवल १६ वर्ष के थे, जब कि उनकी मैट्रिक की परीक्षा के कुछ ही दिन शेष थे, महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन में शामिल हो गये क्योंकि उनकी अन्तरात्मा का सोया सिंह जाग उठा था। उनके साथ श्री सिंह, श्री अलगूराय जी भी आन्दोलन में हो गये। सन् १६२१ ई० में ही उन्हें प्रथम बार २॥ वर्ष की जेल भुगतनी पड़ी। इसके बाद भी १२ बार में ९ साल जेल में रहे।

काशी विद्यापीठ में

इस सजा के बाद वे सुप्रसिद्ध दार्शनिक डॉ० भगवान दास के परामर्श से काशी विद्यापीठ में पढ़ने लगे। उन्होंने दर्शन विषय लेकर चार वर्ष तक अध्ययन किया। यहाँ उनके प्राध्यापकों में डॉ० भगवान दास (प्रधानाचार्य), आचार्य नरेन्द्र देव, राजस्थान के वर्तमान राज्यपाल डॉ० सम्पूर्णानन्द, आचार्य जे० बी० कृपालानी, और उत्तर-प्रदेश व महाराष्ट्र के भूतपूर्व राज्यपाल श्री श्रीप्रकाश थे। यहाँ उनके सहपाठियों में अलगूराय शास्त्री, राजाराम शास्त्री, हरिहरनाथ शास्त्री और आनन्द प्रकाश एवं विभूति मिश्र थे। शास्त्री जी कबड्डी और बैडमिन्टन के अच्छे खिलाड़ी थे। अब तक श्री लाल बहादुर श्रीवास्तव लिखते थे, लेकिन अब उन्होंने 'काशी विद्यापीठ' से शास्त्री की डिग्री लेकर जाति के स्थान पर अपना नाम 'लाल बहादुर शास्त्री' लिखना शुरू किया।

सन् १९२३ ई० में उनका विवाह ललिता जी से हुआ।

राजनीतिक जीवन

श्री शास्त्री सन् १९२६ ई० में ही भारत सेवक मण्डल के आजीवन सदस्य बन गये। बाद में उन्होंने इस संस्था को २५० रुपये मासिक देना शुरू किया। सन् १९२६ से सन् १९३० तक यही संस्था उनकी गतिविधियों का मुख्य केन्द्र रही और उनका कार्यक्षेत्र बनारस व इलाहाबाद हो गया। यह कार्यक्षेत्र सन् १९४२ तक रहा। इसके बाद की गतिविधियों का केन्द्र दिल्ली ही रहा।

शास्त्री जी १९३० से १९३६ तक इलाहाबाद जिला कांग्रेस कमेटी के जनरल सेक्रेटरी रहे। अगले वर्ष ही वे उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। सन् १९२१ ई० से लेकर सन् १९४५ ई० तक हुए सभी कांग्रेसी आन्दोलनों में उन्होंने प्रमुख रूप से भाग लिया। सन् १९४६ ई० में श्री शास्त्री चुनाव के बाद उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री के संसदीय सचिव नियुक्त हुए।

भारत की स्वतन्त्रता के बाद सन् १९४७ ई० में उत्तर प्रदेश-राज्य-मन्त्रिमण्डल में गृह व परिवहन-मन्त्री बने। वह इस पद पर चार साल अर्थात् सन् १९५१ ई० तक रहे। सन् १९५१ ई० में राज्य मन्त्रिमण्डल से त्याग-पत्र देकर राष्ट्रीय कांग्रेस के महामन्त्री का पद संभाला। शास्त्री जी की संगठनीय योग्यता और उनके द्वारा किये गये सुयोग्य दलीय चुनाव के कारण ही कांग्रेस ने प्रथम राष्ट्र चुनाव में इतनी अधिक विजय प्राप्त की थी।

सन् १९५२ ई० में स्व० नेहरू ने उन्हें अपने मन्त्रिमण्डल में रेल मन्त्री का पद दिया। लेकिन दक्षिण भारत में कम्युनिस्टों द्वारा की गई गतिविधियों एवं साम्यवादी विचार रखने वाले रेल कर्मचारियों द्वारा जान-बूझकर की गई गलतियों से बहुत दुर्घटनायें हुईं। अरियालूर-महबूबनगर (हैदराबाद) में हुई अति भीषण दुर्घटना के कारण उन्होंने अपने को दोषी मानते हुए त्यागपत्र दे दिया। ४ अप्रैल सन् १९६१ ई० में बाद पं० नेहरू ने उन्हें फिर मन्त्री स्तर के पद पर गृह-मन्त्री नियुक्त किया।

जब सन् १९६१ ई० में [illegible] के लिए [illegible] दिया।

[illegible]

प्रधान-मन्त्रित्व काल

[illegible] को प्रधान मन्त्री पद [illegible] किया।

श्री शास्त्री ने [illegible] सादगी के कारण उन्होंने [illegible] प्रत्येक विरोधी [illegible] भारतीय एवं विदेशी राजनीतिज्ञों में भी उनको [illegible] लिया था। सन् १९६५ में पाकिस्तानी आक्रमण के समय तथा उसी मास चीन द्वारा दिये गये अल्टीमेटम के समय उनके द्वारा दिखायी गई दृढ़ता एवं साहस सराहनीय है।

पाकिस्तानी आक्रमण के बाद से शान्ति की खोज में जनवरी में सोवियत नगर ताशकन्द को सोवियत प्रधानमन्त्री के निमन्त्रण तथा उन्हीं की अध्यक्षता व राष्ट्रपति अयूब खां से वार्ता करने गये।

कोई सोच भी नहीं सकता था कि शान्ति-वार्ता महामानव शान्ति के समझौते के कुछ घण्टे बाद ही हम से बिछुड़ जायेगा।

वही नाटे कद का किन्तु प्रतिभाशाली शान्त और नपी-तुली भाषा में बोलने वाला यह महामानव ६१ वर्ष की आयु में मंगलवार दिनांक ११ जनवरी १९६६ की प्रथम घड़ियों में गहरी नींद में सो गया। हम उन्हें कभी नहीं भूल सकेंगे। भारत-सरकार ने इस महामानव को मरणोपरान्त 'भारत-रत्न' से विभूषित किया है।

'जय जवान जय किसान'!
लाल बहादुर शास्त्री जिन्दाबाद!!
जय हिन्द!!!

ख़िराजे अक़ीदत

श्री सुफ़ेल अहमद ताबिश एम० ए०

हिन्द का लाल हो गया रूख़सत
आज घर-घर मे इसका मातम[1] है ।
गुंचाओगुल भी अब हैं अफसुरदा[2]
और बज़्मे निशात[3] बरहम[4] है ॥

कौन टूटे दिलों को जोड़ेगा
बेसहारों का आसरा[5] ना रहा ।
जिस पे नज़रें थी अम्ने आलम की
आज वो रम्ज़[6] आशना ना रहा ॥

शम्मे मेहफिल भी बुझ गई जैसे
जाने मेहफिल नहीं जो मेहफिल में ।
हिन्द की बज़्म ऐसे वीरां है
जैसे लैला[7] नहीं है मेहफिल[8] में ॥

दीप जलते हैं जल के बुझते हैं
ये तो दस्तूर है ज़माने का ।
दीप बुझ कर भी ये तो रोशन है
और उनवां[9] है इस फसाने[10] का ॥

उलझें हद से जब गुज़र जायें
काकुले[11] ज़ीस्त फिर संवरते हैं ।
यूं भी होता है गरदिशे दौरां
नक़्श[12] मिट मिट के भी उभरते हैं ॥

यूं तो मरने को सब ही मरते हैं
मौत वो रश्के[13] ज़िन्दगानी है ।
जो वतन पर निसार हो जाय
उसकी ठोकर में कामरानी[14] है ॥

---

१ शोक २ मुरझाये हुये ३ खुशी की मेहफिल ४ उदास, परेशान ५ सहारा ६ भेद को जानने वाला ७ मजनू की प्रियतमा ८ ऊंट का हौदा ९ शीर्षक १० कहानी ११ जिन्दगी की उलझने १२ सूरत, रूप १३ जिन्दगी भी जिस से ईर्ष्या करे १४ सफलता ।

-

विजय गोस्वामी, ११ स

हमारे देश के भूतपूर्व प्रधान मंत्री स्वर्गीय श्री लालबहादुर शास्त्री को कौन नहीं जानता ? वे कर्तव्य-प्रेमी, सत्यनिष्ठ तथा ईमानदार थे, हर भारतवासी को उन पर गर्व है तथा उनका नाम आज भी देशवासी आदर के साथ लिया करते हैं। उनकी इसी सत्यनिष्ठा तथा अटल ईमानदारी के कारण ही उनके कई मित्र उनसे अप्रसन्न रहा करते थे। शास्त्रीजी ने अपने शासन-काल में सदा स्वजनों की और सगे सबंधियों की उपेक्षा कर अपने सत्य की रक्षा की। उनकी कर्तव्यपरायणता सत्यनिष्ठा और ईमानदारी के कुछ उदाहरण मैं नीचे दे रहा हूं:-

शास्त्रीजी का पुत्र बीमार हुआ। उसे बडे जोर का टाइफाइड हो गया उम्र यही कोई ५ वर्ष की होगी। शास्त्री जी जेल से एक सप्ताह के पैरोल पर आये। जब वापिस जेल जाने का दिन आया तो बच्चे को १०४ डिग्री बुखार था। वह पानी से निकाली मछली के समान छटपटा रहा था। शास्त्री जी एक घंटे तक उसकी खाट के समीप खडे रहे। शास्त्रीजी की आखो से आंसू बह रहे, बच्चे का बिस्तर भीगता रहा। बुखार तेजी से बढ़ता जा रहा था, डॉक्टर चिन्तित मुद्रा मे शास्त्री जी के समीप ही खड़ा था। जिलाधीश का सन्देश आया कि शास्त्री जी लिखित वायदा करें कि आन्दोलनकारियो से कोई सम्पर्क नही रखेंगे, तो उनके पैरोल की अवधि बढ़ाई जा सकती है। बुखार १०५ डिग्री तक पहुँच गया। सब लोग शास्त्रीजी को आँसू भरी आँखों से देख रहे थे।

बच्चे ने शास्त्री जी को कस कर पकड लिया—"बाबूजी ! मत जाइये।" उस समय शास्त्री जी के मन मे क्या बीत रही होगी, यह एक पिता ही जान सकता है।

पिता की कोमल भावनाओं पर आदर्श और स्वाभिमान ने विजय प्राप्त की। शास्त्री जी ने बच्चे को कंधे मे अलग किया। सबको अश्रुपूरित आंखो से नमस्कार किया तथा कमरे से बाहर निकल गये। बच्चा

चीखता ही रह गया "बाबूजी, बाबूजी !" पर शास्त्री जी ने फिर मुड़कर नहीं देखा। और कुछ दिन बाद वे जेल की अपनी कोठरी में थे।

यह है शास्त्री जी की सत्यनिष्ठा और दृढ़ ईमानदारी का उदाहरण ! इसी निष्ठा और ईमानदारी ने शास्त्री जी को उन्नति के शिखर पर पहुंचाया—समाज में सर्व पूज्य बनाया। उनकी सत्यनिष्ठा की—उनकी ईमानदारी की आज लोगों पर इतनी धाक है कि लोग शास्त्री जी का नाम सुनते ही ईमानदारी का अर्थ लगा लेते हैं।

सिद्धान्तों के प्रति ऐसी निष्ठा और दृढ़ता कदाचित् ही और कहीं देखने को मिले। भावनगर कांग्रेस की वे घड़ियां जब शास्त्री जी एक साधारण-सी कुटिया में ठहरे हुए थे। न सिपाही, न कोई सन्तरी। केवल उनका प्राईवेट सेक्रेटरी उनके साथ था। एक सज्जन उनके मामो जा पहुँचे। उन सज्जन के साथ प्रयाग के दो-तीन और कांग्रेस कार्यकर्ता भी थे। उन सज्जन ने शास्त्री जी से निवेदन किया कि वे उनके लिए पास का प्रबंध करवा दें। वे सज्जन शास्त्री जी के संबंधी थे। शास्त्री जी इस पर बोले कि यह लीजिए रुपये और टिकट खरीदिये। मैं ऐसा प्रबंध नहीं करूंगा।

यह थी उनकी सिद्धान्तों के प्रति गहरी निष्ठा।

एक बार शास्त्री जी जब उत्तर प्रदेश में पुलिस मंत्री थे, उनके मौसी के लड़के को जो कानपुर में रहते थे एक प्रतियोगी परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए लखनऊ जाने की आवश्यकता पड़ी। जब वे कानपुर स्टेशन के टिकट घर के समीप पहुँचे तो गाड़ी सीटी दे चुकी थी। फलस्वरूप वे टिकट नहीं खरीद सके और प्लेटफार्म की ओर दौड़े। इसी समय एक अपरिचित व्यक्ति उनके पास आया और कहा कि उसके पास लखनऊ का टिकट है और वे चाहें तो ले सकते हैं। उन्होंने झट से उसे पैसे दिये और टिकट को जेब में डाल लिया और जैसे तैसे गाड़ी पकड़ी। लखनऊ स्टेशन पर जब वे उतरे तो उन्होंने फाटक पर टिकट दिया। फाटक पर नियुक्त कर्मचारी ने टिकट देख कर उन्हें रोक दिया और कहा कि यह बीते दिन का टिकट है। इसलिए यह टिकट व्यर्थ है। उन्होंने फाटक पर नियुक्त कर्मचारी से प्रार्थना की कि उनकी परीक्षा है अतः उन्हें जाने दें। पर कर्मचारी टस से मस नहीं हुआ। बाद में उन्होंने अपने को शास्त्री जी का संबंधी बतलाया। पहले तो कर्मचारी को विश्वास नहीं हुआ अतः उसने शास्त्री जी से सम्पर्क स्थापित किया। तब मालूम पड़ा कि वे ठीक कह रहे हैं। फिर कर्मचारी ने शास्त्री जी से पूछा कि उनके साथ क्या किया जावे, तब शास्त्री जी ने कहा कि इनके साथ वही किया जावे जो औरों के साथ होता है।

कर्मचारी ने सारी बात उनसे सुनकर उन्हें मुक्त कर दिया। उस दिन वे परीक्षा में नहीं बैठ सके तथा कहते हैं कि वे उस दिन के बाद कभी शास्त्री जी की कोठी पर नहीं गये।

इन्हीं कारणों से उनके कई संबंधी उनसे नाराज हो गए। सत्यनिष्ठा और ईमानदारी के कारण ही वे सर्वपूज्य बन गये। ऐसे थे स्वर्गीय भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री।

अविस्मरणीय- श्री लाल बहादुर

किशोरीलाल वर्मा, कक्षा १० 'ब'

मुरझा गया
फूल सहसा मुरझा गया
वर्षा तप को झेलता हुआ
आँधियों से खेलता हुआ
सघर्ष मे पिलता हुआ,
सघर्ष को पेरता हुआ
अकेले मे, अकेलेपन को टेरता हुआ
फूल सहसा मुरझा गया।
पखुरिया झरने लगी
घोसले मे चोंच फंसाये
मृत बच्चे के कोमल पखों सी
पंखुरियाँ झरने लगी।
एक एक कर झड़ गयी
उनकी याद मे पर वृक्ष जीता रहा
ठूंठ वृक्ष जीता रहा
उन्ही का रक्त पीता रहा।
लेकिन वह सुगन्ध
उसकी वह भीनी-भीनी
पर तीखी सी,
दर्द भरी सी,
टीस भरी सी
गन्ध
जाने कब
जाने कैसे
घेरा तोड़ कर निकल गई
दिक दिक मे फैली
बहकी
महकी
लोग उन पाखुरियों के,
खण्ड बटोर ले गये
सुगन्ध उस फूल की खूब
दिक दिक मे उडती है
हाथ नही आती है
जैसे भी हो जैसे भी हो
सजोने हम आये हैं
हम स्मृतियो के रक्षक है
चुक गये फूल की सुगन्ध को सूघ
हम धाये है।
वह जो हमारा था,
हमें बहुत ही प्यारा था!

ताशकन्द घोषणा

प्रस्तुतकर्ता धीरेन्द्रजीत सिंह कक्षा ११ ग

विश्व-शान्ति का एक प्रयास

भारत के प्रधान मंत्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति, ताशकंद में मिलने और भारत तथा पाकिस्तान के वर्तमान सम्बन्धों पर विचार करने के बाद अपने इस दृढ़ संकल्प की घोषणा करते हैं कि वे दोनों देशों के बीच फिर से सामान्य और शांतिपूर्ण सम्बन्ध कायम करेंगे और दोनों देशों के लोगों में एक-दूसरे के प्रति सद्भाव और मित्रता पैदा करेंगे। वे इस उद्देश्य की पूर्ति को भारत और पाकिस्तान के ६० करोड़ लोगों के हित में अत्यंत महत्वपूर्ण समझते हैं।

१

भारत के प्रधान मन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति इस पर सहमत हुए कि दोनों ओर से भारत और पाकिस्तान के बीच अच्छे पड़ोसियों का सम्बन्ध कायम करने के लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ के घोषणा-पत्र (चार्टर) के अनुसार पूरे प्रयत्न किए जाएंगे। इस घोषणापत्र के अंतर्गत वे अपनी इस जिम्मेदारी को फिर से स्वीकार करते हैं कि वे ताकत से काम नहीं लेंगे, और अपने विवादों को शान्तिपूर्ण तरीकों से सुलझाएंगे। वे दोनों इसे समझते हैं कि दोनों देशों के बीच तनाव, उनके क्षेत्र, विशेषकर भारत-पाकिस्तान भूखंड की शांति और वस्तुत भारत और पाकिस्तान के लोगों के हित में बाधक है। इसी पृष्ठभूमि में जम्मू-कश्मीर के बारे में विचार हुआ और दोनों पक्षों ने अपनी-अपनी स्थिति को स्पष्ट किया।

२

भारत के प्रधान मंत्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति इस पर राजी हुए हैं कि दोनों देशों के सब सशस्त्र आदमी २५ फरवरी, १९६६ तक उन ठिकानों पर वापस लौट जाएंगे, जहां वे ५ अगस्त १९६५ के पहले थे और दोनों पक्ष युद्ध-विराम रेखा पर, युद्ध-विराम की शर्तों का पालन करेंगे।

३

भारत के प्रधान मन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति इस बात पर सहमत हैं कि भारत और पाकिस्तान के सम्बन्धों का आधार इस सिद्धान्त पर होगा कि एक दूसरे के अंदरूनी मामलों में दखल नहीं दिया जाएगा।

४

भारत के प्रधान मन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति इस बात पर सहमत हुए हैं कि दोनों देशों के एक-दूसरे के विरुद्ध प्रचार को रोका जाएगा और ऐसे प्रचार को बढ़ावा दिया जाएगा, जिससे दोनों देशों में मित्रता का सृजन करे।

५

भारत के प्रधान मन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति सहमत हुए कि पाकिस्तान में भारत के उच्चायुक्त और भारत में पाकिस्तान के उच्चायुक्त अपनी-अपनी जगह लौट जाएंगे और दोनों देशों के सामान्य राजनयिक सम्बन्ध फिर से कायम किए जाएंगे। दोनों सरकारें राजनयिक व्यवहार में, १९६१ के वियना समझौते का पालन करेंगी।

६

भारत के प्रधान मन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति सहमत हुए कि वे भारत और पाकिस्तान के बीच, आर्थिक सम्बन्ध, व्यापार, संचार और सांस्कृतिक सम्पर्क को फिर से कायम करने की कार्रवाई पर विचार करेंगे और भारत तथा पाकिस्तान के वर्तमान समझौतों को अमल में लाएंगे।

७

भारत के प्रधान मन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति सहमत हुए कि वे अपने अधिकारियों को युद्ध बन्दियों की वापसी का आदेश देंगे।

८

भारत के प्रधान मन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति सहमत हुए कि दोनों पक्ष, शरणार्थियों की, निष्कासितों की, गैर कानूनी बसने वालों की समस्याओं से सम्बन्धित प्रश्नों पर बात-चीत जारी रखेंगे। वे इस बात पर भी सहमत हुए कि दोनों पक्ष ऐसे हालात पैदा करेंगे, जिससे लोगों का देश से भागना बन्द हो। वे इस बात पर भी सहमत हुए कि संघर्ष के दौरान दोनो पक्षों ने जिस माल व सम्पत्ति पर अधिकार कर लिया है, उसके लौटाने के बारे में बातचीत की जाएगी।

९

भारत के प्रधान मन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति, सहमत हुए कि जिन मामलों का दोनों देशों से सीधा सम्बन्ध है, उन पर विचार के लिए, दोनों पक्षों की सर्वोच्च और अन्य स्तरों पर बैठकें होती

रहेंगी। दोनों पक्ष इस पर तैयार हैं कि 'भारत-पाकिस्तान संयुक्त समितियां' नियुक्त की जाएं, जो अपनी-अपनी सरकारों को बताएं कि आगे और क्या कदम उठाए जाय।

भारत के प्रधान मन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति, सोवियत संघ के नेताओं के, सोवियत सरकार के और व्यक्तिगत रूप से सोवियत संघ की मन्त्रिपरिषद् के अध्यक्ष के बहुत कृतज्ञ हैं, जिनके रचनात्मक, मित्रतापूर्ण और महान सहयोग से यह बैठक हो सकी, जिससे दोनों पक्षों के लिए सन्तोषप्रद परिणाम निकले। वे उजबेकिस्तान की सरकार और वहां के लोगों को भी दिल से धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने उनका इतना हार्दिक स्वागत और खातिरदारी की।

वे सोवियत संघ की मन्त्रिपरिषद् के अध्यक्ष को इस घोषणा के साक्षी होने को आमन्त्रित करते हैं।

१० जनवरी, १९६६

भारत के प्रधान मन्त्री
लालबहादुर शास्त्री

पाकिस्तान के राष्ट्रपति
मोहम्मद अयूब खां

गीत

भारत भूषण शर्मा, एम ए

जय हो ! जय हो !! जय हो !!!
प्राचीन देश तेरे स्वरूप में, हम सब का लय हो !!
गंगा की यह पावन धारा,
विन्ध्य हिमालय पर्वत माला,
जन-जन के हर सुप्त हृदय में, अमर ज्ञान का अभ्युदय हो !!
शंकर राम विवेक की माता,
वेद उपनिषद् की तू दाता,
वही दिशा, वही राह अब जन-जन का तीर्थ हो !!
जब तक धरती के अंचल में,
मानव की एक याद रहेगी,
अमर रहेंगी तेरी स्मृतियां, अमर रहेंगी, अमर रहेंगी,
काल-चक्र की सीमित गति के, आगे तेरा क्रम हो !!

हाय! वे चले गये

बिसनसिंह पुरोहित, १० बी

डॉ० राधाकृष्णन् ने श्रदधाजलि अर्पित करते हुये कहा कि शास्त्रीजी ने १९ महिनो तक प्रधान मंत्रीपद पर रह कर देश की सेवा की। वे जनता को बहुत प्यार करते थे। नदा ने श्रदधाजलि अर्पित करते हुये कहा कि मुझे श्री शास्त्रीजी के मरने पर बहुत बड़ा धक्का लगा है, श्री शास्त्रीजी जनता की भलाई और कल्याण के लिये जिये और मरे। अत मे श्री नदा ने कहा कि इस दुख के समय सारा देश श्रीमती ललितादेवी के सामने नत मस्तक है।

रूस के प्रधान मंत्री श्री कोसिगन ने कहा कि यह दुख की बात है कि शास्त्री जी आज हमारे बीच न रहे। सारी भारतीय जनता के साथ हमे भी बडा दुख है। श्री शास्त्री एक महान् नेता, एक महान् व्यक्ति और बहुत चतुर थे। उन्होने शाति तथा भारत-पाक मैत्री के लिए भरसक प्रयत्न किया।

सयुक्त राष्ट्र सघ के महासचिव ऊ थांट ने कहा कि केवल भारत को ही नही, केवल एशिया को ही नही, सारे ससार को उनकी मृत्यु पर दुख होगा। राष्ट्र सघ भी इस शोक मे भागीदार है।

अमेरिका के राष्ट्रपति जानसन ने कहा कि प्रधान मत्री श्री शास्त्री की दुखद मृत्यु से शान्ति व प्रगति के लिए मानवता की आशाओ को एक बडा धक्का लगा है। अमेरिका के विदेश मत्री श्री डीन रस्क ने एक वक्तव्य मे कहा— भारत के प्रधान मत्री श्री लालबहादुर शास्त्री के आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर मेरे हृदय को गहरा धक्का लगा है। हमे ताशकद मे समझौता करने मे उनकी महान् राजनीतिज्ञता का समाचार मिला और सिर्फ ३ सप्ताह मे हम स्वय उनका अभिवादन करने की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा मे थे। अब विश्व भर के करोडो नागरिको के साथ मैं इस महान् भारतीय नेता के निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करता हूं।

पाकिस्तान के राष्ट्रपति श्री अयूब खा ने ताशकद मे कहा कि प्रधान मत्री श्री शास्त्री शाति के लिए मरे। मैं जानता था कि वे शाति चाहते थे और मैं आपको विश्वास दिलाता हू कि हम भी शाति चाहते हैं।
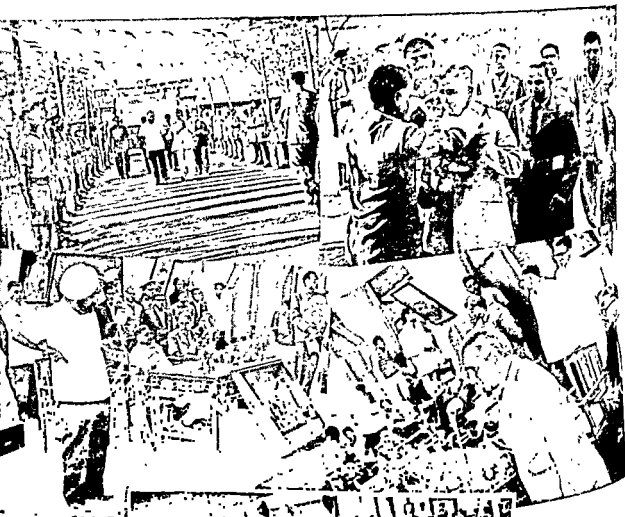
मैं भारत की सरकार तथा जनता को अपनी संवेदना तथा सहानुभूति भेजता हूं।

भारत के राष्ट्रपति को इंग्लैंड की महारानी एलिजाबेथ ने शोक-सन्देश भेजा। उन्होंने कहा कि मुझे आपके प्रधान मंत्री की मृत्यु का समाचार पाकर बड़ा दुःख हुआ। राष्ट्र मंडल की मुखिया होने के नाते मैं भारतीय जनता, सरकार व शास्त्री-परिवार को संवेदना भेजती हूं।

प० जर्मनी की सरकार को इस दुखद समाचार से बड़ा दुख हुआ। एक सरकारी प्रवक्ता ने कहा कि इस समाचार से सबसे अधिक दुख इस बात से भी हुआ कि श्री शास्त्री की मृत्यु ऐसे समय में हुई जबकि भारत और पाकिस्तान के संबंधों में सुधार हो रहा था।

इटली के प्रधान मंत्री सिगनर आल्डो मोरो ने ताशकंद में श्री शास्त्री की एकाएक मृत्यु पर गहन खेद प्रकट किया।

अन्तिम कामना

निधन से कुछ समय पहले प्रधान मंत्री श्री शास्त्री ने रक्षा मंत्री श्री चह्वाण से वार्ता करते समय जो संदेश जनता को दिया वह महत्वपूर्ण है। प्रधान मंत्री ने कहा था कि हमने बहादुरी के साथ लड़ाई लड़ी और अब उसी बहादुरी के साथ शान्ति के लिए भी लड़ेंगे। यह मत श्री शास्त्री ने श्री कोसिगिन द्वारा आयोजित भोज में वापिस आते समय कहा था। ता: १० जनवरी की रात को ११ बजे श्री शास्त्री ने गृहमंत्री श्री नंदा से टेलीफोन पर बात भी की थी। इस वार्ता में उन्होंने नंदा को ताशकंद घोषणा के कुछ अंश बताये थे तथा श्री नंदा ने उन्हें बधाई दी थी कि आप केवल युद्ध नेता ही नहीं अब शान्ति के नेता भी सिद्ध हो गए। श्री शास्त्री ने इस वार्ता में श्री नंदा से काबुल में एक दिन ज्यादा रुकने की अनुमति चाही थी। उन्होंने अपने परिवार वालों से भी टेलीफोन पर बात की थी और कहा था कि मैं बुधवार तक लौट आऊंगा। लेकिन फिर वह वापिस लौट कर नहीं आये और शान्ति के लिए शहीद हो गये।

विचित्र किन्तु सत्य

—शिवशंकर शर्मा, ८ स

सबसे पहले टीके का आविष्कार किसने किया ? (एडवर्ड जेनर)
सबसे पहले विद्युत का आविष्कार कहां हुआ ? (यूनान में)
क्लोरीन गैस का आविष्कार किसने किया ? (सी० डब्ल्यु शीले)
आक्सीजन गैस का आविष्कार किसने किया ? (सर जोसेफ प्रीस्टले)
संसार में सबसे पवित्र झील कौनसी है ? (मानसरोवर)
भारत पर कितनी जातियों ने आक्रमण किया ? (१२ जातियों ने)

अनिल कुमार सक्सेना, कक्षा ६ बी

क्या भारत मां को भूल गये—
या जीवन-झूला झूल गये—
नर-नारी कहते बिलख-बिलख
है कहां—हुआ क्या आज बोस ?

सोया भारत अब जाग गया—
करने को कुछ, लेने को कुछ।
मरने-मिटने के अमर वाक्य—
कहते न हमें क्यों आज बोस ?

भारत है पीड़ित शासन से—
सोने को बैठा सब सुख से।
आशा भर पाने को तेरी—
देगा निज नर सुभाष बोस ॥

क्या आजादी रक्त मांगती ?
वीरों का बलिदान मांगती ?
निश्चय बलि देंगे हम अपनी—
देंगे यहां रुधिर का ओज ॥

लाल किले के ऊँची पथ पर—
स्वतन्त्रता के प्रिय-मधु-मग पर—
भारत में दामिनी सी बन कर
[illegible] फिर आज बोस ॥

मेरी आशाओं पर निर्भर—
है भारत की [illegible] ।
[illegible] तुम भारत—
[illegible] हम तुम्हें बोस ?

ीश चन्द्र ऐरन, बदायूं ■

जापान की राजधानी टोकियो म शिशु पाठशाला मे एक विद्यार्थी पढता था। एक दिन पाठशाला से घर आते समय रास्ते मे उसने एक रुपया पडा देखा। उस बालक ने रुपया उठा लिया परन्तु तुरन्त उसे अपनी माँ की यह बात याद आयी कि 'हमे कुछ मिले तो यह समझना चाहिये कि वह चीज किसी व्यक्ति की खोयी हुई है। अत उसे स्वय न लेकर पुलिस को सौंप देना चाहिये।'

वह लडका उस रुपये को घर न लेजाकर सीधा पुलिस थाने मे गया और वहाँ के दरोगाजी से कहा कि …या लीजिये, मुझे रास्ते मे मिला है। अतएव यह रुपया सरकारी खाने मे जमा कर लीजिये।' किन्तु …साहब ने आलस्य-वश सरकारी खाने मे जमा नही किया। उन्होने सोचा 'एक रुपये के लिये कौन इतनी …च्ची करे।' अतएव उन्होने उस बालक से कहा, 'दोस्त ! तुमने बडा अच्छा काम किया है। इसके लिये …ो शाबाशी देता हू और यह रुपया भी इनाम के तौर पर मिठाई खाने के लिये देता हू।'

छोटा बालक कुछ समझा नही। वह रुपया लेकर घर आया और उसने माँ के हाथ मे रुपया दे दिया। …ने बालक से पूछा, 'तू रुपया कहाँ से लाया है?' बालक ने सारी बात बताकर कहा, 'दरोगाजी ने मिठाई …के लिये मुझको रुपया वापिस दे दिया है।' इस बात को सुन कर माता को दरोगा पर बहुत क्रोध …। वह उनके पास गई और बोली, 'आपने मेरे बच्चे को रुपया वापस किसलिए दिया ? इससे तो यह …दूसरो के पैसो से मिठाई खाने के लिये चोरी का धन्धा सीख जायगा।'

इसके बाद उस बालक की माता ने पुलिस के बडे अधिकारियों के सामने फरियाद की। पुलिस के बडे …ारी ने दरोगा से पूछा, तब उन्होंने कहा, 'मैंने तो इसकी ईमानदारी को देखकर रुपया इनाम मे …था।'

तब बडे अधिकारी ने दरोगा से कहा, 'यदि आपको ईनाम देना था तो अपनी जेब मे देना चाहिये था। …ब ही आपने इस बालक को अनुचित पाठ पढाया है, इसलिये आपको नौकरी से बर्खास्त किया जाता है।'

जहाँ ऐसी ईमानदारी हो और बालको को ऐसे आदर्श सस्कार दिये जाते हो, वह देश उन्नत और …प हो तो इसमे क्या आश्चर्य ? हमे भी इसी प्रकार उच्च 'आदर्श सस्कार' अपनाने चाहिये ताकि भविष्य …ने देश को उन्नत व समृद्धिशाली बना सके।

स्वर्गीय श्री लाल बहादुर शास्त्री की पुनीत स्मृति में

अशोक कुमार जौहर, ११ स

कल हमारे बीच था, वह कहाँ गया ?
कल हमारे पास था वह कहाँ गया ?
आ खुदा कुछ तो बतलादे मुझे—
तुमने उसको कहाँ पर छुपा दिया ?

पर्वतों के शिखरों से बुला लूंगा उसे
मौत के हाथों से भी छुड़ा लूंगा उसे
चांद तारों तुम ही बतला दो मुझे—
आस्मां पर से भी उतार लूंगा उसे।

कहाँ हो तुम कुछ तो आवाज दो।
बहते हुए आंसुओं को थाम दो
एक बार आकर हमारे सामने -
इस जिन्दगी को जिन्दगी का साज दो।

आज तुम्हारे दर्शनों को तरस रहे।
नैना तुम्हारी याद में हैं बरस रहे।
थामने पर दिल मेरा थमता नहीं।
सौ २ घाव बनकर दिलमें हैं कसक रहे।

अब याद में उनको सर झुका रहे।
जहाँ भी हैं खुदा रहें हम पुकार रहे।
दुआ है हमारी खुदा से यही—
जन्नत में भी वह सदा सुख से रहें।

र्ग शान्ति – काश्मीर मोर्चे पर

क सरकार, कक्षा ११ ब

हॉल्ट ·········हॉल्ट । दो बार चेतावनी मिली परन्तु जब वह पाकिस्तान का गश्ती सिपाही भागने लगा तो·········एक और हॉल्ट के साथ 'धाय' की आवाज हुई और वह दुश्मन बच न सका । वही ठन्डा हो गया । सैनिक पुनः आगे को चल पडे, धाड लेकर । इन सैनिको को बिल्कुल पक्का विश्वास है कि हम जीतेंगे व कोई भी दुश्मन हमे हरा नही पावेगा । तभी तो वे इतनी निडरता से आगे बढ रहे थे ।

यह कम्पनी राजपूताना राइफल की छठी बटालियन की थी । इसका नेतृत्व कर रहे थे केप्टन वीर ह । सब सैनिक उनका आदर करते थे व उनकी आज्ञाओ का पालन करते थे ।

एकाएक वीर सिंह ने रुकने की आज्ञा दी और इशारे से लेफ्टीनेंट रामस्वरुप को अपने पास किसी रामर्श के लिए बुलाया । रामस्वरुप मार्च करता आया तथा एक लम्बा सैल्यूट दिया । उसके मुख से ट हो रहा था कि वह निडर तथा साहसी है और किसी भी खतरे का सामना करने को तैयार है । टेन ने उसके कान में कुछ फुसफुसाते हुए कहा ।

लेफ्टीनेंट ने कुछ जवानो को चुना और उन बीहडो मे उनके साथ गायब हो गया । केप्टेन बाकी थियो के पास आया और धीमे गम्भीर परन्तु रोबदार आवाज मे बोला, जवानो ! आज हमें वह काम रना है जिसके लिए हमारी राजपूत मा ने हमें जन्म दिया है । यदि टक्कर जबर्दस्त हुई तो प्रतिज्ञा रो कि हम मिट जायेंगे परन्तु झुकेंगे नही ! वह राजपूत ही नही जो देश के लिए अपना खून न बहाये । म पचास मे से कौन इसके लिए तैयार है केवल हाथ उठाओ । एक साथ बडी फुर्ती से पचासों सिपाहियों हाथ हवा मे लहराये और वह वातावरण शायद इस खुशी मे झूम उठा कि हम युद्ध पर जा हे है ।

केप्टेन ने तत्काल आगे बढ़ने का आदेश दिया । अब जवान अत्यन्त सतर्कता से बढ़ने लगे । उनकी

उठो राष्ट्र के अभिमान सैनिक माँ के गौरव, माँ के लाल

कालूराम भाटी, कक्षा १० ब

उठो, सृष्टि के सर्व श्रेष्ठ धन,
उठो, अरे ! माँ के अभिमान ।
उठो, जनों की नव नव आशा,
उठो अरे माँ के अभिमान ॥

उठो, राष्ट्र के सजग सिपाही,
उठो बचाओ निज सम्मान,
उठो, उठो, भीषण आंधी सम
उठो अरे, सच्चे तूफान ॥

उठो वीर, करने तव अर्चन,
विजय खड़ी ले पूजा थाल,
उठो राष्ट्र के अभिनव सैनिक,
माँ के गौरव माँ के लाल ॥

उठो सिपाही चलो समर में,
कर जननी का जय जयकार ।
उठो प्रलयंकर अब तुम गरजो,
छा जाये जग में अम्बार ॥

उठो गरजते वज्र-मेघ से,
बनकर भीषण झंझावात ।
रचो नया आदर्श जगत में
तुम से हो जग आनन्दस्नात ॥

उठो विश्व के कण कण में तुम,
धधक उठो बन विप्लव ज्वाल ।
तुम को देख धरा नभ कांपे
आजाये जग में भूचाल ॥

उठो आज तुम हँसते हँसते,
कर दो माँ के हित बलिदान ।
उठो आज तुम करो समर मे,
रण चण्डी का चिर आह्वान ॥

उठो आज तुम फिर से गाओ,
शंखनाद कर भैरव गान ।
उठो आज तुम प्रिय स्वदेश को,
अमर शक्ति को दो पहचान ॥

हिन्द के ऐ नौजवां बढ़े चलो

विष्णु प्रकाश माथुर कक्षा ८ म

हिन्द के ऐ नौजवां बढ़े चलो
मांगती है मां अगर ये जिन्दगी का दान आज ।।
आन, बान, शान पर, कर उठो प्रयाण आज ।
आसमां की सीढ़ियों पे हर कदम बढ़े चलो ।
हिन्द के ऐ नौजवां बढ़े चलो ।।

राम कृष्ण और शिव का बल तुम्हारे साथ है ।
कर उठे या मर मिटे, यो दल तुम्हारे साथ है ।।
हिमालय की चोटियों पे हर कदम बढ़े चलो ।
हिन्द के ऐ नौजवां बढ़े चलो ।।

प्रताप और कुम्भ आज चित्तौड़ से पुकारते ।
पद्मिनी के महल आज, मुख तुम्हारा ताकते ।।
जय विजय के स्तम्भ पे ही हर कदम बढ़े चलो ।
हिन्द के ऐ नौजवां बढ़े चलो ।।

कर रहा है हर मजार ये दास्तां बयान है ।
मर गये, झुके नहीं, ये तुम्हारी शान है ।।
चीनियों की लाश पे ही हर कदम बढ़े चलो ।
हिन्द के ऐ नौजवां बढ़े चलो ।।

नवयुवक तथा देशरक्षा

गौरीशंकर, कक्षा ९ अ

सृष्टि के सृजन के साथ ही संघर्ष का भी प्रादुर्भाव हुआ। आदि काल में प्रत्येक प्राणी को अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्ष करना पड़ता था। युग बदलता गया। आकांक्षा और भावनाओं का स्थान मानव संघर्ष के जगत में कूदना आज इस स्थिति को प्राप्त हो गया है कि मानवता का नाम ही मिटा देना चाहता है। परन्तु सुधी प्रयत्नशील हैं मानवता की रक्षा के संघर्ष में। मानवता और महत्वाकांक्षा की इस लड़ाई में मानवता को सहयोग की आवश्यकता है।

मनुष्यों के बीच आपस में मतभेद हो जाना तो उतना ही स्वाभाविक है जितना कि सुन्दर कुसुम के साथ कांटों का होना। अगर आज किसी राष्ट्र को मानवता की दौड़ में अग्रणी होना है तो उसे साथ ही उस राष्ट्र को अपनी रक्षा के लिए भी सोचना होगा।

आज किसी भी देश के नौनिहाल शक्तिशाली नहीं हैं तो वह देश शक्तिशाली नहीं हो सकता। देश का भाग्य, देश के नौजवानों के कन्धों पर है। सम्प्रति अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर विचार विमर्श होते रहते हैं। हर एक देश अपनी सीमा के लिए सतर्क है तथ राष्ट्र के पास काफी समृद्ध सेना की आवश्यकता है। दृष्टान्त्-स्वरुप हमारा देश शान्ति प्रिय है परन्तु उसकी रक्षार्थ सेना की आवश्यकता है। प्रतिदिन हमें चीन और भारत अथवा भारत और पाकिस्तान सीमा सम्बन्धी विवाद अखबारों में दृष्टिगोचर होते हैं।

सारांश यह कि इस तनावपूर्ण विश्व में अपने देश की रक्षा के लिए अपरिमित शक्ति की आवश्यकता है जो वर्तमान नव पुरुष ही प्रदान कर सकते है। अथवा यह भी अतिशयोक्ति नहीं कि हमारी समस्त शक्तियां उन्हीं में निहित हैं।

सबसे विलक्षण विषय तो यह है कि हम अपनी आय का अर्द्धांश अपनी रक्षा पर व्यय करते हैं और

यह असम्भव नहीं परन्तु आवश्यक है। कारण, स्थिति इतनी विषम हो चुकी है कि हमारे समक्ष कोई दूसरी राह नहीं है। इसलिए आवश्यकता है कि हमारी नौजवान शक्तियां संगठित हों और संकटपूर्ण परिस्थितियों का सामना करने के लिए तत्पर रहें। तात्पर्य यह कि संकुचित प्रवृत्तियां त्याग कर मातृभूमि की सेवा और रक्षा के लिये हम सेना में प्रविष्ट हों।

विद्यालय के नवोदित छात्र जो भविष्य के कर्णधार तथा देश की प्रगति के स्तम्भ होंगे, उन्हें चाहिये कि "राष्ट्रीय सैन्य दल" तथा 'सहायक सैन्य दल' में अधिकाधिक संख्या में प्रविष्ट हों। इनके पवित्र उद्देश्य 'एकता और अनुशासन' इन्हें समुचित शिक्षा प्रदान करते हैं, जिनके आधार पर हम अपने देश की उन्नति और रक्षा कर सकते हैं। संकटकालीन अवस्था में प्रशिक्षित नवयुवक सहायता प्रदान कर सकते हैं।

देश में बिना एकता के सेना का शक्तिशाली होना तो बिना जड़ों के वृक्षों का होना है। अगर आज दुनिया की दौड़ में रूस अथवा अमेरिका अग्रसर हैं तो उसका प्रधान कारण है उनकी एकता और शक्ति।

परन्तु स्मरण रहे कि हमें सेना ही नहीं बढ़ानी है बल्कि इसे आधुनिक उपकरणों से भी सुसज्जित करना होगा जिससे विश्व में हमारी सेना होड़ ले सके। प्राचीन शस्त्रों का परित्याग कर आधुनिक शस्त्रों को अपनाना होगा। सेना के विभिन्न विभाग स्थल-सेना, जल-सेना, वायु सेना का अपने क्षेत्र में विशिष्ट स्थान है। स्थल सेना जहां हमारे स्थलीय भूभागों की रक्षा करती है वहां जल सेना जलीय सीमान्तों का। वायु सेना स्थलीय आक्रमण तथा जलीय आक्रमण दोनों से हमारी रक्षा कर सकती है।

अन्त में, वायु सेना को समृद्ध करने का विषय हो अथवा जल सेना को, आवश्यकता है हमारे नवयुवकों के निःस्वार्थ त्याग की। शान्ति और पंचशील की पृष्ठ-भूमि पर सतर्कता बरतते हुए विश्व के सामने हम एक नया दृष्टान्त उपस्थित करें, जो मानव-इतिहास में अविस्मरणीय हो। कवि का यह आह्वान हमारे लिये प्रकाश लायेगा।

जब देश-पुकार रहा हो,
अपनी कुटिया को फूंक चलो,
ममता को कर दो दूर चलो।

हरीसिंह तंवर, कक्षा दस द

ह वक्त सोने का नहीं तूफान मचा दे,
ओ देश के सैनिक तू उठ बन्दूक उठा ले !

यह भारत सदा जिसने है सोतों को जगाया,
पंचशील का मार्ग दुनियाँ को सदा दिखलाया,
बढ़ते हुए इस पाक को यह पाठ पढ़ा दे,
ओ देश के सैनिक तू उठ बन्दूक उठा ले !

यह नेफा हमारा है यह लद्दाख हमारा,
भारत का मुकुट प्यारा वो कश्मीर हमारा,
आये न इधर भूल कर तू चीन को सुना दे
ओ देश के सैनिक तू उठ बन्दूक उठा ले !

भारत का बना भाई तो दुनियाँ ने सराया,
सजधज करके ले अब भिड़ने को चला आया,
भिड़जा तू उस बेशर्म से, उसे तू मिट्टी में मिला दे,
ओ देश के सैनिक तू उठ बन्दूक उठा ले !

राजस्थान जगा सारा तो गुजरात जगा है,
जौहर की जगी ज्वाला तो पंजाब जगा है,
नवीन मण्डल को यह पैगाम सुना दे,
ओ देश के सैनिक तू उठ बन्दूक उठा ले !

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

श्री मुनीर अहमद ताबिश, एम० ए०

तू भीम अर्जुन की अमानत[1] का अमीं[2] है।
तू खातमे[3] अरबाबे[4] शुजाअत का नगीं[5] है॥
तू राम की लक्ष्मण की महोब्बत का भरम है।
तू कृष्ण कन्हैया की हक़ीक़त का भरम है॥
तू काशीओ अजमेर की अज़मत[6] का निगेहबां।
तू सीता ओ रज़िया की है इसमत[7] का निगेहबां॥
है देख हिमाले की भी रिफ़अत[8] तेरे दम से।
कायम है अभी हिन्द की सतवत[9] तेरे दम से॥
है ताजमहल का ये नज़ारा तेरे दम से।
जिन्दा है ये खामोश इशारा तेरे दम से॥
तू टीपूओ परताप की है ज़िन्दा कहानी।
है तुझ से रवां गंगो जमना की ये रवानी॥
क़ायम है तुझी से तो अजन्ता की बहारें।
आबाद तुझी से हैं अलोरा की बहारें॥
हां तुझ से हो शादाब[10] ये भारत का चमन है।
तू शाने वतन—आने वतन—जाने वतन है॥
मज़लूमो[11] यतीमों[12] की हिफ़ाजत तेरे शेवा।
है शर्मो हया उलफ़तो मरव्वत तेरा शेवा॥
तू दोस्त का मरहम है तो दुश्मन की कज़ा है।
तेवर हैं जुदा तेरे निराली ये अदा है॥
उठ देख के अब कितना नया शामो सहर है।
फिर जानिबे कशमीर लुटेरों की नज़र है॥
खतरे में है फिर इसमते पंजाब ज़रा देख।
लुट जाय ना फिर दोलते पंजाब ज़रा देख॥
फिर पस्त[13] नज़र मस्जिदे जामे पे उठी है।
फिर देश के दुशमन ने नई चाल चली है॥
नापाक इरादों को ज़रा उठ के कुचल दे।
इस क़सरे[14] ज़लालत को ज़रा उठ के मसल दे॥
दुनिया को दिखा दे के तू भारत का जवां है।
किस औज[15] पे ये अपने तिरंगे का निशां है॥

---

१ गुज़री हुई चीज़ २ अमानतदार ३ बहादुरी ४ बहादुर लोग ५ नगीना, जवाहिर ६ शानो शौकत ७ मज़हबी, शौल ८ बलन्दी ९ दबदबा १० हरा भरा ११ जिस पर जुल्म किया गया हो १२ यतीम १३ गिरी हुई नज़र १४ अपमान का महल १५ बलन्दी, ऊंचाई।

भारत के वीर सैनिक

हरीसिंह तंवर, कक्षा दस द

यह वक्त सोने का नहीं तूफान मचा दे,
ओ देश के सैनिक तू उठ बन्दूक उठा ले !

यह भारत सदा जिसने है सोतों को जगाया,
पंचशील का मार्ग दुनियां को सदा दिखलाया,
बढ़ते हुए इस पाक को यह पाठ पढ़ा दे,
ओ देश के सैनिक तू उठ बन्दूक उठा ले !

यह नेफा हमारा है यह लद्दाख हमारा,
भारत का मुकुट प्यारा वो कश्मीर हमारा,
आये न इधर भूल कर तू चीन को सुना दे
ओ देश के सैनिक तू उठ बन्दूक उठा ले !

भारत का बना भाई तो दुनियां ने सराया,
सजधज करके ले अब भिड़ने को चला आया,
भिड़जा तू उस बेशर्म से, उसे तू मिट्टी में मिला दे,
ओ देश के सैनिक तू उठ बन्दूक उठा ले !

राजस्थान जगा सारा तो गुजरात जगा है,
जौहर की जगी ज्वाला तो पंजाब जगा है,
नवीन मण्डल को यह पैगाम सुना दे,
ओ देश के सैनिक तू उठ बन्दूक उठा ले !

श्री माधोदास पुरोहित

क्रोध को सब बुराइयों की जड़ कहा है। क्रोध संसार का बंधन कहा गया है। केवल क्रोध को जीत लेने से संसार में सब पर विजय प्राप्त की जा सकती है। क्रोध पर विजय पाने वाले को दुख का अनुभव नहीं करना पड़ता। क्रोध रूपी आग से मनुष्य को सदा बचना चाहिये। जिस प्रकार आग प्रत्येक वस्तु को जला देती है। उसी प्रकार क्रोध मानव को जलाकर राख कर देता है।

सामान्यतया लोग क्रोध को एक बड़ा दोष ही मानते हैं। कुछ परिस्थितियों में क्रोध इतना हानिकारक नहीं होता जितना हम विचार करते हैं। कभी-कभी क्रोध एक पवित्र कार्य समझा जाता है। अंग्रेजों की धार्मिक पुस्तक बाईबल में ईश्वर के क्रोध का वर्णन किया गया है। ईसामसीह को बाईबल में बड़ा पवित्र, नम्र तथा अत्यन्त सज्जन आत्मा बताया गया है। लेकिन कभी-कभी उन्हें भी क्रोध करते हुए बताया गया है। एक बार कुछ लोग ईसामसीह के पास छोटे बच्चों को आशीर्वाद हेतु ला रहे थे कि बीच में ही उनके शिष्य उन लोगों को झिड़कने लगे। यह देखकर ईसामसीह को क्रोध आ गया और वे उनको कहने लगे कि इन बच्चों को मत डाटो। इन्हें मेरे पास आने दो। इस प्रकार कुछ परिस्थितियां ईसामसीह जैसे फरिश्तों में भी क्रोध उत्पन्न कर देती हैं।

क्रोध करना कब उचित है और हम कब क्रोध में आ सकते हैं इसके लिए कुछ परिस्थितियां हुआ करती हैं। जब हम निर्बल लोगों को बलवानों द्वारा निर्दयता का व्यवहार करते हुए देखते हैं, जब हम निर्दोष व्यक्ति के प्रति महान अन्याय होते हुए देखते हैं, जब हम धनवानों को गरीबों का शोषण करते हुए देखते हैं जब हम बेजबान पशुओं को निर्दयता से पीड़ा पहुँचाते हुए देखते हैं, जब हम छोटे बच्चों को उनके शराबी माता-पिताओं द्वारा बुरी तरह पिटते हुए और भूख से तड़पते हुए देखते हैं, तो हम क्रोध करने के लिए विवश हो जाते हैं। ऐसी दशाओं में क्रोध लाभदायक सिद्ध होता है। ऐसी स्थिति में हम

द्वारा निर्बलों और दुखियों की रक्षा तथा सहायता के लिए प्रेरित किये जाते हैं। इस प्रकार के ने अनेक व्यक्तियों को महापुरुषों तथा सुधारकों के पद पर पहुँचाया है और वे समाज में अन्याय कुरीतियों को समाप्त करने में सफल हुए हैं। संसार में ऐसे महापुरुषों के क्रोध को पवित्र माना है।

इस प्रकार का क्रोध हमेशा स्वार्थ रहित होता है। यह न्याय तथा सहानुभूति की भावना से उत्पन्न ता है। ऐसी भावना से जो लोग क्रोध करते हैं वे दूसरों को सदा अन्याय से बचाते हैं और भूल करने ों को सन्मार्ग पर लाते हैं। व्यक्तिगत लाभ की दृष्टि से क्रोध करने वाले महान नहीं कहलाते। मसीह ने अपने शिष्यों पर, छोटे बच्चों को डाटते हुए देख कर क्रोध किया था, लेकिन जब उनको खुद पीटा गया, उन पर थूका गया, उनकी मजाक उड़ाई गयी और उनके हाथों में कांस पर कीलें गाड दी तो भी उन्होंने क्रोध प्रकट नहीं किया किन्तु उसके बदले में ईश्वर से प्रार्थना की "हे ईश्वर तू इन ों को क्षमा कर क्योंकि जो कुछ ये करते हैं उसके संबंध में ये कुछ नहीं जानते।"

लेकिन क्रोध जब स्वार्थपूर्ण अहंकार तथा घृणा की भावना से उत्पन्न होता है तो वह सदा दनीय होता है। एक व्यक्ति पर इसलिए क्रोध प्रकट करना क्योंकि उसने तुम्हें चोट पहुंचाई है या हारा अपमान किया है या तुम्हारी हंसी उड़ाई है, स्वाभाविक है। लेकिन वास्तव में इस प्रकार का ध महत्व नहीं रखता ऐसा क्रोध अनुचित होता है क्योंकि इसमें व्यक्तिगत स्वार्थ छिपा रहता है। अंग्रेजों धार्मिक ग्रन्थ बाईबल में लिखा है, अपने शत्रुओं से प्रेम करो। क्रोध घृणा की तरफ ले जाता है र घृणा प्रायः व्यक्ति को कत्ल और अपराध की ओर ले जाती है। इसलिए क्रोध रूपी सूर्य को प्रकट ी होने देना चाहिए।

अधिक क्रोध साधारणतया दुष्प्रकृति कहा जाता है और यह आत्मसंयम के अभाव में होता है। कुछ ग वासनाओं से अभिभूत होकर भयानक हो जाते हैं और जब ऐसे लोग क्रोध प्रकट करते हैं तो ंतया पागल जैसे लगते हैं। और जब ऐसे व्यक्ति उचित अनुचित का ध्यान न रखकर भयानक भूल बैठते हैं जिसके लिए उनको जीवन भर पश्चाताप की आग में जलते रहना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति ा और घृणा के पात्र होते हैं क्योंकि वे अपने क्रोध तथा वासनाओं के दास होते हैं, स्वामी नहीं।

सत्य और न्याय

सत्य एक विशाल वृक्ष है। उसकी ज्यों-ज्यों सेवा की जाती है, त्यों-त्यों उसमें अनेक फल लगते हैं। उनका अंत नहीं होता। ज्यों-ज्यों हम गहरे पैठते हैं, त्यों-त्यों उसमें से रत्न निकलते हैं, सेवा के अवसर हाथ आते ही रहते हैं।

अदालतों का चिह्न है तराजू। उसे पकड़ रखने वाली एक निष्पक्ष, अंधी परन्तु समझदार बुढ़िया है। उसे विधाता ने अंधा बनाया है कि जिससे वह मुँह देखकर तिलक न लगाये, बल्कि योग्यता देखकर लगाये।

महात्मा गांधी

व्यक्तिगत कमजोरियों का शिकार होता जा रहा है। हम ने दुनिया के सामने चारित्रिक गुणों के महान् आदर्शों से अनुप्राणित होकर जिन धर्मों का प्रतिपादन किया, उस धार्मिक परम्परा को हमें अक्षुण्ण हर हालत में रखना है।

देश में आये दिन हड़तालों व 'बन्द' आदि के दुखद प्रसंग उपस्थित हो रहे है, उससे हमारे देश की जो आर्थिक हानि हो रही है, प्रगति-विरोधी प्रयास ही माना जायेगा। साथ ही राष्ट्र के मनोबल को ऊँचा उठाने में भी सहायक न बन सकेगा। प्रान्तीयता, भाषावाद व साम्प्रदायिक मनोवृत्ति का मुकाबला करने के लिए अपनी सुगुप्त चारित्रिक शक्तियो को पुनः तीव्रता से जगाना होगा। यदि इस क्षेत्र में थोड़ी भी शिथिलता प्रदर्शित की गई तो इतिहास विधाता हमें किसी भी दृष्टि से क्षमा न करेगा। राजनीति के दूषित वातावरण को हम चरित्र बल से ही दूर कर सकते हैं।

चीन व पाकिस्तान के आक्रमण के समय जो अभूतपूर्व एकता देशवासियो ने प्रदर्शित की थी, उसे स्थायी रूप देने का प्रयास सही ढंग से होना चाहिये क्योंकि हमारे देश पर सकट के बादल आज भी पूर्ववत मंडरा रहे हैं पचमागियो से भी हमें सतर्क रहना है। अत सच्चे देशवासियो का यह कर्तव्य हो जाता कि वे सही अर्थों में राष्ट्र की चहुँमुखी प्रगति में जुटकर राष्ट्रीय चरित्र की भावना को नया मोड देकर गाधी, नेहरू व शास्त्री जी की देश प्रेम की भावना को साकार बनाये।

ताशकंद घोषणा में घुसपैठ ?

ताशकन्द घोषणा मे ताकत को इस्तेमाल न करने का एक सिद्धान्त माना गया है। इस सिद्धान्त मे दोनो देशो की ओर से पुनः यह स्पष्ट घोषणा की गई है कि दोनो देश एक दूसरे के अन्तरिक मामलो और देखरेख मे कोई दखल नही देंगे और सेनाओ को हटाने के बाद लडाईबन्दी की रेखा पर लडाईबन्दी की शर्तों मे भी कोई दखलन्दाजी नही करेंगे। दोनो देशो ने यह मान लिया है कि वे किसी भी रूप मे हथियारबन्द सैनिक, जिनमे हथियारबन्द असैनिक भी शामिल है, लडाईबन्दी रेखा के उस पार नही भेजेंगे। हथियारबन्द घुसपैठियों द्वारा लडाईबन्दी रेखा को किसी भी दिशा मे पार करना, लडाईबन्दी रेखा की उपेक्षा मानी जायेगी, जिसका नतीजा दोनो देशो द्वारा एक दूसरे के घरेलू मामलो मे दखलन्दाजी और शक्ति के प्रयोग के रूप मे हो सकता है। और, यह सब ताशकन्द घोषणा के प्रयोजन व उसकी आत्मा के प्रतिकूल होगा।

इन्सान नहीं झुक सकते हैं

कु० पन्ने सिंह भाटी, १० स

आकाश भले ही झुक जाए,
इन्सान नहीं झुक सकते हैं ।

संसार अड़े पथ में लेकिन, तूफान नहीं रुक सकते हैं ।
आकाश भले ही झुक जाये, इन्सान नहीं झुक सकते हैं ॥

यौवन की चञ्चल लहरें भी, क्या जानें कूल किनारों को,
दिवाने पलकों पर लेते, किस्मत के क्रूर प्रहारों को ।

निज भाग्य हृदय में मानव ने, अरमान छिपाए हैं युग से,
इन्सान भले ही मिट जायें अरमान नहीं मिट सकते हैं ॥

शलभों ने भी देख लिया, दीपक की लौ का आलिङ्गन,
दीपक ने भी फिर तिल तिल कर, कर राख दिया अपना यौवन ।

यह राखी चढ़ाली मानव में, करके आंसू का अर्घ्य दान,
बलिदानी जग से मिट जाये, बलिदान नहीं मिट सकते हैं ॥

जो नाव उतारों पर प्रतिपल, आंसू का सिन्धु तरे पग पग,
पतवार छिनी हो हाथों में, मांझी हंसता हो दूर विलग ।

विश्वास भरा यौवन फिर भी, आ ही पड़ता है फूलों पर,
रोती है दुनियां बिलखाएं हो, इन्सान नहीं रुक सकते हैं ॥

आकाश भले ही झुक जाये,
इन्सान नहीं झुक सकते हैं ।

शिक्षा संचालक शाला संसद के मध्य

कक्षा ११ (विज्ञान) के छात्र शिक्षा निरीक्षक के साथ

भारत केसरी लाला लाजपतराय

कासम अली सैय्यद, कक्षा 11 'घ' गणित

"यह गर्दन कट सकती है, लेकिन झुक नहीं सकती। हम आजादी हासिल करके रहेगे या मर जायेंगे। बहादुर की जिन्दगी और गुलामी दोनो साथ-साथ कभी रह नही सकती। मेरे सीने पर लाठियो के स्थान पर गोलिया चलाओ, लेकिन हर एक लाठी अंग्रेजी साम्राज्य के कफन की कील साबित होगी" ये शब्द हैं भारत के उस वीर सपूत लाला लाजपतराय के जिन्होने अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक भारत माँ को गुलामी की बेड़ियो से मुक्त कराने का सदा प्रयत्न किया।

भारत-केसरी लाला लाजपतराय का जन्म गरीब अध्यापक श्री राधाकृष्ण अग्रवाल की धर्मपत्नी गुलाब देवी की कोख से २८ जनवरी १८६५ के दिन पंजाब के धुडि ग्राम मे हुआ जो इनका ननिहाल था। होनहार और प्रतिभाशाली के लक्षण तब ही मालूम हो गये थे जब राधाकृष्ण अपना धर्म परिवर्तन कर, इस्लाम धर्म को अंगीकार करने के लिए दृढ-सकल्प हुए। तब धर्मपरायण हिन्दू नारी ने अपने पति को ऐसा कलंकित कार्य न करने के लिए समझाने का प्रयत्न किया। अपने नन्हे लाडले को लिए हुए वह अपने पति के चरणों मे भिखारिन की भाति ऐसा न करने की भिक्षा माग रही थी। बच्चा इस करुणामय दृश्य को सहन न कर सका और बिलख-बिलख कर रोने लगा। पिता ने बालक के कोमल हृदय से निकलने वाली आह को सुना और अपने धर्म परिवर्तन के दृढ विचार को तत्काल त्याग दिया।

अबोध बालक ने अपने पिता को धर्म परिवर्तन के मार्ग से ही नही हटाया अपितु पिता के मन मे अपने कार्य पर मर मिटने की आन्तरिक जागरूकता पैदा कर दी। बालक की इस प्रतिभा को देखकर माता-पिता अपने बालक के बारे मे सोचने लगे कि यह केवल हमारा ही मस्तक ऊंचा नही करेगा, सारे हिन्दुस्तान की बात को सदा ऊंचा रखने मे आदर्श स्थापित करेगा। विद्या अध्ययन काल मे आपकी शैक्षणिक योग्यता को देखकर तो अध्यापक वर्ग भी दातो तले उंगली दबाते थे। अपनी प्रबल स्मरण-शक्ति और

के लिए उन्होंने अपना नश्वर शरीर को १७ नवम्बर १९२८ को त्याग दिया। वे भारत मां की गोद में सदा के लिए चिर-निद्रा में सो गये।

लालाजी वास्तव में हर क्षेत्र में माहिर खिलाड़ी थे, जिन्होंने देश की स्वतन्त्रता के लिए अपनी कुर्बानी दी। आज हम सभी उस वतन के शहीदों की कुर्बानियों से प्राप्त आजादी का आनन्द ले रहे हैं। लेकिन अब हमें यह ध्यान रखना है कि हमारी आजादी पर किसी भी प्रकार की आंच न आने पाए। इसकी रक्षा हमें अपने खून की आखिरी बूंद रहने तक करनी है।

महेश कुमार, कक्षा ६ म

[१]

प्राणों से प्रिय आज तिरंगा।
घर घर हम फहरायेंगे॥
आजादी के पुण्य पर्व पर।
गीत खुशी के गाएंगे॥
इस झण्डे के लिये भगत ने।
अपने प्राण गंवाए थे॥
लिये हथेली पर प्राणों को।
नेताजी बढ़ आए थे॥
शान न इसकी जाने देंगे।
चाहे खुद मिट जावेंगे॥

[२]

खून शहीदों का है इसमें।
नेहरू की कुर्बानी है॥
जोश लाजपत का है इसमें।
तिलकजी की वाणी है॥
इस झण्डे की छाया में।
मर मिटने की हमने ठानी है॥

गांधी जी-जो सत्य की ज्वाला में तपकर निखर उठे

शिव सुमन पुरोहित, कक्षा ११ ब

विश्व के महापुरुषों में जो स्थान गांधी जी को प्राप्त है
उसका एक मात्र कारण उनकी कठोर सत्य-साधना थी।
जिस सत्य की साधना से गाधी जी इतने महान् बने थे, वह सत्य क्या
है। आंखों देखी व कानों सुनी का मुंह से भी वैसा ही वर्णन कर देना
साधारण अर्थ मे सत्य है। परन्तु यह सत्य की संकुचित परिभाषा है
जिसे गाधी जी सत्य कहा करते थे। उपर्युक्त सत्य तो उसे प्राप्त करने
का एक मार्ग है। गाधी जी की दृष्टि में परमेश्वर का सच्चा नाम ही
'सत' अर्थात् सत्य है, कहना ठीक है। जब सत्य ही परमेश्वर है तो सत्य
की आराधना भक्ति है और भक्ति सिर हथेली पर लेकरचलने
है। अत. इस मार्ग पर चलने मे कायरता की गुंजाइश नही है,
यह मार्ग जितना सीधा है, उतना ही तग भी। इस मार्ग पर
चल सकते है, जिनमे सैनिक की-सी हिम्मत हो, डाक्टर का-सा
और किसी भी बीमारी से जूझने की शक्ति हो, हरिशचन्द्र की
मरते दम तक सच बोलने का दृढ सकल्प हो और हो न्याय के
लड़ने का अदम्य साहस। ऐसा ही व्यक्ति इस कंटकाकीर्ण मार्ग पर
कता है और सत्य की साधना कर सकता है। गाधी जी ने बचपन से अपने मे इन गुणों का समावेश क
र कर दिया था। हरिशचन्द्र से उन्होने सत्य बोलने का दृढ संकल्प, उसके लिए दृढ साहस और परिस्थिति
जूझने की शक्ति समाहित की। प्रह्लाद से उन्होने सत्य व न्याय के लिए लड़ना सीखा। उन्होने इस आद
अपनाया कि न झूठ देखो, न सुनो और न कहो।

र के मार्ग

ये तो वे आदर्श थे, जो सत्य पर चलने से पहले किसी मनुष्य मे होने चाहिए। सत्य पर चलने के
साथ साथ उसे और भी कई मार्गों पर चलना पड़ता है। गांधी जी के विचारानुसार वे अहिंसा

ये मार्ग है--सच बोलना, अस्तेय, अपरिग्रह और प्रेम। बिना इन मार्गों पर चले--सत्य का कोई अस्ति
नहीं। सत्य प्राप्त करने के लिए इन मार्गों पर चलना ही पडता है। कहावत है कि दो नावों पर सव
हमेशा गिरना ही है। पर जो दो नावो पर चढ कर भी न गिरे वही तो महान् है। गाधी जी इन मार्गों प
एक साथ चले थे। तभी तो उनका सत्य इतना बलवान था। सच बोलने की उन्हे बचपन से ही आदत थी
एक बार, जब कि वे प्रारम्भिक कक्षाओ मे ही पढते थे, उनकी पाठशाला में एक निरीक्षक महोदय पधारे
उन्होने अंग्रेजी का एक शब्द सब छात्रो से लिखने को कहा। सबने ठीक लिखा, परन्तु एक दूसरे की नक
करते। अध्यापक ने यह देख लिया था। उसने गाधी जी को इशारा किया कि वे आगेवाले लडके की नक
कर लें, लेकिन गाधी जी को यह कार्य पाप लगा। वास्तव मे हृदय ही सत्य का उद्गम स्थल है। हृदय
हमेशा जो प्रेरणा मिलती है, वही सत्य होती है। जो दिल की आवाज पर चलता है—लाख विपदायें आ
पर भी वही तो महान् है। गाधी जी ने हृदय की आवाज को कभी नही दबाया, भले ही इससे उनके ब
मे बडे स्वार्थ पर आघात पहुँचा हो। दक्षिण अफ्रीका मे उन्हे सत्य के लिए कितनी विपदाये झेलनी प
थी। बैरिस्टर बन जाने पर भी, उनके लिए कहा जाता था कि वे धन के लिए ही मुकदमा लडते है, गाधी ज
ने सत्य के लिए लडना प्रारम्भ किया। जहा उन्हे थोडा सा भी झूठ दिखाई दिया, वही उन्होन मुकदमा छो
दिया। एक बार दक्षिण अफ्रीका मे, उन्होने एक दिवानी मुकदमा अपने हाथ मे लिया। फैसला भी उन
पक्ष मे हुआ। झूठ साबित होने पर उन्होने रद्द करवा दिया।

अहिंसा सत्य का अटूट साथी है। एक तरह से सत्य का ही रूप है। अहिंसा का साधारण अ
है किसी जीव को न सताना। परन्तु गाधी जी कहा करते थे कि यह अहिंसा वह स्थूल वस्तु नही है ज
आज हमारी आखो के सामने है। किसी का बुरा चाहना हिंसा है। द्वेष हिंसा है। जगत के लिए ज
आवश्यक वस्तु है उस पर कब्जा रखना भी हिंसा है।

कितने पवित्र थे वे विचारो मे। जो कुछ सोचते अच्छा ही सोचते, सत्य ही सोचते उसे कहने
लिए वे उतावले नही हो उठते। बल्कि धैर्य के साथ सोचते थे व बोलते थे कि कही गलत न निकल जाय
गाधी जी के विरोधी भी बहुत थे। फिर भी गाधी जी ने उनके प्रति द्वेष भाव न रखा। उनका सिद्धात थ
कि भूल जाओ और क्षमा करदो। अपने हत्यारे को भी उन्होने क्षमा कर दिया, उसके लिए केवल दो शब
कहे—'हे राम'।

किसी भी प्रकार की वस्तुए जो मानव मात्र की आवश्यकता की हो, उन्होने कभी भ
इकट्ठी न की। अनुचित सग्रह तो उन्होंने धन का भी न किया था। वे बैरिस्टर थे, चाहते तो रईस ब
सकते थे, सरकार मे कोई बड़ा पद प्राप्त कर सकते थे। परन्तु उस समय न वे गाधी जी ही रहते और
उनका वह सत्य ही।

कसौटियाँ

गाधी जी ने अपने सविनय अवज्ञा आन्दोलन की शुरुआत चम्पारन से की थी। यह असत्य के
विरुद्ध सत्य का विद्रोह था। उन्हे चम्पारन से बाहर निकलने की आज्ञा हुई--ब्रिटिश
सरकार से।

गाधी जी जानते थे कि वे सत्य पर हैं और इसी पर डटे रहे। परिणामस्वरूप उन पर मुकदम
चला। उन्होने स्वयं अपना अपराध स्वीकार कर लिया कि मैंने जान बूझ कर सरकारी आज्ञा तोडी है

जब कौंसिल ने उसे तार भेजा कि गांधी जी [illegible] स्वीकार न करें। परन्तु गांधी जी [illegible]
सत्य पर। [illegible] सकेगा।

[illegible] भारतीय समाज पर [illegible] है। [illegible] सवर्ण पढ़ लिख [illegible] जातियों की [illegible] करती आ रही हैं। [illegible]
परन्तु उन्हें अभी तक [illegible] नेताओं [illegible] ? समाज में [illegible]
उन्हें समाज के किसी भी [illegible]
मानुषों की आवाज को दबा देते हैं। [illegible]
पापों का फल है। गांधी जी इस अन्तर [illegible]
को [illegible] कि [illegible] न कोई धर्म है, न कोई [illegible] और न [illegible]
उन्होंने अछूतों का पुन: नामकरण किया- हरिजन ईश्वर की सन्तान। उन्हें [illegible]
कारण बहुत विरोध सहन करना पड़ा था।

भारत में साम्प्रदायिकता की आग भड़क उठी थी—[illegible] शान्ति से पूर्ण हो। [illegible]
मुसलमान दोनों आपस में लड़ने लगे, एक दूसरे पर कीचड़ उछालने लगे।

गांधी जी ने गुमराहों को फिर मार्ग दिखाया, हिन्दुस्तानी संस्कृति न तो बिल्कुल हिन्दू ही है और न बिल्कुल मुसलमानी।

सत्य बोलने वालों पर हमेशा ही विपदायें आती हैं। ये ही तो वे कसौटियां हैं, जिन पर कसे जाकर मानव निखर उठता है मानव महान् बनता है। गैलीलियो को जेल में डाल दिया गया था, ईसा को फांसी पर लटकाया गया था, इब्राहिम लिंकन को गोली मार दी गयी थी और सुकरात को जहर दिया गया था, केवल सत्य के लिए। गांधी जी को भी गोली मारी गई थी—सत्य के लिए ही तो।

क्या ताशकन्द-घोषणा भारत की बुनियादी नीतियों के अनुरूप है?

ताशकंद घोषणा न केवल भारत के पड़ौसी देश से अच्छे सम्बन्धों और दूसरे देशों के प्रति शांति और शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की बुनियादी नीतियों के अनुरूप है, बल्कि वह उन्हें और पुष्ट करती है। इन्हीं नीतियों के अनुसरण में भारत १९४९ के बाद से पाकिस्तान से अनाक्रमण सन्धि करने के लिए बराबर जोर देता आ रहा है। भारत सरकार और भारतीय जनता तहेदिल से पाकिस्तानी जनता के साथ मैत्री और भाईचारे से रहना चाहती आई है। ताशकंद घोषणा ने भारत के उद्देश्यों और नीतियों को पूरा करने की दिशा में एक आधार प्रदान किया है।

हमारा भारत देश महान,
जन गण को यह अभिमान।

वीरों की है यह समर भूमि,
ऋषियों की रही है तपो भूमि,

जन मन इस पर कुर्बान,
हमारा भारत देश महान।

शिवाजी सरीखे वीर यहाँ,
प्रताप जैसे रणधीर यहाँ

यहाँ है वीरों की सन्तान,
हमारा भारत देश महान।

यहाँ उदय हुआ सुभाष सूर्य,
भगत सिंह से देश भक्त,

अमर गुरु गोविन्द की सन्तान
हमारा भारत देश महान।

झाँसी की रानी सी नारी,
चित्तौड़ पद्मिनी सी रानी,

खोजा न मिले जहान,
हमारा भारत देश महान।

राजपूती वीरों की जोड़ी
दुनियाँ भर में दिखती थोड़ी,

अमर उनसे यह राजस्थान,
हमारा भारत देश महान।

पनपी है कृष्ण की नीति यहाँ,
गाँधी से दृढ़ प्रतिज्ञ यहाँ,

नेहरू पर हर नर को अभिमान,
हमारा भारत देश, महान।

गंगा यमुना गौरवशाली,
हिमालय सी दृढ़ रख वाली,

अद्भुत प्रकृति की भी शान,
हमारा भारत देश महान।

हम को यह प्राणों से प्यारा,
हर जां है इसका रखवारा,

सब को इस मद का मान,
हमारा भारत देश महान।

कैलाश नारायण राठी, ९ अ

घड़ी नहीं आराम की

मुरलीधर स्वामी, कक्षा १० द

उठो जवानो, आगे आओ, होड़ करो कुछ काम की,
आलस छोड़ो, निद्रा त्यागो, घड़ी नहीं आराम की।

ताल बांध कर नहर काट दो, पम्प चलाओ जोर से,
आज किसानो गगन गुंजा दो, विजय घोष सब ओर से।

नई मशीनें, खाद बीज भी, नई शक्ति जो जान की,
पांच साल में सोना कर दो, मिट्टी हिन्दुस्तान की।

दुनियां वालों को बतला दो, महिमा फिर श्रमदान की,
आलस छोड़ो, निद्रा त्यागो, घड़ी नहीं आराम की।

उठो जवानो तुमको भारत, अब मजबूत बनाना है,
गांव-गांव के बच्चे बूढ़े, सबको आज पढ़ाना है।

फिर से कर दो विश्व प्रकाशित, जगा ज्योति निज ज्ञान की,
आलस छोड़ो, निद्रा त्यागो, घड़ी नहीं आराम की।

हे भारत के वीर जवानो, निज भुज बल पहचानो,
ऊँगली पर पर्वत ठहराने वालों बल को पहचानो।

पानी में पत्थर तैराने वालों ताकत पहचानो,
शिखा खोलकर शत्रुनाश करने के प्रण को पहचानो।

दूर दीनता कर दो श्रम से यह विनती मुरलीधर की,
आलस छोड़ो, निद्रा त्यागो, घड़ी नहीं आराम की।

लोहे से सोना

लोककथा

कुं भंवरसिंह पड़िहार, कक्षा १० डी

एक राजा था। उसने यह नियम बना रखा था कि जो भी व्यक्ति चोरी करेगा उसे फासी का दंड दिया जावेगा। एक बार चार चोर किसी गाव मे चोरी करते हुए पकडे गये। सिपाही उन्हे पकड कर राजा के पास ले गये। राजा ने फासी की आज्ञा दी। फासी का दिन आया तीन चोरो को तो फासी दे दी गयी। लेकिन चौथे चोर को एक तरकीब सूझी। उसने सिपाही से कहा—"मैं एक ऐसी बूंटी जानता हूँ जिसे पीसकर यदि लोहे पर डाल दिया जाय तो लोहा सोना बन जावेगा अतः मैं चाहता हू कि मरने से पहले यह कला तुम्हें सिखा जाऊ"।

यह बात सिपाहियों से अफसरों को मालूम हुई। उन्होंने मन्त्री को बताया। मन्त्री ने राजा से कहा। राजा की आज्ञा से चोर को दरबार मे लाया गया। चोर ने राजा के सामने भी दावा किया कि वह लोहे को सोने मे बदल सकता है।

चोर की बतायी हुई बूटी जगल से मगवायी गयी। दरबार मे नगर भर का लोहा सोने मे बदलने के लिए एकत्रित किया गया। प्रतिष्ठित व्यक्तियो को बुलाया गया। चोर ने बूटी को पीसा। फिर बोला—"महाराज, बूटी का चूर्ण तैयार है। इसे डालते ही लोहे मे सोना बन जायेगा। परन्तु शर्त यह है कि वही व्यक्ति चूर्ण को लोहे पर डाले, जिसने कभी चोरी न की हो"।

राजा ने दरबार मे एकत्रित कृषको से कहा—"तुम यह चूर्ण लोहे पर डाल कर सोना बनाओ"। उन्होने उत्तर दिया "महाराज यह काम हम न कर सकेंगे क्योंकि हम प्राय एक दूसरे के खेतों मे अनाज चुरा लेते है।"

राजा ने वहा के ठेकेदारो से कहा। उन्होंने उत्तर दिया—"सरकार हम घूस देकर बड़े बड़े काम करा लेते है और चूने के स्थान पर मिट्टी भर देते है। इस लिए हम इस काम के करने के अधिकारी नही

है"। अब राजा ने उपस्थित व्यापारियों से कहा। वे बोले "यदि कम माल न तोलें तथा मिलावट न करें तो हमारा काम कैसे चले, यह चोरी ही है।"

यह सुनकर राजा ने मन्त्रियों से कहा। एक मन्त्री बोला—"मैंने बचपन में एक किताबें चुरायी थी।" दूसरा बोला "मैंने दवात चुरायी थी।" तीसरा बोला "मैंने अपनी माँ के पैसे चुराये थे।" राजा ने राज परिवारों के सदस्यों की ओर देखा। रानी बोली मैंने बचपन में अपनी सहेली का हार चुराया था।"

तब चोर ने राजा से कहा "महाराज आप तो राजा है और आपने कभी भी चोरी ही नहीं की होगी। आप ही इस चूर्ण को लोहे पर डालिए।" राजा के कांटो तो खून नहीं। राजा ने सोचते हुए कहा—"जब मैं छोटा था तब घर में पूजा के लिए लड्डू आये थे। मैंने माँ से लड्डू माँगा। उन्होंने पूजा के बाद देने को कहा। मुझे लड्डू अच्छे लगे थे। जब मां बाहर गयी तो मैंने एक लड्डू चुरा कर खा लिया।"

इन सारी बातों को सुनने पर चोर ने हाथ जोड कर राजा से कहा—"महाराज यदि जनता से लेकर आप तक सभी चोर है, तो मुझ अकेले को क्यों फांसी दी जा रही है। सभी को दंड दीजिए।"

इस बात को सुनने से राजा का हृदय पिघल गया और राजा ने सोच कर यह निष्कर्ष निकाला कि वास्तव में यह व्यक्ति बड़ा ही बुद्धिमान प्रतीत होता है जिसने अपने बुद्धि बल से अपने आप की रक्षा करली नहीं तो उन तीनों चोरों की तरह ही इस की हालत होती। अंत में राजा ने उस चोर को मुक्त कर दिया। चोर की इस बुद्धिमता पर सब प्रसन्न थे।

घबरा जाना नहीं दोस्तों, छोटी मोटी हारों से।
देश हमारा गुजर रहा है तलवारों की धारों से॥
आजादी ने आज देश से पहली कीमत माँगी है,
पहली बार देश की जनता हर हर करके जागी है।
पहली बार अहिंसा की आंखों में लाली आयी है,
पहली बार शेर भारत ने उठकर ली अंगड़ाई है।
यह तो पहली झड़प हुई है अपने पहरेदारों से,
राष्ट्र हमारा जूझ रहा है तलवारों की धारों से।
पर्वत कभी हिला करते हैं क्या बरसाती नालों से,
गरुड़ कभी भागा करते हैं डरकर बालमरालों से?
योद्धा कभी फिरा करते हैं तोप तमंचों भालों से,
सावधान रहना है हमको दुष्ट शत्रु की चालों से,
दाल गलेगी नहीं तुम्हारी कहदो यह गद्दारों से,
देश हमारा जूझ रहा है तलवारों की धारों से।

गीत

मौन-ध्यान, शिमला, कक्षा १०.३.

आज मृदु स्वर बीन की झङ्कार लाया ।
प्यार का मधुमय मधुप गुञ्जार लाया ॥
बालिका उषा हंसी ले मौन प्याली,
अधर से सुर सुन्दरी ने है लगाली,
सिहर सुमनों ने सुरभि भर प्राण ढाली,
छाई संसृति के दृगों में मदिर लाली ।

आज पिक पञ्चम में नव शृङ्गार लाया ।
प्यार का मधुमय मधुप गुञ्जार लाया ॥
आज विगलित स्नेह से पाषाण चञ्चल,
बह चले ले गान व्याकुल आज कलकल,
आज सरिता वेग से आई उमड़ कर,
सिन्धु मे मिल हृदय करने को सुशीतल,
मृत्यु बन्धन तोड़ अमृत-धार लाया ।
प्यार का मधुमय मधुप गुञ्जार लाया ॥

विजय में है कुटी—सरिता शान्त तट है,
आज तुमसी प्रेम-प्रतिमा भी निकट है,
तुम बनी मैं बना तुम, एक दोनों,
आज नभ-सा हृदय विस्तृत मुक्त पट है,
आज कवि नव काव्य नव उद्गार लाया ।
प्यार का मधुमय मधुप गुञ्जार लाया ॥

आज सब कुछ छोड़ आया हूँ अकेला,
आज सब कुछ वारने को सुखद बेला,
मोल अधरों से अधर का है चुकाना,
देखना है आज सुन्दर प्रणय मेला,
आज प्राणों का मधुर उपहार लाया ।
प्यार का मधुमय मधुप गुञ्जार लाया ॥

यहां सब प्राणी मायावी हैं !

सत्यनारायण तंवर, ९ अ

एक बार अकबर बादशाह जंगल में शिकार खेलने गया। लम्बे सफर में वह दूर चला गया था। उसने एक सूअर देखा। बादशाह अकबर ने धनुष तानकर सूअर को मारना चाहा। लेकिन सूअर अट्टहास करके जोर से हंसा। बादशाह ने देखा, तो सूअर की जगह पर एक शेर खड़ा हो गया। बादशाह अकबर ने शेर पर ही बाण चलाने का निश्चय किया। वह शेर भी वहां नहीं, बल्कि उसकी जगह एक घोड़ा खड़ा हो गया। अब राजा ने घोड़े को भी मारना चाहा, और निशाना साधा ही था कि पल भर में घोड़े ने हिरन का रूप धारण कर लिया। बादशाह ने यह संकल्प किया कि वह इस माया को भंग करके ही दम लेगा। उसने तत्काल अपने तीर से हिरन को मारना चाहा। किन्तु दूसरे ही क्षण वह क्या देखता है कि हिरन तो गायब हो गया और उसकी जगह पर एक स्त्री खड़ी हो गयी और जोर-जोर से हंसने लगी। अपने सामने स्त्री को खड़ा देखकर बादशाह भयभीत हो उठा। धनुष छोड़ कर वह स्त्री के पास गया। अकबर बादशाह को भयभीत हुआ देखकर स्त्री ने कहा—स्वस्थ राजन् स्वस्थ, इतने भयभीत क्यों हो रहे हैं? अकबर बादशाह ने कहा—बस बंद करो यह माया। स्त्री ने कहा कौन सी माया, महाराज ?" बादशाह ने कहा—यह रूप बदलने की [illegible] और कौन सी ! स्त्री जोर से हंसी और कहा : महाराज यह माया मेरे बस [illegible] से बंद नहीं होगी। यह तो सदियों से ही इस जगत में चलती आई है और चलती रहेगी। सारे प्राणी [illegible] शरीर त्यागते हैं और दूसरा ग्रहण करते हैं और तुम भी तो इसी माया के रूप हो [illegible] इसी माया [illegible] पहले थी और आगे भी रहेगी। बादशाह ने उत्तर दिया : नहीं तो। स्त्री ने [illegible] फिर किसे मारना चाहते हो आप ? बादशाह ने दृढ़ता से कहा : मैं सूअर को [illegible]। स्त्री ने पूछा तो क्या मैं सूअर हूं महाराज ? अकबर बादशाह ने कहा—नहीं [illegible]

ह नहीं हो और माया रूपी स्त्री हो । और माया ने तुम्हें स्त्री का रूप धारण किया है। स्त्री ने पूछा— अगर रूप ग्रहण करना माया है तो तुमने [illegible] ग्रहण करके छोड़ दिये हैं। तुम भी तो मायावी हो। महाराज भ्रम हटाओ। आँखे खोल कर देखो तुम इस चीज पर भूल कर रहे हो। सूअर को नहीं तुम खुद अपने आपको मारना चाह रहे हो। बादशाह ने कहा —आश्चर्य, आश्चर्य यह कैसी माया है। अंतत: हम अपने को मारते हैं। अपने को ही दुख देते हैं। राजा की वाणी मे वाणी मिलाते हुए स्त्री ने कहा। हाँ और अपने को ही प्रेम करते हैं। अपने को [illegible] सुख पहुँचाते हैं। हमीं अपने मित्र और हमी अपने शत्रु हैं। और यह सब माया है महाराज इतना कह कर स्त्री गायब हो गयी।

ताशकंद घोषणा का महत्व

ताशकंद घोषणा से कश्मीर के बारे मे हमारी स्थिति पर क्या कोई असर पड़ता है ?

जैसा कि घोषणा के अनुच्छेद '१' मे स्पष्ट है दोनो ही पक्ष अपनी स्थिति पर कायम है। अत कश्मीर के बारे मे हमारी स्थिति यही है—कि कश्मीर भारत का एक अविभाज्य अंग है और यह कि जम्मू व कश्मीर पर भारत की प्रभुसत्ता के बारे मे कोई बातचीत नही की जा सकती।

ताशकंद घोषणा से विश्व के प्रमुख देशों में क्या प्रतिक्रिया हुई है ?

इस घोषणा का, चीन को छोड़ कर, दुनिया के सभी देशो ने स्वागत किया है और इसे एक महान राजनैतिक सफलता तथा शान्ति की दिशा मे एक बड़ा कदम बताया है। दुनिया के सभी देशो मे प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री की बुद्धिमत्ता और शांति की उनकी अभिलाषा की प्रशंसा की गई है।

यहां सब प्राणी मायावी हैं !

सत्यनारायण तंवर, ९ अ

एक बार अकबर बादशाह जंगल में शिकार खेलने गया। सफर में वह दूर चला गया था। उसने एक सूअर देखा। बादशाह अकबर ने धनुष तानकर सूअर को मारना चाहा। लेकिन सूअर अट्टहास करके जोर से हंसा। बादशाह ने देखा, तो सूअर की जगह पर एक शेर खड़ा हो गया। बादशाह अकबर ने शेर पर ही बाण चलाने का निश्चय किया। वह शेर भी वहां नहीं, वरन् उसकी जगह एक घोड़ा खड़ा हो गया। अब राजा ने घोड़े को भी मारना चाहा, और निशाना साधा ही था कि पल भर में घोड़े ने हिरन का रूप धारण कर लिया। बादशाह ने यह संकल्प किया कि वह इस माया को भंग करके ही दम लेगा। उसने तत्काल अपने तीर से हिरन को मारना चाहा। किन्तु दूसरे ही क्षण वह क्या देखता है कि हिरन तो गायब हो गया और उसकी जगह पर एक स्त्री खड़ी हो गयी और जोर-जोर से हंसने लगी। अपने सामने स्त्री को खड़ा देखकर बादशाह भयभीत हो उठा। धनुष छोड़ कर वह स्त्री के पास गया। अकबर बादशाह को भयभीत हुआ देखकर स्त्री ने कहा—स्वस्थ राजन् स्वस्थ, इतने भयभीत क्यों हो रहे हैं? अकबर बादशाह ने कहा—बस बंद करो यह माया। स्त्री ने कहा कौन सी माया, महाराज ?" बादशाह ने कहा—यह रूप बदलने की माया, और कौन सी! स्त्री जोर से हंसी और कहा : महाराज यह माया मेरे बंद करने से कैसे बंद होगी। यह तो कभी से ही इस जगत में चलती आई है और चलती रहेगी। रा... या जीव एक शरीर त्यागते हैं और दूसरा ग्रहण करते हैं और तुम भी तो इसी ... क्या यही काया तुम्हारी पहले थी और आगे भी रहेगी। बादशाह ने उत्तर ... मधुरता से कहा तो फिर किसे मारना चाहते हो आप? बादशाह ... मारना चाहता हूं। स्त्री ने पूछा तो क्या मैं सूअर हूं महाराज ?

वियतनाम युद्ध में कितना व्यय होता है

ओम प्रकाश यादव, कक्षा ११ 'द'

कई दृष्टियों से वियतनाम युद्ध इतिहास में अपने ढंग का एक भयानक युद्ध सिद्ध होगा। वियतनाम में किसी देश की सेनायें आमने सामने नहीं लड़ रही हैं यह प्रकट में केवल एक सैनिक कार्यवाही है जो दक्षिण वियतनाम में छापामार वियतकांगों के विरुद्ध वहां की सरकार और अमेरिका के संयुक्त प्रयत्नों का परिणाम है। नवीनतम आंकड़ों के अनुसार इन वियतकांगों की संख्या ३ लाख से ऊपर बताई जाती है।

वियतनाम युद्ध वास्तव में युद्ध नहीं है, फिर भी २० वर्षों से लड़ा जा रहा है। संसार का सबसे बड़ा युद्ध द्वितीय महायुद्ध था जो ८ वर्ष तक लड़ा गया था, और जिसमें ३॥ करोड़ से अधिक व्यक्ति मरे थे। इस युद्ध का क्षेत्र सीमित होने के कारण यद्यपि जन शक्ति की हानि अभी तक असाधारण नहीं है। वियतनाम युद्ध का प्रारंभिक नेतृत्व फ्रांस के हाथ में था और आजकल १९५० से अमेरिका कर रहा है। फिर भी व्यय की दृष्टि से यह नये मान-दण्ड स्थापित करने वाला सिद्ध हुआ है।

१९५० से १९५४ तक के ४ वर्षों में इस युद्ध पर अमेरिका का २६ अरब डालर खर्च हुआ था। १९५५ से १९६४ के १० वर्षों में ४० अरब डालर व्यय रहा। १९६५ से अमेरिका ने युद्ध की गति तीव्र कर दी और इसके साथ ही व्यय भी एक दम बढ़ गया, अर्थात् अकेला अमेरिका इन वर्षों में १५८ अरब डालर खर्च कर चुका है। १९६६ के प्रस्तुत वर्ष में इस कार्यवाही में और भी तीव्रता आने के फलस्वरूप वर्तमान व्यय ३० अरब डालर प्रतिमास होने का अनुमान है।

वियतनाम में केवल अमेरिका ने जितना व्यय किया है उतने में हमारी [illegible] पंचवर्षीय [illegible] दोहराई जा सकती है, लेकिन यह व्यय भी [illegible] पर्याप्त नहीं हो रहा है।

यह [illegible] है कि अमरीका ने [illegible] वियतनाम, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] है। (१) [illegible] ४० प्रतिशत है। (२) [illegible] [illegible] [illegible] है। (३) केवल एक [illegible] में ४० से ५० हजार टन [illegible] के ५० कारखानों [illegible] है।

लेकिन युद्ध के परिणाम देखते हुए [illegible] नहीं हो रहा है। [illegible] है कि प्रत्येक वियतनाम [illegible] है। वियतनाम में तीन लाख सैनिक मौजूद हैं।

इसके अलावा दक्षिण कोरिया से [illegible] लगभग ५ लाख [illegible] हैं। इसके अलावा ३० हजार [illegible] फिलीपिन, [illegible] सैनिकों की मदद के लिये वियतनाम की भूमि पर मौजूद है।

अमरीका की कुल सैनिक शक्ति का लगभग एक चौथाई से एक तिहाई भाग अब वियतनाम में मौजूद है। अमरीका के १५ हजार वायुयानों में ४५०० वियतनाम की धरती पर हैं। उनमें करीब १६०० विमान अब तक नष्ट हुए हैं। अमरीका के [illegible] जेट विमानों में एक चौथाई तथा १३०० हेलीकॉप्टर वहां मौजूद हैं। यह संख्या विश्व की अब तक की लड़ाई में चौंका देने वाला रिकार्ड है। ८६० युद्ध पोतों में से १४५ वहां मौजूद हैं। वियतनाम की अमरीकी सेनाएं २००० टैंक, ७५०० उन्नत तोपें, उन्नत प्रक्षेपास्त्र, राडार, बख्तर-बन्द गाड़ियां, व अन्य युद्ध सामग्री से सुसज्जित हैं।

सौंदर्य : एक परिभाषा

उत्साह-मूर्ति विल ड्युरांट को अलमस्त बनाने के लिए किसी मादक द्रव्य की आवश्यकता नहीं थी, जीवन ही काफी था। एक बार उन्होंने मुझसे पूछा था—"सौंदर्य की आपकी कल्पना क्या है?" मैंने कहा—"मेरे विचार में सौंदर्य मृत्यु और रम्यता की सर्वव्यापकता है; सौंदर्य मुस्काती हुई उदासी है, जो हमें प्रकृति में और सब पदार्थों में गोचर होती है; सौंदर्य एक रहस्यमय तादात्मय है, जिसे कवि अनुभव करते हैं। कूड़ेदान पर पड़ी किरण-धारा, चहबच्चे में पड़ा गुलाब—कुछ भी उसकी अभिव्यक्ति हो सकती हैं। चित्रकार एल ग्रीको ने सूली पर लटके हुए प्रभु ईसा में उसका दर्शन किया था।"

—चार्ली चैपलिन

भय

महिपाल सिंह शेखावत, कक्षा १० ब

एक क्षण आप विचार कर देखें कि यदि संसार में भय नाम की कोई वस्तु नहीं होती तो क्या हो सकता था ? यदि अब भी भय को हटा दिया जाये तो संसार का काम एक क्षण भी नहीं चल सकता। जिस प्रकार कि भौतिक विज्ञान से इकाई को हटा देने पर भौतिक विज्ञान में कुछ भी नहीं हो सकता अर्थात् भौतिक विज्ञान से इकाई को हटा देना, भौतिक विज्ञान को ही नष्ट कर देना है। क्योंकि भौतिक विज्ञान पौधे की तो इकाई ही जड़ है। उसी प्रकार मनुष्य के मस्तिष्क से स्मरण-शक्ति को हटा देने से हमारा भी काम नहीं चल सकता। क्योंकि हम अपने घर से बाहर निकलें, तो आगे जाते ही मार्ग भूल जायेंगे। फिर किसी भी स्थान पर फिरते फिरते किसी दूसरे के घर को अपना घर ही समझकर अन्दर चले जाएंगे। आगे जो हालत होगी, उसकी तो आप ही कल्पना कर सकते हैं। इसी प्रकार मनुष्य से भय को हटा देने पर मनुष्य मनमानी करेगा। वह चाहे जिसको लूटेगा, चाहे जिसे मारेगा, दुष्टता के भयंकर कार्य करेगा, तथा यहां तक वह चाहे जिसको मार भी डालेगा। इस प्रकार तो इससे थोड़ी ही हानि होगी। पर यदि राष्ट्रों को भी भय न रहेगा तो अमेरिका जैसे देश सोचेंगे कि हमको किसी का भय नहीं है, तो वे चाहे जहां हाइड्रोजन तथा परमाणु डाल देंगे, जिससे सारा संसार ही नष्ट हो जायेगा। अर्थात् भय को हटा देने का मतलब होगा, तहस-नहस तथा लूटमार मचाना। अतः हम देखते हैं कि भय को हटा देने पर एक विश्व-महायुद्ध होने से भी अधिक प्रलय मच जायेगी।

सभी ने छोटी से लेकर बड़ी बड़ी चोरियां होते देखी या सुनी होंगी। बड़े बड़े डाकुओं का किसी शहर या गांव को लूटना, धनवानों के यहां धन को लूट लेना, ऐसे उनके अनेक कारनामों को पढ़ा या सुना होगा। यदि उनको किसी प्रकार का भय न रहे, अर्थात् मनमानी करने के लिए पूर्ण स्वतन्त्रता दे दी जाय, तो वे बहुत से शहरों व गांवों को नष्ट कर डालेंगे। यदि आपको भी कक्षा में भय मुक्त कर दिया जाये तो आप भी अपने सहपाठियों की पुस्तकों व अन्य वस्तुओं के

[illegible]

[illegible]

[illegible]

तुलसीदास ने भी रामायण में लिखा है—भय बिन होय न प्रीत । यह प्रसंग उस समय का है जब रामचन्द्रजी लंका जाने के लिए समुद्र से पार होने के लिए उससे विनती करते रहे कि हमें पार होने के लिए रास्ता दे । इसके लिए उन्होंने उसकी बहुत मनुहारें कीं पर समुद्र नहीं माना । तब भगवान ने क्रोध में आकर समुद्र को शोषित करने की सोची । जिससे समुद्र भयभीत हुआ तथा हाथ जोड़कर भगवान से माफी मांगने लगा और पार होने के लिए समुद्र पर पुल बांधने की युक्ति बताकर चला गया ।

अत. जो भी शक्तियां संसार में भय उत्पन्न कर सकती हैं उन्हें मजबूत बनाना चाहिए। पुलिस के मजबूत होने से डाकू व चोर, चोरियां बंद कर देंगे । देश की सेना के मजबूत होने से दूसरे राष्ट्र उस पर हमला करने का साहस कभी न करेंगे। यदि सेना में दूसरों के प्रति भय उत्पन्न करने की शक्ति ही न होगी तो दूसरे देश उसे शीघ्र ही लूटकर अपने अधिकार में ले लेंगे ।

संयुक्त राष्ट्र संघ में कुछ भय उत्पन्न करने की शक्ति है, जिससे वह कई जगह शान्ति स्थापित करने में सफल हुआ । यदि उसमें पूर्ण रूप से भय उत्पन्न करने की शक्ति हो तो वह सब जगह शान्ति स्थापित करने में सफल होगा । इसके लिये मैं यह नहीं कहता कि संयुक्त राष्ट्र संघ में सेना रखी जाय तथा संसार में भय उत्पन्न किया जाय । पर उसे इस प्रकार बदल दिया जाये कि वह बिना सेना रखे ही भय उत्पन्न कर सारे संसार में शान्ति स्थापित कर सके ।

परमाणु बम्ब में भी भय उत्पन्न करने की बहुत बडी शक्ति है । पर इसके प्रति मेरा यही सुझाव है कि इसका उपयोग यान्त्रिक शक्ति उत्पन्न करने में होना चाहिये । परमाणु बम्ब का यदि यान्त्रिक शक्ति उत्पन्न करने में उपयोग होगा तो निश्चय ही संसार में शान्ति स्थापित हो सकेगी ।

भारतीय सैनिक की अभिलाषा

अक्षय कुमार त्याग, ६ बी

चाह नहीं मैं हार के आऊं,
चाह नहीं मैं पीठ दिखाऊं,
लेकिन मेरी है अभिलाषा,
मर जाऊं या मार के आऊं,
चाह नहीं मैं हार के आऊं।

●

भारत मां का फर्ज है मुझ पर,
एक जरा-सा फर्ज है मुझ पर,
लेकिन मेरी है अभिलाषा,
तन-मन-धन दे फर्ज निभाऊं,
मर जाऊं या मार के आऊं॥

●

जब तक मां का प्यार रहेगा,
जीवन सफल-साकार रहेगा,
लेलिन मेरी हैं अभिलाषा,
मां के खातिर मैं बलि जाऊं,
मर जाऊं या मार के आऊं।

●

जननी तुमने जन्म दिया है,
पाला-पोसा बड़ा किया है,
यह मेरी अंतिम अभिलाषा,
तेरी मिट्टी मे मिल जाऊं,
मर जाऊं या मार के आऊं॥

ये पवित्र राखी के धागे

धीरेन्द्र कुमार 'नूतन,' 11 ब

[illegible]
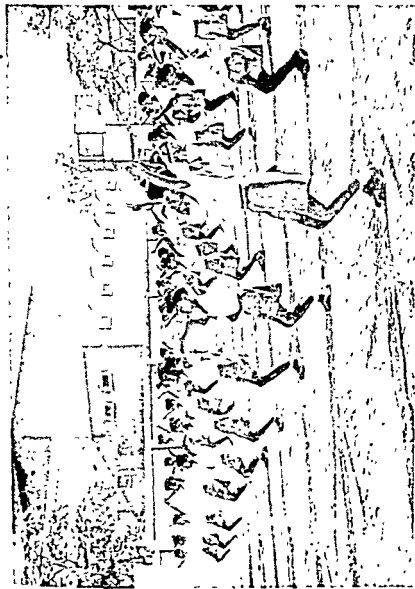
छात्री द्वारा व्यायाम प्रदर्शन का एक दृश्य

शिक्षा मन्त्री के आगमन पर छात्रों द्वारा राष्ट्र-प्रेम से ओत-प्रोत गीतों का गायन

लड़ाई खत्म होने पर मेजर राजेश और मेजर विमल दोनों गले मिले। विमल ने कहा मैं कितना भाग्यशाली हूं जो मैंने तुम जैसा दोस्त पाया। यदि समय पर न आते तो शायद मेरी लाश ही तुम्हें मिलती।" राजेश ने कहा "ऐसे नही कहो विमल, अभी अपना कर्तव्य पूरा नही हुआ है, और तुम पहले से मरने की सोचने लगे। स्वार्थी! चलो खाने का समय हो गया केन्टीन मे चले।" उसने बात बदलते हुए कहा। "चलो"—विमल ने भी कहा।

केन्टीन मे बैठकर राजेश ने कहा "आज राखी है ना"। "हां है तो सही" विमल ने कहा। राजेश न जाने किन पुरानी यादो मे खो गया। विमल ने पूछा "नीना की याद आ रही है क्या राजेश।"

"हां विमल मुझे उसी देवी की याद आ रही है। जानते हो उसने पिछली राखी के वक्त क्या कहा था। विमल ने उत्सुक हो पूछा—"क्या कहा था?"

उसने कहा था "मेरे भैया मैं तुम्हें राखी बाध रही हूं, सिर्फ मेरी रक्षा के लिये नही, वरन् सारी भारतीय बहनो की रक्षा के लिये। आज हमारे गर्वोन्नत मस्तक पर लाल चीन की काली छाया पड रही है। जाओ! और अपनी समस्त भारतीय बहनो की रक्षा करो। ये राखी के पीले धागे सदा अपने साथ रखना, ताकि तुम अपने कर्तव्य-पथ से विमुख न होओ।" कहते-कहते राजेश का गला भर्रा गया। उसकी आखो मे आसू छलछला आये। विमल से भी उसकी यह हालत नही देखी गयी। उसकी आखों में भी आंसू छलक आये। परन्तु उसने अपने आपको संयत कर कहा—"राजेश तेरी आखो मे आसू! एक सैनिक अफसर की आखो मे आसू। तू अपना कर्तव्य भूल गया क्या राजेश कि समस्त भारतीय नारियां तेरी बहनें हैं और तू सिर्फ नीना के लिये आसू बहा रहा है, फिर उन करोड़ो भारतीय बहनो के लिये कौन आसू बहायेगा?"

नही विमल ये आसू नीना की याद के आसू नहीं उसकी महानता के आसू हैं। यदि समस्त भारतीय बहिनें अपने भाई को यही गुरुमंत्र बतायें तो फिर कौन सा वह दुश्मन है जो हमारे इस पावन देश की पवित्र मिट्टी को अपने पादो तले रौंदने का दुस्साहस करे।" राजेश आवेश मे आकर कहता है, और अपनी जेब मे से वे राखी के पवित्र धागे निकाल अश्रुपूर्ण आखो से उन्हे देखता है। इतने में खाना आ जाता है। खाना खा चुकने के बाद विमल वापस अपनी चौकी पर चला जाता है और राजेश अपनी चौकी पर।

दूसरे दिन सवेरे पांच भी नही बजे थे कि अचानक चीनियो ने राजेश वाली चौकी पर तीन सौ सैनिको सहित हमला बोल दिया। राजेश इस आकस्मिक हमले से बौखलाया नहीं। उसने अपने सैनिकों को आवश्यक निर्देश दे खाईयो मे भेज दिया। उसने अपने एक सैनिक से कहा "जल्द हैडक्वार्टर से सम्बन्ध करो।"

'हैलो' ट्रांसमीटर से आवाज आयी। राजेश ने कहा "हैलो"

"हैडक्वार्टर"

"हैलो! इधर चीनियों ने हमला बोल दिया है"

'नम्बर"

"तीन सौ"

मलेरिया के आक्रमण की सम्भावना भी होती है। नैट मच्छर के समान हल्केपन और तेज उड़ान करने के कारण ही हमारे विमान का नाम नैट पड़ा।

हमारे नैट विमान का वजन एफ-८६ सैबर जैट विमान से लगभग आधा है। एफ-८६ सैबर जैट विमान का भार लगभग ७,९०० किलोग्राम होता है। जब कि हमारे नैट विमान का कुल भार ३,००० से ४००० किलोग्राम तक ही है। नैट की लम्बाई ९ मीटर है और चौड़ाई ६-७५ मीटर। नैट विमान की अधिकतम उड़ने की गति लगभग ०.९८ मैक अर्थात ११७५ किलोमीटर प्रति घन्टा है और यह १,०६० मीटर की ऊँचाई तक उड़ सकता है।

क्या आप जानते हैं ?

मनोहर, कक्षा ११ ब

१. इंगलैण्ड में मानचेस्टर यूनिवर्सिटी स्थित रेडियो दूरबीन, जिस का व्यास २५० फीट और ऊंचाई १८० फीट है और जिस की लगभग १,१२,५०,००० रुपए की लागत आंकी गई है, विश्व की सब से बड़ी दूरबीन है।

२. दक्षिणी अफ्रीका स्थित प्रिटोरिया की प्रीमियर खान से कैप्टन एम० एफ० वेल्स ने ३,१०६ मीट्रिक कैरेट यानि लगभग आधा किलो भार का हीरा निकाला जो सबसे बड़ा हीरा था।

३. निजामी पार्क, बम्बई, में १४ अप्रैल १९५५ को एक बजे दिन से १९ अप्रैल १९५५ को बजे शाम तक यानि लगातार १२५ घन्टे तक साइकिल चला कर २२ वर्षीय आनन्दराम हनुमान [illegible] ने नया रिकार्ड कायम किया।

४. विश्व की सब से भारी पुस्तक रूस में है, जिसका वजन ४०,३२० टन है।

५. उड़ीसा की महानदी नदी पर निर्मित हीराकुड बांध विश्व का सब से लम्बा बांध है।

६. सन् १९५५ की ओलंपिक प्रतियोगिता में हैवी वेट उठाने वाले ने ६,००० पौंड का भार उठा कर नया रिकार्ड [illegible] किया।

७. विश्व की सब से बड़ी नदी मिस्र की नील नदी है जिस की लम्बाई ४,१४५ मील है।

८. [illegible] अमरीकी सेना के पास है जो ८० मील दूर [illegible] है।

भारतीय वायु सेना

भंवर नरपतसिंह शेखावत, १० 'स' (विज्ञान)

संसार के प्रत्येक राष्ट्र के पास अपनी स्वाधीनता की रक्षा करने व आन्तरिक अशान्ति और विद्रोह को दबाने के लिए सेना होती है। सेना रखने की प्रथा बहुत प्राचीन है। जब तक वैमनस्य, अविश्वास तथा प्रभुता के लिये संघर्ष जारी रहेगा तब तक सेना रखने की आवश्यकता बनी रहेगी। यदि कभी यू० एन० ओ० के उद्देश्य पूरे हुए तो शायद सेना रखने का महत्व कम हो जायेगा, परन्तु वर्तमान समय को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक राष्ट्र अपने को सर्वाधिक शक्तिशाली व अपनी सेना को अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित करने की चेष्टा करता है।

हमारे देश में स्थल, जल और वायु सेना का निर्माण हुआ। स्थल सैन्य व्यवस्था इस देश की प्रमुख शक्ति है। किन्तु आज के यांत्रिक युग में जल सेना व वायु सेना का कहीं अधिक महत्व है। विज्ञान की उन्नति ने समुद्रों व नभ के शान्त वातावरण में भी हलचल मचादी। और मानव ने समुद्रों की छाती चीर कर उसमें अपने विशाल जलयान एवं शून्य में वायुयान चलाये।

आज के युग में किसी भी देश की पूरी तरह से रक्षा करने और बाह्य आक्रमणों से मोर्चा लेने के लिये जरूरी है कि देश की स्थल, जल व वायु सैन्य व्यवस्थायें सुदृढ़ तथा आधुनिक शस्त्रास्त्रों से सम्पन्न हों। जल सेना समुद्रों द्वारा होने वाले आक्रमणों से रक्षा करने के साथ-साथ समुद्री व्यापार को भी सुदृढ़ बनाती है।

इसी प्रकार वायु सेना का प्रमुख उद्देश्य देश की हवाई आक्रमणों से रक्षा करना है। इसके साथ ही साथ संसार के अन्य देशों के बीच हर प्रकार की व्यापार-व्यवस्था बनाये रखना आज के युग में बहुत कुछ इसी वायु-यातायात पर निर्भर है।

यद्यपि हमारा देश भारतवर्ष सर्वदा से शान्तिप्रेमी रहा है तो भी अन्य की परिस्थितियों को देखते हुए देश की सीमा-रक्षा किये बिना शान्ति का स्वप्न देखना किसी की बुद्धिमानी नहीं है। विशेषकर अब जब

देश के ऊपर [illegible] किसी भी समय आक्रमण कर सकता है [illegible] देश की सीमा व स्वतन्त्रता की रक्षा करना [illegible] अधिक से अधिक प्रदान करते रहिये।

[illegible] है कि हमारी सेना की [illegible] भी सीमा पर [illegible] होते दिखाई पड़ती है। आज यह सिद्ध हो चुका है कि हम अपनी सभी सुख-सुविधाओं को इस देश की सीमा रक्षा हेतु [illegible] में आहुति दे सकते हैं।

भारत में वायु सेना स्थापना जो एक समय छोटे से सीमित रूप में प्रारम्भ हुई थी आज देश की प्रमुख व महत्वपूर्ण सेना बन गयी है। आज हमारे पास [illegible], हन्टर, [illegible] मिस्टीयर, एम० एम० [illegible], वैम्पायर [illegible] आदि विमान प्रमुख रूप में हैं। वायुसैनिकों को शिक्षा देने के लिये [illegible] नं० १ जी० टी० एस०, [illegible] ३, ४ व ६ [illegible] बंगलौर में ही है। [illegible] इलेक्ट्रीशियन, एम० टी० [illegible] आदि की शिक्षा दी जाती है। नं० २ जी० टी० एस० कानपुर में है [illegible] में नं० ४ जी० टी० एस० है। इन [illegible] में शिक्षा के साथ साथ सामान्य शिक्षा भी दी जाती है। वायुयान उड़ाने की ट्रेनिंग जोधपुर और इलाहाबाद में दी जाती है। हमारी वायुसेना के प्रमुख व सबसे ऊँचे आफिसर एयर मार्शल अर्जुन सिंह हैं। हमें आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में यह अनवरत उन्नति के पथ पर अग्रसर होती रहेगी।

हँसना मना है!

संकलनकर्ता—रणजीत सिंह, ७ स

१— एक मौलवी साहब अफीम खाकर सो रहे थे कि एकाएक गिर पड़े। नौकर से पूछा—देख रे रसोई में क्या गिर पड़ा। नौकर ने जवाब दिया—हुजूर आप ही गिर पड़े। मौलवी साहब बोले—हाय रे पसलियां टूट गईं।

२— एक अध्यापक ने पूछा कि शादी में अधिक कपड़े क्यों पहिनते हैं? लड़के ने उत्तर दिया कि अगर आप मारो तो लगे नहीं।

३— एक अंग्रेज एक कुएं पर गया। अचानक वह गिर गया। एक हिन्दू आदमी ने उसे निकाल दिया। तब अंग्रेज ने कहा थेंक्यू। हिन्दू ने समझा कि यह कहता है वापिस फेंक दे। उसने टांग पकड़ कुएं में वापिस फेंक दिया!

४— एक माली टोकरी में गोभी ले जा रहा था। वह चलता जाता था और इधर उधर देख रहा था। उस को टक्कर एक अंग्रेज से हो गई। अंग्रेज ने कहा—डैम फूल। माली ने कहा—साहब ये डैमफूल नहीं हैं ये तो गोभी के फूल हैं।

परिश्रम ही सफलता की कुंजी है

विनोद कुमार जैन, कक्षा १० 'ब'

संसार में प्रत्येक मनुष्य सुख पाना चाहता है। इसके लिए लोग भांति भांति के प्रयत्न करते हैं। कोई धन संग्रह की इच्छा रखता है, कोई ऊंची पदवी पाना चाहता है। कुछ लोग ऐसे हैं जो धन की इच्छा न रखकर केवल यश ही की उपार्जना चाहते हैं। कोई चाहता है कि जादू का डण्डा हाथ में आ जाय तो मनमानी सैर करें, कभी श्रीनगर की सुरम्य पर्वत-घाटियों में घूमें, कभी पेरिस के रंग-महलों का आनन्द लें। सब की अपनी अपनी कामनायें हैं। यह जादू के डंडे से सम्भव नहीं है। इन सभी कामनाओं की पूर्ति के लिये एक ही कुंजी है उसका नाम है 'उद्योग'। पुरुषार्थ या परिश्रम ही मनुष्य के सभी स्वप्नों को सत्य करता है।

परिश्रम क्या नहीं कर सकता ? वह रेतीले मैदानों को भी हरी भरी उपजाऊ भूमि बना सकता है। कोयले को उसी ने हीरा बनाया। वही बड़े-बड़े साम्राज्य स्थापित करने की शक्ति देता है, निर्धन को धनी, रंक को राव और मूर्ख को विद्वान बनाने की सामर्थ्य उसी में है। परिश्रम करने वाले व्यक्ति को बड़े-बड़े विघ्न, उसके साहस को डिगा नहीं सकते। उसे किसी के आश्रय की आवश्यकता नहीं रहती। वह अपने पैरों पर खड़ा होकर जीवन-प्रासाद का निर्माण करता है। उसका साहस ही इस महल की नींव बनता है।

आज तक बिना पुरुषार्थ और परिश्रम किये कौन उन्नति का पद पा सका है। कुछ लोग कहा करते हैं कि प्रयत्न करने से क्या बनता है ? ईश्वर जब देता है, स्वयं छप्पर फाड़ कर देता है। वे लोग इस दोहे का बखान करते हैं :—

अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।
दास मलूका कह गये, सब के दाता राम॥

पर यह भी निश्चित है कि इस विश्वास पर बैठे रहने से ही सब कुछ नहीं बनता है। नीतिकारों ने कहा है कि उद्योग, साहस, धैर्य, दृढ़ संकल्प और विश्वास ये पांच बातें जहां होती हैं, भाग्य भी वहीं सहायक होता है।

धन सम्पत्ति तो दूर की बात है, बिना परिश्रम हम जीवन-चर्या भी नहीं चला सकते। पेट भरने के लिए कितना झंझट उठाना पड़ता है। बाजार से सामान लाओ, आटा पिसवाओ, पुनः पकाने की तैयारी करो। पकने के बाद तब कहीं जाकर भोजन मिलता है। यदि उस भोजन के लिए हम स्वयं परिश्रम न करें तो हमारे लिए कोई दूसरा करेगा पर करेगा जरूर।

परिश्रम करने में शरीर को कष्ट उठाना पड़ता है। लोग इससे बचना चाहते हैं। अंग्रेजी की कहावत है — कष्ट उठाये बिना कुछ नहीं मिलता। आलसी लोग कष्ट उठाने से बचने के लिए भाग्य का सहारा लेते हैं। पर भाग्य भी क्या करे जहां भाग-दौड़ न हो। यदि हम चाहें कि रोटी स्वयं पक कर मुंह में घुस जाय तो यह सर्वथा असम्भव है।

चटपटे मसाले

नरपतसिंह राजपुरोहित, कक्षा १० ब

(१) जज — (रमेश से) तुमने रामू के एक बेंत लगाई, अतः तुम्हें पांच रुपये फाइन देना होगा।

(रमेश रामू के एक बेंत और लगाकर जज के सामने दस रुपये रख देता है।)

जज — (रमेश से) तुमने इसके दूसरी बेंत क्यों लगाई?

रमेश — मेरे पास पांच रुपये खुले नहीं हैं, दस का नोट है।

(२) पिता — (कुमार से) इतनी देर तुम कहां गये थे?

कुमार — मैच (क्रिकेट) देखने।

पिता — [illegible] ?

कुमार — [illegible] ने मारे थे।

पिता — फिर?

कुमार — [illegible] ने नहीं दिए।

पिता — फिर?

कुमार — [illegible]

(३) मां — (कुमार से) [illegible] — [illegible] सो जा, [illegible] रोशनी क्यों [illegible] है।

कुमार — [illegible]

मां — [illegible] ?

कुमार — [illegible] है।

वे माता-पिता अपनी सन्तानों के शत्रु होते हैं, जिन्होंने उनको विद्या-अध्ययन नहीं कराया।

(चाणक्य नीति)

विद्या अध्ययन कराने में जो माता-पिता व आचार्य शिष्यों का ताड़न करते हैं वे मानों अपने शिष्य को अपने हाथों से अमृत पिला रहे हैं।

(महाभारत)

जिनके शरीर में वीर्य नहीं होता वह नपुंसक, महा-कुलक्षणी और जिसको प्रमेह रोग होता है वह दुर्बल, निस्तेज, निर्बुद्धि, उत्साह, धैर्य, बल, पराक्रम आदि गुणों से रहित होकर नष्ट हो जाता है।

(दयानन्द सरस्वती)

ईश्वर मानव को बनाने वाला है। अतः वह स्वयं मानव नहीं हो सकता।

विज्ञान मनुष्य के सत्य को नहीं पा सकता क्योंकि वह ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं करता। हमें समझना है कि ईश्वर कोई दिखाई देने वाली वस्तु नहीं, वह हम से बलवान कोई मानव नहीं, तो फिर ! ईश्वर, हमारी आत्मा के वे भाव है जो हमें सद् मार्ग पर ले जाते हैं।

सह शिक्षा से समाज का नैतिक पतन होगा। मित्र बनाओ परख कर के, परन्तु फिर भी विश्वास की हद बना लेनी चाहिए।

सीमा पर खेत गये वीरों की यदि आत्माओं को हम शान्ति नहीं दे सकें तो हम नीच हैं।

हम समस्त हिन्दुस्तानी स्वार्थी हैं, भारत मा की कपूत सन्तान हैं क्योंकि आज हम वर्तमान से सीखते हैं व भूतकाल पर व्यर्थ घमंड करते है।

(शिवरतन कश्यप 'छात्र')

प्रत्येक वस्तु, विचार आदि, अपनी सीमा रखते हैं। चाहे वे कैसे भी हों। उस सीमा का उल्लंघन कष्टदायक होता है।

(महात्मा कनफ्यूशियस)

खून बहा कर प्राप्त की गई स्वतन्त्रता प्यारी होती है बनिस्बत भीख मांग कर प्राप्त की गई स्वतन्त्रता से।

(नेताजी सुभाष चन्द्र बोस)

विद्यार्थी जीवन की सफलता का रहस्य

महेश कुमार स्वामी, कक्षा ७ ब

विद्यार्थी जीवन की सफलता को सही रूप से जानने से पहले हमें इसके उपयोगी पक्ष को ध्यान से समझने की जरूरत है। इतिहास के छात्र इस बात को भली-भांति जान सकते हैं कि हमारे जीवन विकास में आश्रम-प्रणाली का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। संयम और ब्रह्मचर्य विद्यार्थी जीवन की सफलता की सर्वप्रथम सीढ़ी रही हैं। इस जीवन क्रम के विकास में सादगी का स्थान भी किसी से कम नहीं आंका जा सकता। गुरुकुल में रहकर आचार्य के आशीर्वाद से विद्यार्थी का शिक्षा-क्रम तभी आरम्भ होता था, जबकि वह सेवा और संयम की कसौटी पर खरा उतरता था। स्वस्थ शरीर का निर्माण विद्यार्थी जीवन की सफलता का मूलाधार है, यह भी उस समय की आश्रम-व्यवस्था का महत्वपूर्ण नियम था। प्राकृतिक शोभा के लगातार निरीक्षण से भी उन्हें अपनी कल्पना-शक्ति को बढ़ाने का सुन्दर अवसर मिलता था। प्रखर बुद्धि छात्र ऐसी परिस्थिति का सम्पूर्ण रूप से लाभ उठाकर शास्त्रों का मनन कर सकने में सफल हो पाते थे।

विद्यार्थी जीवन की उपयोगिता पहले की तरह बनी रहे इसके लिए जरूरी है कि हम कुछ महत्वपूर्ण बातों को अपने दैनिक जीवन का प्रमुख अङ्ग ही नहीं मान लें बल्कि उन्हें कार्य रूप देने में भी जुट जायें। यह ठीक है कि आज का छात्र बदली हुई परिस्थितियों में रहते हुए पहले की तरह संयम और सादगी आसानी से निभा नहीं सकता फिर भी ऊंचा लक्ष्य सामने रखने से काफी अंशों में हम इन गुणों को अपने जीवन के सांचे में ढाल सकते हैं। सर्व प्रथम विद्यार्थी जीवन की [illegible] का रहस्य यही है कि वह समय की पाबन्दी का निर्वाह करने की कुशलता अपने [illegible] और [illegible] का बटवारा इस तरह से करे कि प्रतिदिन का काम आसानी से हो जाये। "काल करे सो आज कर, आज

करे सो अब'' की उक्ति को जीवन का अङ्ग बना ले तो सफलता प्राप्त करना उनके लिए आसान बन जाय ।

छात्रों के लिए यह जरूरी है कि जो कुछ पढ़ें उसका भली भांति मनन भी करें जिससे विषय-सामग्री समझने की कठिनाई भी सरलता से हल हो सकती है । आपस मे विचारों का आदान-प्रदान करने से भी इस विचार को बल मिलता है । प्राय: छात्र आलस्य के शिकार बनकर नकल की आदत को अपने जीवन का अङ्ग बना लेते हैं, जिससे उनकी बौद्धिक शक्ति ठीक ढंग से पनप नही पाती । खेल-कूद भी शारीरिक शक्ति के विकास मे बड़े सहायक हैं, यह भी ध्यान रखने की मुख्य बात है । आम तौर से अनेक छात्र पढ़ने मे जहा होशियार होते हैं, वहा शरीर से लाचार होते हैं । शारीरिक लाचारी के कारण वे जो कुछ सीखते हैं, उसे भी भूल जाते हैं । स्मरण-शक्ति को बढ़ाने के लिए यह जरूरी है कि हम सुबह खुली हवा मे घूमने जावें और सायंकाल अपनी रुचि के किसी खेल मे भाग लें। इस तरह के छात्र जहा शरीर के धनी बनते हैं, वहा योग्य विद्वान बनकर दूसरो को अपने बुद्धिबल से लाभ पहुचाते है ।

छात्रों को चाहिए कि देश की निरक्षरता को दूर भगाने के काम में बराबर साझीदार बनें, इसके लिए वे मजदूर वर्ग मे जाकर उन्हे साक्षर बनायें । छात्र अज्ञान का भूत भगाने के उपयोगी कार्य की पूर्ति में राष्ट्र हित की भावना से यदि काम करें तो देश की सारी उलझनें सुलझ जायें ।

वे जिस शाला मे पढ़ते हैं, उसकी सफाई में भी हाथ बटा सकते हैं । साफ-सुथरे स्थान पर बैठकर पढ़ने से भी मन मे प्रसन्नता आये बिना नही रहती । प्रसन्नता के वातावरण मे सुनी हर बात आसानी से समझ मे भी आ सकती है ।

जिस फर्नीचर पर हम बैठते हैं, वह राष्ट्र की दौलत है, इसे भी हमे ध्यान रखना चाहिये। उसकी टूट-फूट, यदि असावधानी से होती है तो हम राष्ट्र की बहुत बड़ी हानि करते हैं । योग्य छात्र बनने के लिए यह जरूरी है कि हम स्कूल की प्रत्येक सामग्री की रक्षा पूरी सावधानी से करें।

हमे केवल पुस्तकीय-ज्ञान पर ही निर्भर न रहकर दैनिक, मासिक पत्र-पत्रिकाओं के अध्ययन को भी अपनी दिनचर्या का अङ्ग बना लेना चाहिए ताकि हम 'कूप-मण्डूकता से छूट कर बुद्धि-बल के क्षेत्र मे आगे बढ़ सकें ।

शारीरिक और मानसिक दृष्टि से विद्यार्थी जीवन को उक्त गुणों के आधार पर ही उच्च बनाया जा सकता है ।

व्यावसायिक शिक्षा : कुछ निर्देश

श्री राजीवलोचन सानवाल

आजकल यह एक प्रकार की मनोवृत्ति सी बन गयी है कि मैट्रिक अथवा सैकण्डरी पास करते ही छात्र उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु युनिवर्सिटी अथवा कॉलिजो मे जाते हैं, चाहे इसके लिए उपयुक्त व्यावसायिक अवसर मिले या न मिले। वास्तव मे बहुत कम छात्र ऐसे होते है जो उच्च शिक्षा के उपयुक्त होते हैं। यदि उच्च शिक्षा के अनुपयुक्त छात्र किसी टेक्नीकल पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण प्राप्त करें तो भविष्य मे उपयुक्त व्यवसाय प्राप्त हो सकता है। ऐसी अवस्था मे शिक्षित बेकारो की संख्या मे कमी हो जाएगी। यहां मैं यह बता देना उपयुक्त समझता हू कि टेक्नीकल पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले छात्र दूसरे व्यवसायो मे जाने वाले छात्रो से किसी प्रकार कम नही रहते क्योंकि टेक्नीकल शाखाओ मे जाने वाले छात्र हाई स्कूल या हायर सैकण्डरी के बाद एक से तीन साल का प्रशिक्षण प्राप्त कर अच्छा रोजगार व वेतन पा सकते है जबकि बिना उद्देश्य के कालेजो मे पढने वाले छात्र ४ या ६ वर्ष व्यतीत कर लेने के बाद भी क्लर्क बनते दिखाई देते है। हा ऐसे स्नातको को केन्द्रीय व राज्य सरकारो की उच्च नौकरियो के लिए प्रतियोगी परीक्षा मे बैठने का अवसर अवश्य प्राप्त हो जाता है परन्तु बहुत कम मेधावी छात्र ही ऐसे स्थानो के लिए उपयुक्त पाए जाते हैं। अत: उनके लिए क्लर्कों की सम्भावना ही अधिक रह जाती है। डाक्टरी और इंजिनियरिंग आदि व्यवसायो के लिए भी उच्च कोटि के छात्रो की आवश्यकता होती है और खर्च भी अधिक उठाना पड़ता है जो प्रत्येक बालक के माता-पिता के लिए सम्भव नही।

स्वतन्त्रता के उपरांत देश मे टेक्निशियनो व विशेष शिक्षा-प्राप्त लोगो की विशेष मांग है। हमारी केन्द्रीय व राज्य सरकारें तेजी के साथ जगह-जगह प्रशिक्षण केन्द्र खोल रही है जिससे उचित प्रशिक्षण प्राप्त कर ये कामगार राष्ट्र की बढ़ती हुई माग को पूरा कर सकें और अपने लिए उपयुक्त

व्यवसाय भी चुन सकें।

बालको ! हमारे चारों ओर भिन्न-भिन्न व्यवसायों का एक विशाल समुद्र है परन्तु अनभिज्ञता के कारण उपयुक्त व्यवसाय का चुनाव सम्भव नहीं होता। वैसे तो विषयों का चुनाव करते समय वैसे ही व्यवसाय में जाने के बारे में सोचना होता है। उस समय तुम्हारी बुद्धि परिपक्व नहीं होती अतः प्रत्येक ग्रुप के छात्रों के लाभ हेतु सूचना दे रहा हूं:—

[१] मानवीय—मानवीय ग्रुप लेने वाले छात्र वकील, उच्च राजकीय सेवाओं में अफसर, पुस्तकालयाध्यक्ष, अध्यापक आदि बन सकते हैं। जो छात्र आगे पढ़ने में असमर्थ हैं वे लिपिक, अध्यापक, छोटे पुस्तकालयों के पुस्तकालयाध्यक्ष बन सकते हैं।

[२] विज्ञान—इस वर्ग के छात्र उच्च शिक्षा पाकर अनुसंधानकर्ता, औद्योगिक, वैज्ञानिक, चिकित्सक, इन्जीनियर आदि बन सकते हैं। परन्तु वे छात्र जो आगे पढ़ने असमर्थ हैं २-३ साल का आवश्यक प्रशिक्षण पाकर ओवरसियर, टर्नर, फिट मेकेनिक, ड्राफ्ट्समैन, कम्पाउन्डर, नर्स, अध्यापक आदि बन सकते हैं।

[३] वाणिज्य—इस वर्ग के छात्र उच्च शिक्षा द्वारा कर-सलाहकार, एकाउंटेन्ट, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट, लेखा-परीक्षक, बैंक मैनेजर, अर्थशास्त्री, अध्यापक आदि बन सकते हैं। अपना शिक्षण समाप्त कर देने वाले छात्र व्यापारी, विक्रेता, लिपिक आदि बन सकते हैं।

इन वर्गों के अलावा ४ ग्रुप और हैं परन्तु इनके अध्ययन की सुविधा हमारे स्कूलों में नहीं है

उपर्युक्त सूचना दे देने के बाद तुम अपने भविष्य के बारे में अवश्य सोचोगे और अपने लिए उपयुक्त व्यवसाय की योजना बनाओगे। परन्तु व्यवसाय का चुनाव सिर्फ भावावेश में ही नहीं करना है इसके लिए जैसा कि मैंने तुम्हें बताया है तुम्हें अपनी योग्यता, रुचि, सामर्थ्य, साधन व अपनी कमजोरियों आदि को ध्यान में रख कर करना होगा। अतः मैं तुम्हें कुछ ऐसी बातें भी बतलाना चाहता हूं जिनको तुम्हें अपने व्यवसाय का चुनाव करते समय ध्यान में लाना होगा।

१. तुम्हारी रुचि कौन-कौन से विषयों के पढ़ने में है ?

२. तुम्हारी भिन्न-भिन्न विषयों में क्या योग्यता है अर्थात् भिन्न-भिन्न विषयों में तुम्हें कितने अंक प्राप्त होते हैं ?

३. तुम्हारी बुद्धि किस प्रकार की है ? कौन-कौन से विषयों के समझने में तुम्हें कठिनाई होती है ?

४. तुम्हारे घर की परिस्थिति किस प्रकार की है ? जो विषय तुमने लिए हैं उनके लिए

तुमने अपने व्यवसाय की क्या योजना बनाई है ? उसके लिए क्या तुम्हारे माँ-बाप खर्च उठा सकेंगे ?

५. तुम्हारे पिता तुम्हें किस व्यवसाय में भेजना चाहते हैं व तुम से क्या आशाएं रखते हैं ?

६. तुम्हारा स्वभाव कैसा है ? क्या तुम लोगों से मिलना जुलना पसन्द करते हो अथवा तुम्हें अकेले काम करना अच्छा लगता है ?

७. तुम्हारा स्वास्थ्य किस प्रकार का है ? जिस व्यवसाय में तुम जाना चाहते हो क्या तुम्हारा स्वास्थ्य उस व्यवसाय के अनुकूल साबित होगा ?

बिगुलची

प्रकाश चन्द्र वर्मा, १० द

एक बिगुलची किसी युद्ध में पड़ा शत्रु के हाथ,
शत्रु उसे ले गये पकड़ कर बड़े गर्व के साथ।
मार डालने को उसको जब वे सब थे तैयार,
तब वह हाथ जोड़ कर उनसे करने लगा पुकार -
सबल शत्रु के दल के सारे सेनापति सरदार !
मैंने क्या अपराध किया है मुझे न तुम यों मारो
चाकू और छुरी भी मेरे पास नहीं होती थी,
मैंने रण में भूल से भी हत्या की न किसी की,
मैं तो था सेना में केवल बिगुल बजाया करता था,
लड़ने वालों में लड़ने का भाव जगाया करता था।
फिर किस लिए मारते हो तुम,
अभयदान मुझ को दो तुम।
उसे मारने वाले बोले उसकी बातें सुनकर,
यह सच है सेना में था तू सबसे बढ़कर।
तू खुद शस्त्र नहीं लेता था औरों को उकसाता,
हारे थके हुए वीरों में भर जोश उत्साह।
सो लड़ने वालों से ज्यादा करता था तू काम
इसलिए हमको करना है तेरा काम तमाम।

अविस्मरणीय घटना—

धानमंडल रेल दुर्घटना

छाया एवं लेख : महेश स्वरूप भटनागर

कभी-कभी मानव मस्तिष्क में ऐसे विचार आ जाते हैं जिनका मूल्यांकन किया जाए तो स्वस्थ चिंतन की दृष्टि से ये कभी भी उत्तम नहीं कहे जा सकते। यह समझ कर कि ऐसे विचारों को मस्तिष्क में नहीं आने देना चाहिये, वह यदि इन विचारों को भूलने का प्रयत्न करता है तो ये विचार उसके अचेतन मस्तिष्क में जाकर प्रायः सुप्त हो जाते हैं। बचपन में जब कभी मैं किसी रेल दुर्घटना का समाचार सुनता तो मेरे मन में बड़ा कौतूहल जगता और भांति-भांति के विचार आने लगते। कभी-कभी तो यह इच्छा प्रबल हो जाती कि जब कभी मैं किसी रेलगाड़ी में यात्रा करूं तो वह दुर्घटनाग्रस्त हो जाय ताकि मैं स्वयं दुर्घटना के प्रभावों को अनुभव कर सकूं। दूसरे ही क्षण यह विचार प्रबल होने लगता कि यदि रेल दुर्घटना भयंकर हुई और मुझे कुछ हो गया तो···तभी तीसरा विचार समन्वय करने लगता कि रेल दुर्घटना तो हो परन्तु मेरा कुछ न बिगड़े। यह जानते हुए भी कि नैतिक दृष्टि से यह विचार निंदनीय है फिर भी यह मेरे मस्तिष्क में प्रबल होता गया। इसके बाद मैंने अनेक रेल यात्रायें सफलतापूर्वक की और उपर्युक्त विचार मेरे अचेतन मस्तिष्क में जाकर लुप्तप्रायः सा हो गया।

परन्तु कुछ वर्षों बाद······१६ अक्टूबर १९६३ को प्रतिदिन की भांति ८ डाउन पुरी एक्सप्रेस उड़ीसा के खेतों-खलिहानों को पार करती हुई तीव्र गति से अपनी मंजिल की ओर बढ़ी आ रही थी। इसी गाड़ी के एक सैकिंड क्लास के जनाने डिब्बे के फर्श पर मैं करवटें बदल रहा था। नींद उचाट चुकी थी। मैं उठ बैठा और आखें मलकर खिड़की की ओर देखा तो ज्ञात हुआ कि पौ फटने वाली है। इससे पहले कि मैं मुंह-हाथ धोने उठूं, मेरे मस्तिष्क में वे सारे दृश्य तेजी से घूम

गये जिनके कारण मुझे पिछली रात असीम कठिनाइयों का सामना करना पड़ा – जैसे हावड़ा स्टेशन पर पुरी एक्सप्रेस में अत्यधिक भीड़ होने के कारण थर्ड क्लास में जगह न मिलना, स्लीपिंग कोच में जगह न मिलना, (यद्यपि मेरा नाम वेटिंग लिस्ट में था), थर्ड क्लास के टिकट को सैकिंड क्लास में परिवर्तन करने के बाद भी रात के एक बजे तक खड़े-खड़े यात्रा करना, और [illegible] टी० टी० ई० महोदय से खाली पड़े सैकिंड क्लास के जनाने डिब्बे में बैठने की याचना करना और उनका अनुमति देना इस शर्त पर कि यदि कोई महिला यात्री आई तो हमें डिब्बा खाली करना होगा। ईश्वर का शुक्र है कि कोई महिला-यात्री उस जनाने डिब्बे में नहीं आई और अपनी कमर सीधी करने का मौका मिल गया।

मैं इन्हीं विचारों में डूबता-तैरता उठने की सोच ही रहा था कि [illegible] कि गाड़ी की गति तीव्रता से कम हो रही है। मैंने सोचा गाड़ी को शायद किसी [illegible] है। तभी एकाएक एक जोर का झटका हम सबको लगा। ऊपर की ओर [illegible] सामान फर्श पर आ गिरा। सुराही लुढ़क गयी और उसका पानी फर्श पर [illegible] पर सोने वाले सज्जन नीचे गिरने से बाल-बाल बचे। हम इस [illegible] पाये थे कि लगातार तीन-चार झटके और लगे और गाड़ी एकदम ठप सी होकर रुक गई। मैंने सोचा ड्राइवर ने शायद किसी की जान बचाने के लिये एकदम ब्रेक लगा दिये हैं। मैंने खिड़की से बाहर झांका तो सवेरे के झुटपुटे में कुछ भी मालूम नहीं पड़ा। थोड़ी ही देर में मुझे एक सज्जन दिखाई पड़े। मैंने उनसे गाड़ी रुकने का कारण जानना चाहा। "राम-राम! हरे-हरे!" उन्होंने घबराये स्वर में कहा। पूरक प्रश्न करना मैंने बेकार समझा और स्वयं घटनास्थल की ओर भागा गया। जो दृश्य मैंने वहां देखा उसे देख कर मैं दंग रह गया। पुरी एक्सप्रेस

का इंजन पटरी से उतर कर दुर्घटनाग्रस्त हो चुका था। इंजन के [illegible] तरह से जमीन में धस चुके थे। इंजन का [illegible] बाहर घुसा हुआ था। पार्सलयान व अन्य तीन-चार सवारी डिब्बे [illegible] हो कर रेल पटरी छूट कर अलग अलग पड़ी हुई थी। [illegible] करने के लिए हावड़ा स्टेशन पर मैं कई बार उसे [illegible] और उसका [illegible] ऊपर उठ गया था। [illegible] के इंजन को [illegible] हल्की टक्कर मार चुका था। इस दुर्घटना में [illegible] हो गया। कुछ व्यक्तियों के मामूली चोटें आई।

[illegible]

(SCIENCE - SECTION)

"Science and Art belong to whole world and before them vanishes the barriers of nationality".

—GOTHE

"Science, in other words knowledge, is not the enemy of religion, for if so, religion would mean ignorance."

—O. W. HOLMES

"The study of Science teaches young man to think, while the study of classic teaches them to express thought".

—J. S. MILL.

ड्राइवर की होशियारी की दाद दे रहा था तो कोई ईश्वर को धन्यवाद । यह भी अखबार में तो ई० एम० एम० और पाइट्समैन फरार हो चुके है । किसी को भी दुर्घटना का कारण समझ में नहीं आ रहा था। यह दुर्घटना दक्षिण-पूर्वी रेल्वे के धानमडल रेल्वे स्टेशन के यार्ड में हुई। यह स्टेशन बहुत छोटा है तथा मद्रास हावडा मुख्य लाइन पर कटक के निकट स्थित है। मेल और एक्सप्रेस इस पर नहीं ठहरतीं। पुरी एक्सप्रेस को इस स्टेशन से रनिंग थ्रू पास होना था। परन्तु एक मालगाडी का शटिंग होने के कारण, एक्सप्रेस के ड्राइवर ने सतर्कता बरतते हुए गाडी की स्पीड काफी कम करली थी। यदि यह सतर्कता नही बरती जाती तो सभवत यह दुर्घटना बहुत भयंकर हुई होती।

दोपहर तीन बजे दूसरी गाडी से हम पुरी के लिए रवाना हुए। जब हमारी गाडी कटक के प्लेटफार्म पर आकर रुकने लगी तो पास खडी मद्रास हावड़ा मेल के यात्री हमें घूर-घूर कर देखने लगे, मानो हम इन्सान न हो, किसी प्रदर्शनी में रखे एग्जिबिट्स् हों।

कन्हैयालाल जोशी, कक्षा १० ब

पचशील शब्द का प्रयोग हमारे देश मे प्राचीन काल से ही होता चला आ रहा है। इसका उल्लेख बहुत-से ग्रन्थो मे मिलता है। इसका पहली बार प्रयोग महात्मा बुद्ध ने उस समय किया था जब वे अपने शिष्यों को नीति तथा सदाचार का मार्ग-प्रदर्शन कर रहे थे।

राजनीति मे इस शब्द का प्रयोग सबसे पहले इण्डोनेशिया के राष्ट्रपति डा० सुकर्ण ने किया था। सन् १९४५ के आस-पास, दूसरे महायुद्ध के समय इण्डोनेशिया परतन्त्र था। यहा डच लोगों का राज्य था परन्तु जापान ने इस पर अधिकार कर लिया। इसी समय डा० सुकर्ण ने इण्डोनेशिया के लोगों से राष्ट्रीय एकता की अपील करते हुए पंचशील शब्द का प्रयोग किया था।

सन् १९५४ मे भारत के स्व० प्रधान मन्त्री श्री जवाहर लाल नेहरू ने पचशील और उसके सिद्धान्तों पर अत्यधिक बल दिया। उस समय चीन के प्रधान मन्त्री चाऊ-एन-लाई भी भारत में आए हुए थे। इस सिद्धान्त को उस समय चीन ने भी स्वीकार किया।

चाहे जैसे भी यह शब्द प्रकाश मे आया हो, अन्तर्राष्ट्रीय जगत में इसका महत्व सर्वाधिक है। वास्तव मे भारत की विदेश-नीति ही पचशील के सिद्धान्तों पर आधारित है।

(SCIENCE - SECTION)

"Science and Art belong to whole world and before them vanishes the barriers of nationality".

—GOTHE

"Science, in other words knowledge, is not the enemy of religion, for if so, religion would mean ignorance."

—O. W. HOLMES

"The study of Science teaches young man to think, while the study of classic teaches them to express thought".

—J. S. MILL.

सम्पादकीय

ऊर्जा और उसका नवीन स्रोत 'परमाणविक विघटन'

साधारण बोलचाल की भाषा में ऊर्जा और शक्ति
दूसरे के पर्याय समझ कर प्रयोग किये जाते हैं
भौतिकी में इन दोनों का अपना-अपना विशिष्ट अर्थ है।
अभिकर्ता में ऊर्जा अधिक परन्तु शक्ति कम हो सकती है।
विपरीत किसी अन्य अभिकर्ता के कार्य करने की दर को
(Power) कहते हैं। कोई वस्तु किसी प्रामाणिक अवस्था में आने से
अथवा किसी निश्चित परिवर्तन होने से पूर्व, वह कुल कितना
कर सकती है, इस कार्य करने की क्षमता को ऊर्जा (Energy)
हैं। निम्न उदाहरण से दोनों में अन्तर स्पष्ट हो जायगा।

रामू एक घंटे में दो कमरों की पुताई कर देता है और इसी दर से एक दिन में छ कमरों
पुताई करने के बाद वह थक जाता है। किसना एक घंटे में एक ही कमरे की पुताई कर पाता है प
इसी दर से वह एक दिन में आठ कमरों की पुताई करने के बाद थक जाता है। इससे स्पष्ट होता है
रामू के कार्य करने की दर (शक्ति) किसना से अधिक है। परन्तु जहां तक ऊर्जा का प्रश्न है
किसना में अधिक है।

ऊर्जा क्या है ?

ऊर्जा कोई पदार्थ नहीं है। यह न तो स्थान घेरती है, न ही इसका कोई रंग रूप होता है
...का अस्तित्व किसी पदार्थ के साथ ही होता है। बिना ऊर्जा के कोई क्रिया संभव नहीं है। एक ऊ
...र्जा ऊर्जा में परिवर्तित भी की जा सकती है। ऊर्जा अविनाशी है तथा एक पदार्थ से दूसरे पदा

मे स्थानान्तरित भी की जा सकती है। जैसे एक गतिशील गेंद दूसरी गेंद से टकराती है तो अपनी कुछ ऊर्जा उसे दे देती है। परिणामस्वरूप दूसरी गेंद भी गतिशील हो जाती है। गतिज के अलावा ताप, विद्युत, प्रकाश भी ऊर्जा के रूप है।

ऊर्जा के स्रोत

सूर्य, ऊ. का मुख्य स्रोत है। इसी के ताप से समुद्र का पानी भाप बन कर उड़ जाता है, जिससे बादल बनते है और वर्षा होती है। इसी के ताप के कारण हवाये बहती है। आज जो हम कोयले की बड़ी-बड़ी खानों का उपयोग कर रहे है, वे पहले पृथ्वी के तल पर घने विशाल जंगल रहे होंगे, जो बाद मे पृथ्वी मे दब गये। सूर्य के ताप ने ही इन विशाल जंगलो को जन्म दिया था। बड़े-बड़े कल-कारखानों एवं उद्योगों मे कोयला ईंधन के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। परिवहन के अधिकांश साधनो मे पेट्रोल प्रयुक्त किया जाता है। विद्युत के प्रयोग का प्रचलन भी बढ़ता जा रहा है। परन्तु विद्युत उत्पादन के लिये ईंधन के रूप मे कोयले की आवश्यकता पड़ती है या बड़े-बड़े बांधो के पानी की स्थितिज ऊर्जा का उपयोग करना पड़ता है। जिस गति से कोयला और पेट्रोल की खपत में वृद्धि होती जा रही है उसको देखते हुए बहुत से वैज्ञानिको ने चिंता व्यक्त की है कि पृथ्वी के इन खनिज भंडारों के समाप्त होने पर क्या होगा। उनकी यह चिंता अब दूर होती जा रही है। अब वैज्ञानिकों ने ऊर्जा का नवीन स्रोत प्राप्त कर लिया है और वह है परमाणविक विघटन। इसमे परमाणु के नाभिक (Nucleus) को विदीर्ण कर के न्यूक्लियर ऊर्जा प्राप्त की जाती है।

परमाणविक विघटन

ब्रह्मा, विष्णु और महेश ये तीनों देव भारतीय धार्मिक विचारधारा के अनुसार सृष्टि का संचालन करते है। यदि मैं यों कहूं कि प्रोटोन, इलैक्ट्रोन और न्यूट्रॉन विज्ञान जगत मे पदार्थों की बनावट, गुण और व्यवहार का संचालन करते हैं तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। प्रत्येक तत्व अति सूक्ष्म कण परमाणुओं से मिलकर बना होता है। विज्ञान के छात्र जानते हैं कि परमाणु की रचना सौर-मंडल जैसी ही है। न्यूट्रॉन और प्रोटोन परमाणु के नाभिक में स्थित होते हैं। नाभिक के चारों ओर कुछ इलैक्ट्रोन विभिन्न कक्षों मे चक्कर लगाते हैं। इलैक्ट्रोन एक दूसरे से काफी दूर होते हैं अतः परमाणु का अधिकांश स्थान रिक्त रहता है। एक औसत परमाणु का व्यास एक इंच का २० करोड़ का भाग तथा नाभिक का व्यास, परमाणु के व्यास का १० हजार का भाग होता है। परमाणु का लगभग सारा द्रव्य उसके नाभिक मे ही स्थित होता है। यह द्रव्य इतना घना होता है कि यदि किसी तरह इसको एक बूंद जितना एकत्रित कर लिया जाय तो इसका भार २० लाख टन के बराबर होगा। इससे स्पष्ट हो जाता है कि इतने सघन द्रव्य को एक छोटे से नाभिक मे बांध कर रखने के लिये अत्यधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है।

यह ज्ञात किया जा चुका है कि यूरेनियम का आइसोटोप यू-२३५ का नाभिक न्यूट्रोनों की बौछार द्वारा अथवा किन्हीं विशेष परिस्थितियों में कॉस्मिक किरणों की बौछार द्वारा विदीर्ण किया जा सकता है। इससे नाभिक के टुकड़े छोटे परमाणुओं के नाभिक बन जाते है। मुक्त हुए न्यूट्रॉन, दूसरे परमाणु के नाभिक को विदीर्ण करने लगते है और इस प्रकार एक शृंखलाबद्ध प्रतिक्रिया शुरू हो जाती

है। यदि नाभिक के सारे टुकड़ों को जोड़ कर एकत्रित करके उनकी संहति ज्ञात करें तो वह मूल परमाणु की संहति से कम बैठती है। इसका तात्पर्य यह है कि द्रव्य का कुछ अंश ऊर्जा में परिणत हो गया।

एलबर्ट आइन्स्टीन के अनुसार द्रव्य ऊर्जा में तथा ऊर्जा द्रव्य में बदली जा सकती है। आइन्स्टीन के सूत्र $E=MC^2$ द्वारा ऊर्जा की गणना भी की जा सकती है। (E=ऊर्जा, M=संहति ग्राम में, C= प्रकाश वेग से० मी० प्रति सैकिंड में)।

द्रव्य को अभी तक पूरी तरह से वश में नहीं किया जा सका है। परमाणविक विघटन प्रक्रिया में किसी नाभिक का लगभग हजारवां भाग ही नष्ट होता है। मुक्त हुई ऊर्जा का कुछ अंश विकरणों में परिणत हो जाता है। ये विकरण मनुष्य के लिये घातक है। इसलिये परमाणविक विघटन एक विशेष प्रकार की बनी भट्ठी में किया जाता है। इन्हें 'एटोमिक रिएक्टर' कहते हैं। भारत में अब तक तीन परमाणु भट्ठियां स्थापित हो चुकी हैं। परमाणु बिजलीघर भी स्थापित होते जा रहे हैं। इस संबंध में बम्बई के निकट तारापुर का नाम उल्लेखनीय है।

—महेश स्वरूप भटनागर

विज्ञान के आधार स्तम्भ

★★ मैडम क्यूरी (१८६७-१९३४), फ्रांस ने अपने पति प्रो० क्यूरी के साथ मिलकर "रेडियम" का आविष्कार किया जिसने संसार के वैज्ञानिकों के लिए एक नवीन क्षेत्र खोल दिया। रेडियम संसार का सबसे महत्त्वपूर्ण व महंगा पदार्थ है जिससे कैंसर जैसे असाध्य रोगों का इलाज होता है।

★★ सर जगदीश चन्द्र बसु (१८५८-१९३७), भारत ने सिद्ध किया कि प्रकाश और विद्युत तरंगें एक-सी ही होती हैं। आपने एक "क्रैस्कोग्राफ" का आविष्कार किया जिससे वृद्धि को एक करोड़ गुना करके देखा जा सकता है। इस यंत्र की सहायता से आपने यह बताया कि पशु और पौधों पर बाह्य उत्तेजक प्रभाव एक-सा ही होता है। आप भारत की महानतम विभूतियों में से एक थे।

—[illegible] शर्मा, ११ [illegible]

भू-उपग्रह - टेलिस्टार

अशोककुमार जोहर, कक्षा ११ 'स'

टेलिस्टार एक ऐसा भू-उपग्रह है जो भूमडल मे ३,००० मील पर अन्तरिक्ष मे पृथ्वी पर अतलान्तक महासागर के आर-पार वाणी वायरलेस और टेलिविजन सदेश प्रसारित करने में समर्थ सिद्ध हुआ है। 'टेलिस्टार' अमेरिका मे व्यावसायिक उपयोग के लिए तैयार किया गया संसार का प्रथम भू-उपग्रह है। यह विज्ञान का एक नया करिश्मा है जिसमे कई प्रकार के यन्त्र लगे हुए हैं। यह स्वयं कार्य करता है।

इस उपग्रह का व्यास ३४.५ इंच और वजन १७० पौंड है। यह अल्यूमीनियम और मैग्नीशियम का बना हुआ है। यह १५७.८ मिनट मे पृथ्वी की एक परिक्रमा पूरी करता है। पृथ्वी से इसकी अधिकतम दूरी ३,५०२ मील और निकटतम दूरी ५१३ मील है।

किसी उपग्रह को वायुमण्डल मे भेजने के लिए ऐसे उपाय उपयोग मे लाना चाहिए जिससे वह अपने निर्धारित ग्रह मार्ग में पहुंच सके।

टेलिस्टार एक ओर से एक साथ ६०० टेलिफोन सदेश, एक टेलिविजन प्रसारण और ६०० दुतरफी टेलीफोन वार्ताएं प्रसारित कर सकता है। इसकी शक्ति का अन्दाजा तब लगता है जब हम इसकी क्षमता की तुलना पृथ्वी पर स्थित वर्तमान उपकरण से करते हैं जो केवल १२ टेलीफोन वार्ताएं ग्रहण कर सकता है।

'टेलिस्टार' एक ऐसा संचार भू-उपग्रह है जो न केवल माइक्रोवेव द्वारा पृथ्वी को रेडियो सकेत प्रेषित कर सकता है बल्कि वह उनकी शक्ति को अरबो गुणा बढ़ा भी सकता है। यह पहले रेडियो और टेलीविजन सकतों को ग्रहण कर लेते हैं। उनकी शक्ति को बढ़ाकर पुनः पृथ्वी पर बने सकेत केन्द्रों की ओर प्रसारित करता है।

बड़े पैमाने पर इसका उपयोग ११ जुलाई १९६२ को किया गया। इस दिन राष्ट्रपति प्रेसिडेंट कैनेडी के प्रेस-सम्मेलन के दृश्य पश्चिम यूरोप के दर्शकों के लिए टेलिविजन द्वारा प्रसारित किये गये। यूरोप के सोलह देशों में चित्र में प्रेसिडेन्ट दिखाई दिये और उनकी आवाज बिल्कुल स्पष्ट सुनाई दी।

'टेलिस्टार' की अद्भुत सफलता को देखते हुए अब ३० से लेकर ५० कृत्रिम उपग्रहों की एक श्रृंखला पृथ्वी से हजारों मील ऊपर स्थापित की जायगी। वह समय दूर नहीं जब संसार के एक स्थान से दूसरे स्थान तक टेलीफोन, टेलीविजन, टेलीग्राफ तथा इसी प्रकार की अन्य सूचनाएं सुगमतापूर्वक प्रसारित की जायेंगी।

ऑफ मैथेमैटिक्स

राधा शरण शर्मा, कक्षा ११ 'ब'

मैथेमटिक्स क्या ले ली हमने,
आफत ले ली एक भयंकर।
मगर हमें तो टकराना था,
सपने इंजिनियरी के लेकर॥

प्रथम आया लोअर ऐल्जैबरा,
जैसे लम्बी गर्दन का हो जैबरा।
जोड़ी की ज्योमेट्री आई,
उसने आकर डांट लगाई॥

फिर आया हायर ऐल्जैबरा,
वह फिर पीछे क्यों रहने का।
उसने भी झट शादी की और,
साथ दिया पद कोर्डीनेट का॥

आपस में लड़ाई चलने लगी,
हायर एल्जैबरा कम क्यों रहने का था।
दूसरी शादी झट उसने की,
नई का नाम ट्रिगनोमेट्री रखना ही था॥

पांचों ने मिलकर राज्य किया,
लड़कों के छक्के छुड़ा दिये।
तबाह कर दिया पूरी क्लास को,
आर्ट्स लेने को मजबूर किया॥

मन के मोदक तो खा ही लिये,
हायर सैकण्ड्री करना होया दूभर।
एक वर्ष बरबाद गया,
इंजीनियर होना तो दूर रहा॥

आर्किमिडीज के संबन्ध में

कुंवर मोहनसिंह चौहान, कक्षा ९ 'स'

इटली देश के दक्षिण में सिसली नाम का एक द्वीप है। यहाँ एटना नामक एक बड़ा भारी ज्वालामुखी पर्वत है। यहाँ बहुधा भूचाल आया करते हैं। सन् १६०८ में भूचाल ने मेसिना नगर को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। सिरेक्यूज सिसली का सबसे बड़ा नगर था। पुराने समय में इस नगर में करीब २५-३० लाख मनुष्य रहते थे। आर्किमिडीज का जन्मस्थल यही था, इसका जन्म ईसा से ३०० वर्ष पूर्व हुआ। आर्किमिडीज इस नगर के नृपति का दोस्त था। यह बड़ा धन-धान्य से सम्पन्न व बुद्धिमान था। आर्किमिडिज संसार के भोग-विलासों को नहीं चाहता था। उसकी अभिरुचि विज्ञान की ओर आकर्षक थी।

आर्किमिडीज ने जहाज के निर्माणकर्ता व मल्लाहों को बहुत वजन उठाते देखा। उसने मन में विचारा और सोचा कि बिना अधिक जोर लगाये भारी वजन को उठाया जा सकता है? आर्किमिडीज ने बतलाया कि यदि आलम्ब से वजन तक की दूरी कम कर दी और आलम्ब से बल की दूरी बढ़ा दी जाय तो हम बहुत कमजोर लगाने से ही अधिक भारी वजन आसानी से उठा सकते हैं। आर्किमिडीज ने कहा-यदि कोई लम्बा उत्तोलक तैयार कर सकें तो कोई वजन नहीं जो नहीं उठाया जा सकता। उसने यह बात अपने मित्र सिरेक्यूज नरेश को बतलाई और यदि आप मुझे मजबूत व लम्बा उत्तोलक एवं पृथ्वी से अलग कहीं स्थिर होने के लिए स्थान दें तो मैं पृथ्वी को भी उठा सकता हूं।

एक बार राजा ने जो उसका मित्र था, एक सुनार को कुछ सोना मुकुट बनाने के लिये

दिया। कई दिनों उपरान्त मुकुट बनकर तैयार हो गया। अब राजा ने उस मुकुट को तोला, उसका वजन उतना ही था जितना उसने उसे सोना दिया था। किसी अन्य व्यक्ति ने राजा से कहा, इसमे सुनार ने कुछ चाँदी मिलादी है और उतना सोना अपने पास रख लिया है। राजा बड़ा न्यायप्रिय था। उसने बिना इसके प्रमाणित हुए कि इसमे चाँदी का अंश है सुनार को अथवा किसी को भी दंड देना उचित नहीं माना।

राजा ने वह मुकुट अपने मित्र आर्किमिडीज को दिया और कहा कि यह पता लगाओ कि इसमें चाँदी है या नही। उसने स्वीकार तो कर लिया लेकिन अब इसका हल उसे सूझता ही नही था। क्योंकि मुकुट बड़ा सुन्दर व सोने ही का लग रहा था। उसने चाँदी और सोने के एक समान आयतन के दो गोले बनाये और उनको तोला तो ज्ञात हुआ कि सोने का वजन चाँदी से दुगुना है। उसने सोचा मुकुट को गलाकर वर्गाकार रूप मे ढाल दिया जाय और उतने ही वजन का शुद्ध सोना गलाकर ढाल दिया जाय तो मालूम हो सकता है कि इसमे मिलावट है या नही क्योंकि चाँदी हल्की होती है। लेकिन उसने सोचा मुकुट की जो यह सुन्दर कलामय बनावट है वह जाती रहेगी, इसलिये उसने एक दूसरा उपाय सोचा। आर्किमिडीज ऐसी आदत थी कि जब तक वह किसी समस्या का हल नही खोज लेता तब तक उसका पीछा नही छो और न ही कोई अन्य बात को अपने उन्नत मस्तिष्क मे प्रवेश करने देता। एक बार वह पानी से लब भरे टब मे स्नान करने घुसा तो पानी बाहर निकलने लगा। जब वह स्नान कर बाहर निकला तो टब रिक्त हो गया। उसने अपने आयतन के बराबर पानी हटा दिया था। इसी समय उसके मस्तिष्क आकस्मिक विचार पैदा हुआ। वह इस आवेश में बिना अपने शरीर को पोंछे और नंगा ही अपनी म मे युरेका, युरेका (पा लिया) चिल्लाता हुआ घर दौड़ा।

घर आने पर उसने एक बर्तन मे ऊपर तक पानी भर लिया और मुकुट को धागे बाँधकर उसमे लटकाया। इससे कुछ पानी बर्तन से बाहर निकल गया और बर्तन कुछ खाली हो गय अब उसने नापने जार से बर्तन को पहले जितना ही ऊपर तक भरा। इस प्रकार उसने पता लगाया मुकुट का आयतन कितना है क्योंकि वस्तु अपने आयतन के बराबर द्रव हटाती है। अब उसने मुकुट के व के समान सोने और चाँदी के गोले बनवाये और उन दोनों गोलों को अलग २ पानी मे डालकर देख सोने के गोले ने कम और चाँदी के गोले ने अधिक पानी हटाया। क्योंकि चाँदी हल्की होती है, और मोने के गोले के वजन के बराबर थी इससे उसका आयतन सोने के गोले से अधिक था, अतः उसने अधि पानी हटाया। अब आर्किमिडीज ने मुकुट को पानी मे डाला तो देखा कि मुकुट ने सोने के गोले से अधि व चाँदी के गोले से कम पानी हटाया। इससे सिद्ध हो गया कि मुकुट में चाँदी की मिलावट है।

इसके बाद उसने अनेक गोले बनाये जिनमे सोने, चाँदी की विभिन्न मात्राएँ थीं पर उ समस्त गोलों का वजन उस मुकुट के वजन के बराबर था। उन सभी को एक एक करके पानी मे डाल उनमे से उसे एक ऐसा गोला मिला जिसने मुकुट के बराबर पानी हटाया। उसे पता था कि इस गोले सोने व चाँदी की इतनी मात्रा है। वह तुरन्त राजा सिरेक्यूज के पास गया और कहा मैं बता सकता कि इस मुकुट मे कितनी चाँदी है व कितना सोना उस सुनार ने चुराया है। इससे राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उसे धन्यवाद के साथ पुरस्कार प्रदान किया। इस प्रकार उसने वस्तुओं का आपेक्षिक घनत्व मा करने का नवीन सिद्धान्त निकाला। इन प्रयोगों द्वारा उसने बतलाया कि जब कोई वस्तु पूरी २ द

रने पर हम यह जान सकते है कि इलेक्ट्रोन सरल रेखा मे गमन करते है। क्योकि चमकदार क्षेत्र की आक धनाग्र की प्लेट है, और उसमे एक त्रिभुजाकार छिद्र है। जब विद्युत का प्रवाह शुरू किया जाता है तो, नाग्र प्लेट के सामने की काँच की दीवार पर एक चमकदार क्षेत्र दिखायी देता है जो कि धनाग्र के परीत दिशा में है और उसका आकार भी त्रिभुजाकार होता है। अत यह सिद्ध होता है कि किरणें रल रेखा में गमन करती है।

प्रयोग ३. इस प्रयोग मे भी प्रयोग नम्बर २ वाला उपकरण ही काम आता है। इसमे यह न्तर होता है कि इसमे दो विद्युदाग्र और होते है जो कि धनाग्र मे विपरीत दिशा मे उस जगह जहाँ से योग न० २ मे किरणें गमन कर रही थीं, ऊपर व नीचे वाली दीवारो पर समानान्तर लगे रहते है। चे वाला विद्युदाग्र, धनाग्र व ऊपर वाला विद्युदाग्र ऋणाग्र होता है। एक स्विच की सहायता से इनमें द्युत प्रवाहित की जा सकती है।

प्रथम स्थिति में जबकि दूसरे विद्युदाग्रो मे से विद्युत प्रवाहित नही होती, और प्रयोग न० २ को दुहराया जाता है तो उसी प्रकार त्रिभुजाकार चमकदार क्षेत्र दिखायी देता है। परन्तु जब अलग से लगाये गये विद्युदाग्रो में से विद्युत प्रवाहित की जाती है तो चमकदार क्षेत्र विक्षेपित होकर थोडा नीचे दिखायी देने लगता है।

इस प्रयोग द्वारा हम प्रकाश को विक्षेपित नही कर सकते, अत वह चमकीला त्रिभुजाकार क्षेत्र प्रकाश के कारण नही बना। अत वह चमकदार क्षेत्र ऋण विद्युतयुक्त कणो द्वारा बना है, जो कि धनाग्र प्लेट मे आवर्तित होकर विक्षेपित हो गये। इन्हे ही इलेक्ट्रोन कहा जाता है।

रंगीन अक्षर देखिये

रमेशचन्द्र गौड़, कक्षा १० 'ब'

(१) आम के रस से हथेली पर कुछ अक्षर लिख लो और उसे छाया मे सुखा लो। फिर लोगो के सामने उसी हथेली पर थोड़ा-सा चूना रगड लो जिससे हथेली पर गहरे लाल रग के अक्षर दिखाई देंगे।

(२) सफेद कागज पर गोंद से लिख कर छाया मे सुखा लो। फिर उसे आग पर तपाओ तो उस पर भूरे रग के अक्षर दिखाई देंगे।

(३) सफेद कागज पर आँवले के रस से कुछ अक्षर लिख कर उन्हें सुखा लो। फिर उसे आग के ऊपर गर्म करोगे तो कागज पर हरे रग के अक्षर दिखाई देंगे।

सर सी. वी. रमन

विनोदकुमार जैन, १० य

[१९०१ में विश्व मे पहली बार नोबल पुरस्कार दिया गया । अलफ्रेड बर्न हार्ड नोबल नामक स्टाकहोम (स्वीडेन) के एक इंजीनियर ने मानव संहारक विस्फोटकों का आविष्कार किया और अपने धन की विपुल राशि के ब्याज से नोबल पुरस्कार योजना स्थापित की । प्रति वर्ष पांच पुरस्कार भौतिकी, रसायन, चिकित्सा, साहित्य और शांति-स्थापन के लिये दिये जाते हैं ।]

आंखो में आंसू लिए मैंने अपने इतिहास के पन्ने उलटे है जहा पिछले सैकड़ों वर्षों से ऐसा व्यक्ति न हुआ जिस पर विज्ञान के क्षेत्र मे हम दुनिया में गर्व कर सकें......आप वह व्यक्ति हैं जिनने इस कमी को पूरा किया और हमें अपना मस्तक ऊंचा करने का अवसर दिया है । ये शब्द थे दार्शनिक डा० राधू के जब सर सी० वी० रमन १९४५-४६ मे होलकर कॉलेज के वार्षिकोत्सव पर मुख्य-अतिथि के रूप मे आये थे । सन् १९३० मे सर सी० वी० रमन को भौतिक-शास्त्र में नोबल पुरस्कार मिला । कहना न होगा कि इस घटना ने भारत की बढती हुए प्रतिष्ठा चार चांद लगा दिये ।

डा० चन्द्र शेखर वेकट रमन का जन्म ७ नवम्बर १८८८ को त्रिचनापल्ली मे हुआ । उनके पिता गणित और भौतिक-शास्त्र के प्राध्यापक थे । ऐसा प्रतीत होता है कि पुत्र मे पिता की प्रतिभा बहुत बड़े रूप में मुखरित हुई ।

रमन बहुत निडर थे । वे बहुत तेजी मे पढने वाले तथा अथक परिश्रम करने वाले थे । १३ वर्ष की अवस्था मे उन्होंने इंटरमीजिएट की परीक्षा पास की तत्पश्चात् वे मद्रास के प्रेसीडेन्सी कॉलेज में बी० ए० पढ़ने के लिये चले गये । १६ वर्ष की अवस्था में रमन ने एम० ए० की परीक्षा प्रथम श्रेणी में

पास की। विद्यार्थी-काल में ही उनके दो रिसर्च पेपर्स लन्दन की पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके थे। विज्ञान के सम्पर्क में यह सामान्य बात है कि प्रशासकीय सेवाओं में पहुँच कर व्यक्ति ज्ञान-विज्ञान की शैक्षणिक गहराई से दूर पहुंच जाता है। किन्तु सी० वी० रमन में तो विज्ञान की गहराई में पहुंचने की असिट और अतुल लालसा थी। वे कलकत्ता में बड़ी लगन से साथ अपना रिसर्च-कार्य आगे बढ़ाने लगे, किन्तु कुछ समय बाद उनका रंगून ट्रांसफर हो गया। यह घटना उनके काम में बाधा के रूप में आ खड़ी हुई। १९११ में वे पुनः कलकत्ता पहुँच गये। सन् १९१५ में उन्हें कलकत्ता विश्वविद्यालय के साइंस कॉलेज में भौतिक-विज्ञान के प्रोफेसर पद को स्वीकार करने के लिए कहा गया। यहीं पर रहकर ही उन्होंने अपने प्रसिद्ध प्रयोग किये। सन् १९२० में कलकत्ता विश्वविद्यालय ने उन्हें 'डॉक्टर' की उपाधि दी तथा सन् १९२४ में लन्दन की रॉयल सोसाइटी की फैलोशिप प्रदान की गई। सन् १९२४-२५ में उन्हें विदेशों से आमन्त्रण मिले और वे लम्बी यात्रा करने गये। सी० वी० रमन सन् १९२५ के आखिर में रूस की यात्रा पर भी गये।

सी० वी० रमन ने मुख्य रूप से प्रकाशिकी तथा ध्वनि के क्षेत्र में अनुसंधान कार्य किए हैं। उनका सुप्रसिद्ध कार्य प्रकाश की किरणों से संबंध रखता है। उनकी खोज रमन प्रभाव से जानी जाती है। जब प्रकाश की किरणें किसी चीज पर पड़ती है तो उसके अणु प्रकाश की किरणों को बिखेर देते हैं। इस तरह बिखेरने से उनमें विशेष प्रकार का परिवर्तन होता है। यह परिवर्तन 'रमन प्रभाव' कहलाता है।

रमन की इस खोज को बहुत महत्वपूर्ण माना गया। इसके द्वारा कई पदार्थों की रचना तथा उनके अणुओं की बनावट को समझा जा सकता है। इस खोज पर रमन को १९३० में नोबल पुरस्कार मिला। यह उनकी खोज के बहुत बड़े महत्व को प्रमाणित करता है।

ब्रिटिश सरकार ने सन् १९२९ में उन्हें 'सर' की उपाधि से विभूषित किया। स्वतन्त्रता के बाद हमारी राष्ट्रीय सरकार ने उन्हें 'भारत रत्न' की उपाधि प्रदान की। सन् १९५८ में रूस ने उन्हें लेनिन पुरस्कार से सम्मानित किया।

यह हमारा सौभाग्य है कि हम रमन के समकालीन हैं। उन्हें हम चलता फिरता देख सकते हैं। वे बंगलौर में निवास करते हैं।

रमन बहुत सरलता से रहने वाले महापुरुष हैं। उन्हें पेड़-पौधों का बड़ा शौक है। इनके विषय में उनकी जानकारी काफी गहरी है। दिखावे में उनका विश्वास नहीं है। उनके 'इन्स्टीट्यूट' के बाहर लिखा हुआ है—"यह स्थान सैलानियों के लिए नहीं यह तो विज्ञान की साधना का मन्दिर है।"

सर सी.वी.रमन

विनोदकुमार जैन, १० ब

[१९०१ में विश्व में पहली बार नोबल पुरस्कार दिया गया । अल्फ्रेड बर्न हार्ड नोबल नामक स्टाकहोम (स्वीडेन) के एक इंजीनियर ने मानव संहारक विस्फोटकों का आविष्कार किया और अपने धन की विपुल राशि के ब्याज से नोबल पुरस्कार योजना स्थापित की । प्रति वर्ष पांच पुरस्कार भौतिकी, रसायन, चिकित्सा, साहित्य और शांति-स्थापन के लिये दिये जाते हैं ।]

आंखों में आंसू लिए मैंने अपने इतिहास के पन्ने उलटे जहां पिछले सैकड़ों वर्षों में ऐसा व्यक्ति न हुआ कि ... पर विज्ञान के क्षेत्र में हम दुनिया में गर्व कर सकें......आज व्यक्ति हैं जिनने इस कमी को पूरा किया और हमें अपना मस्तक ... करने का अवसर दिया है । ये शब्द थे दार्शनिक डा० राधाकृष्णन ... सर सी० वी० रमन १९४५-४६ में होलकर कॉलेज के वार्षिक ... पर मुख्य-अतिथि के रूप में आये थे । सन् १९३० में सर ... रमन को भौतिक-शास्त्र में नोबल पुरस्कार मिला । यह ... कि इस घटना ने भारत की बढ़ती हुए प्रतिष्ठा ... चार ... दिये ।

डा० चन्द्र शेखर वेंकट रमन का जन्म ७ नवम्बर १८८८ को त्रिचनापल्ली में ... पिता गणित और भौतिक-शास्त्र के प्राध्यापक थे । ऐसा प्रतीत होता है कि पुत्र में पिता के ... बड़े रूप में मुखरित हुई ।

रमन बहुत निडर थे । वे बहुत तेजी से पढ़ने वाले तथा अथक परिश्रम करने ... की अवस्था में उन्होंने इंटरमीजिएट की परीक्षा पास की तत्पश्चात् वे मद्रास के प्रेसीडेंसी ... बी० ए० पढ़ने के लिये चले गये । १६ वर्ष की अवस्था में रमन ने एम० ए० की परीक्षा ...
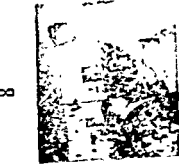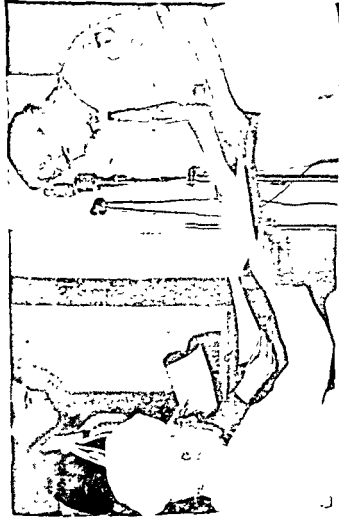
डॉ॰ होमी जहांगीर भा

सूरज प्रकाश स्वामी, कक्षा १० द

भौतिक विज्ञान मे हमारे देश मे कम प्रगति हुई है
अन्य देशो मे भौतिक विज्ञान मे काफी प्रगति
है। इस दृष्टि से हमे नीचा देखना पड़ता है। भारत का आधुनि
मे सम्पर्क उसी समय हुआ जबकि यूरोपीय जातियां भारत मे आ

आज का युग परमाणु-युग कहा जाता है। स्वतंत्र भा
सरकार ने सन १९४८ मे भारतीय अणु-शक्ति आयोग की स्थ
की। इस आयोग के भारतीय अध्यक्ष डा॰ भाभा चुने गये थे।
जीवन चरित्र प्रेरणाप्रद व ज्ञानप्रद रहा है।

श्री भाभा का जन्म सन् १९०९ में बम्बई मे हुआ था
काल से ही वे कुशाग्र बुद्धि के थे। १५ वर्ष की अवस्था में
हाई स्कूल की परीक्षा बम्बई से पास की। आपके पिता बुद्धिमान
कारण भाभा पर उनके व्यक्तित्व सम्बन्धी गुणों का प्रकाश पडा

जीवन के विकास के लिये उन्होंने दो विषयों को चुना; संगीत और विज्ञान। उनकी रु
और चित्रकला में थी। उन्हें इसमे अच्छे पुरस्कार भी मिले। डा॰ भाभा अध्ययन के लिये इंगलै
वहा उन्हें संगीत के अध्ययन का पूर्ण अवसर मिला।

सन् १९२६ मे इन्होंने एफ॰ आई॰ ए॰ की परीक्षा प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण की। एक वर्ष
करके आई॰ एस॰ सी॰ प्रथम श्रेणी में पास की। बाद में इन्होंने अपने लिये "भौतिक विज्ञान" क
चुना। इन्होंने इस विषयो में बहुत ऊंचे अंक प्राप्त करके सफलता प्राप्त की।

सन् १९३२ में गणित में उच्च शिक्षा के लिये उन्हे विलायत भेजा गया और ट्रिनिटी क
छात्र-वृत्ति प्राप्त करके वे मनोयोग से अध्ययन मे लीन हो गये। इस काल में उन्होंने प्रायः समस्त यु
यात्रा की और अपने ज्ञान को विस्तृत किया।
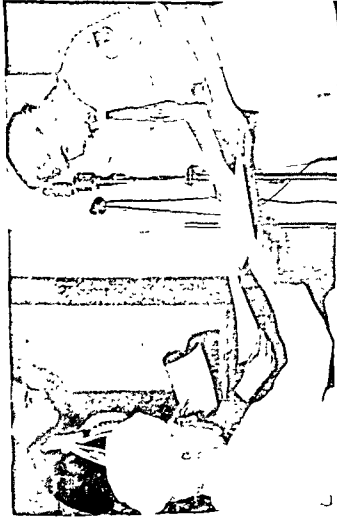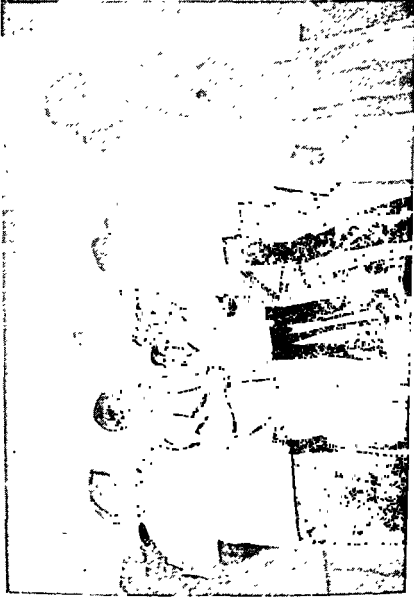
आतरिक्त शिक्षा निदेशक शिक्षकों की समस्याओं के समाधान विषयक वार्ता में निमग्न

यहाँ सन् १९३९ तक इनका भाषण जारी रहा। भाषणों के विषय विद्युत और विज्ञान सम्बन्धी थे। इन्होंने भारत में परमाणु-विज्ञान विषयक शिक्षा प्रारम्भ करने का कार्य किया।

सन् १९४१ में सोसायटी ने इन्हें अपना सदस्य मनोनीत किया। इससे संसार के वैज्ञानिकों में इनकी चर्चा होने लगी। सन् १९५१ में ये भारतीय साइंस कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये। सन् १९५५ के अगस्त में जेनेवा में परमाणु शक्ति का शांति के लिये प्रयोग विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय सभा हुई। इसमें डा० भाभा ने सभापति पद को सुशोभित किया। भारत ने परमाणु बम का निर्माण नहीं किया। इस क्षेत्र में चीन ही एशिया में सबसे आगे होने का दावा करता था। परन्तु डा० भाभा ने अधिकारपूर्वक स्पष्ट कर दिया था कि भारत अणु-शक्ति की खोज व परमाणु-शक्ति के विकास में कई गुणा आगे है और परमाणु बम के निर्माण में समर्थ है।

२० जनवरी १९६६ को यूरोप में पर्वत चोटी माउण्ट ब्लांक के समीप हुई एक विमान दुर्घटना में डा० भाभा भी थे। विमान दुर्घटना में उनकी भी मृत्यु हो गई। इससे भारत के विज्ञान जगत को जो क्षति हुई उसकी पूर्ति सहज सम्भव नहीं।

आविष्कार और आविष्कारक

विमल मित्र पुरोहित, कक्षा १० ब

आविष्कार	आविष्कारक	आविष्कार	आविष्कारक
रेडियम	एम० एस० क्यूरी	टाइपराइटर	सोल्स
टेलीविजन	जे० एल० बेयर्ड	टैंक	स्वीन्टन
बेतार का तार	मारकोनी	टेलीस्कोप	गेलीलियो
हवाई जहाज	राईट बन्धु	टेलीफोन	ए० ग्राहम बैल
साईकिल	मैकमिलन	थर्मामीटर	फॉरनहाइट
बैरोमीटर	टॉरिसैली	रेडियो	मारकोनी
भाप का इंजन	स्टीफेंसन	पनडुब्बी	बुश नैल
ग्रामोफोन	एडिसन	रिवाल्वर	काल्ट
हैलीकाप्टर	सेकवीट	सेफ्टी लैम्प	हम्फ्री डेवी
मशीन गन	डा० गेटलिंग	फाउन्टेन पेन	वाटरमेन
माइक्रोस्कोप	जॉनसन	गुब्बारा	माल्ट जालफार
रेडियो ट्रांसमीटर	अलेक्जेन्डर सन	तार	एस० मोर्स
छापाखाना	कैक्सटन		

करो और देखो - १

अपना ट्रांजिस्टर रेडियो बनाइये

गणेश कुमार स्वामी, ११ ई

[बीकानेर जिला विज्ञान मेला १९६५ में, गणेश कुमार ने तीन ट्रान्जिस्टर वाला एक रेडियो सेट बनाकर उसका प्रदर्शन किया । इस पर इनको भौतिकी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ । प्रस्तुत लेख में इन्होंने ट्रान्जिस्टर की व्याख्या करते हुए दो ट्रान्जिस्टरों की सहायता से एक लोकल रेडियो सेट बनाने की विधि बतलायी है ।—सं०]

आज के युग में रेडियो के प्रयोग से शायद ही कोई अनभिज्ञ हो । यह कहना कि किसी ने रेडियो सुना नहीं एक आश्चर्यजनक बात होगी । रेडियो कई प्रकार के होते हैं । कुछ रेडियो टेबिल मॉडल टाइप या घर में रखने योग्य होते हैं । कुछ पोर्टेबल टाइप या चलने-फिरने साथ रखने योग्य भी होते हैं । दूसरे प्रकार के रेडियो को बनाने में ट्रान्जिस्टर का बहुत योगदान रहा है। जिस रेडियो को हम ट्रांजिस्टर कहते हैं वह रेडियो ट्रांजिस्टर न होकर ट्रांजिस्टर उसका एक भाग होता है जो रेडियो के वाल्व (Vaccum Tube) का कार्य करता है ।

ट्रान्जिस्टर कैसे बने

रेडियो में वाल्व लगे रहते हैं । उनमें इलेक्ट्रॉनों का प्रवाह हो इसलिए उसके तन्तु (Filament) को गर्म करना पड़ता है, इस प्रकार वाल्व के कार्य करते समय बहुत सी ऊर्जा उष्मा रूप में नष्ट हो जाती है । इस उष्मा से आग लगने का भी भय रहता है । रेडियो में तो साधारणतः ४-५ पांच वाल्व लगे रहते है । इलेक्ट्रानिक मस्तिष्क आदि में तो सैंकडों वाल्व लगे रहते हैं, जिस

उष्मा से सारा यन्त्र ही नष्ट न हो जाए इसलिये उनमें ठण्डा करने के उपकरण लगाने पड़ते हैं। इन समस्याओं के निराकरण को वैज्ञानिक लोग प्रयत्नशील थे। अन्त में १९४८ में ब्रैटन एवं बारडीन नामक अमेरिकी वैज्ञानिकों ने एक पदार्थ के टुकड़े का सफल प्रयोग किया जो इलैक्ट्रोनिक ट्यूब या वाल्व का कार्य कर सकता है और उसकी तुलना में यह बहुत छोटा है तथा मूल्य में भी सस्ता है एवं बहुत कम उर्जा व्यय करता है इसे ट्रान्जिस्टर कहते हैं।

लेखक

ट्रान्जिस्टर की रचना एवं कार्य प्रणाली:—

ट्रान्जिस्टर जर्मेनियम नामक अर्धचालक धातु का बना होता है। यदि हम इसके क्रिस्टल को देखें तो हमें ज्ञात होता है कि दो तार एमीटर एवं कलैक्टर ट्रान्जिस्टर के एक ओर और एक तार बेस दूसरी सतह से निकले रहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं एक PNP प्रकार के व दूसरे NPN प्रकार के। इनकी इस प्रकार की रचना का कारण है कि ट्रान्जिस्टर शुद्ध जर्मेनियम धातु का नहीं बना रहता है। इसमें दो प्रकार की अशुद्धियां होती हैं। एक N प्रकार की जिससे इलैक्ट्रोनो की वृद्धि हो जाती है और धारा प्रवाहित होने लगती है इसको एमीटर अशुद्धि भी कहते है। दूसरी P प्रकार की अशुद्धि जिसमें इलैक्ट्रोनों की कमी अर्थात् पोजेटिव होल हो जाते हैं और धारा प्रवाहित होने लगती है इसको कलैक्टर अशुद्धि भी कहते हैं। ट्रान्जिस्टर PNP या NPN रूप में इन्हीं अशुद्धि का सामंजस्य होता है।
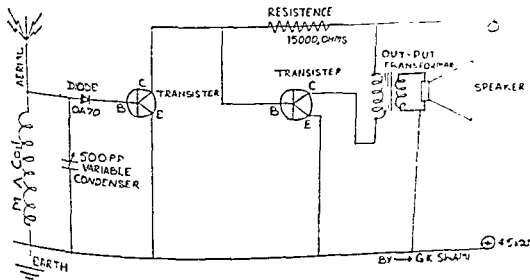
ट्रान्जिस्टर की विशेषताएं

[illegible] के [illegible] ½", ¾", ¼" [illegible] होते हैं। [illegible] हो जाता है। [illegible] के अनुसार [illegible] के अनुसार [illegible] सकते हैं। [illegible] का प्रयोग भी नहीं करना पड़ता है। [illegible] on करते ही चालू हो जाते हैं।

प्रयोग 1

आवश्यक सामग्री

- (१) [illegible]
- (२) [illegible] OA 70
- (३) [illegible]
- (४) वेरियेबिल कन्डेन्सर 500 P. F.
- (५) ट्रान्जिस्टर दो OC 71
- (६) रजिस्टेन्स 15 K.Ω
- (७) ट्रान्सफार्मर
- (८) स्पीकर
- (९) सैल 4·5 VOLTS

विधि और सावधानियां

सामग्रियों को चित्र में दिखाए अनुसार अच्छी तरह लगा दो। ट्रान्जिस्टर को लगाते समय उसको देखो। उस पर एक जगह रंगीन बिन्दु होता है। इसको कलैक्टर कहते हैं तथा इसके पास का तार बेस एवं अन्तिम तार एमीटर कहलाता है। हमेशा एमीटर को धन तथा कलैक्टर के ऋण सिरे से ही जोड़ें। कलैक्टर का सम्बन्ध धन सिरे से न होने पाए। टांके (Soldring) लगाते समय ट्रान्जिस्टर के तार पर गीला कपड़ा रख कर टांका लगाएं; गर्म होने से ट्रान्जिस्टर खराब होने का डर रहता है।

इसके अलावा मेरे दरबार के सदस्यों मे फास्फोरस, आयोडिन, ताम्बा, मेगनीशियम, लोहा, व मैंगनीज आदि पाये जाते हैं। हमारा जल विश्लेषण करने पर एमिनो अम्ल की प्राप्ति होती है। अतः हमारी रचना मे एमिनो अम्ल का मुख्य हाथ है।

अब आइये मैं आपको अपने कुछ गुणों के बारे मे बतलाऊंगा। लेकिन हां इससे आप कहीं मुझे मियां मिट्ठू न समझ लेना। वैसे तो मेरी प्रजा का वर्गीकरण कई भागों में किया गया है। इसका कारण उनके विभिन्न रासायनिक व भौतिक गुण हैं, फिर भी उनके विशिष्ट गुण एक से हैं।

प्रोटीन के विशिष्ट गुण

[१] हम प्रायः कलिल प्राकृति [Colloidal-Nature] के अकेलासीय पदार्थ हैं और हमारा गलनांक [Melting Point] भी निश्चित नही होता।

[२] हम प्रायः ऐलकोहल जल व ईथर से सम्बन्ध नही रखते हैं।

[३] गर्म करने पर हम स्कंदित [Coagulate] हो जाते हैं।

[४] हमारा जल विश्लेषण तनु हाइड्रोक्लोरिक अम्ल [Hydrochloric Acid] व तनु सलफ्यूरिक अम्ल [Dilute Sulphuric Acid] के साथ कई घन्टों तक उबालते रहने के पश्चात् होता है और तब एमिनो अम्ल की उत्पत्ति होती है।

[५] हमसे प्राप्त एमिनो अम्ल पचाने की क्रिया में बहुत सहायता करता है और रक्त की सहायता से पूरे शरीर में पहुंच कर शरीर को ठन्डाता है व शक्ति प्रदान करता है।

क्यों मेरा उपयोग आपके लिए अति आवश्यक है न !

युद्धों में गैसों का प्रयो[illegible]

कन्हैयालाल जोशी, कक्षा १० 'ब'

युद्ध मे गैसो का प्रयोग जनता व सनाओ आदि को परे[illegible]
करने, घायल करने या मारने आदि के लिए [illegible]
जाता है ।

गैसो को पाँच भेदो मे बांटा जा सकता है (१) [illegible]
वाली गैसें:— इन गैसो के प्रभाव मे [illegible] रुकने [illegible]
फेफडो पर बुरा असर पडता है । इनमे दो प्रकार की गैसें हैं—

(i) फॉसजीन:— यह सबसे प्रभावशाली गैस है । यह [illegible]
मे सडी हुई घास के समान लगती है । यह [illegible]
सास लेने मे कठिनाई पैदा करती है ।

बचाव — प्रभावित प्राणी के मुख पर गीला कपडा रखना चाहिए । [illegible]
व कंबल से ढक कर गर्म रखिये ।

(ii) क्लोरीन:— इसके प्रभाव से भी सास रुकने तथा गला घुटने की परेशानी अनुभव होने [illegible]
इसकी गध ब्लीचिंग पाउडर की तरह होती है ।

(२) नाक पर प्रभाव डालने वाली गैसें —

(i) डी. ए. (ii) डी. एम. (iii) डी. सी. । ये प्रायः गधहीन होती हैं । परन्तु [illegible]
[illegible] मे विलीन हो जाती हैं । शरीर पर पड़ने वाले असर को देखकर ही इनके [illegible]
[illegible] छींकें आने लगती हैं । नाक मे जलन भी होती है । मुँह, [illegible] मे भी [illegible] होती है । [illegible]
मनुष्य व जन्तुओं का शरीर कमजोर हो जाता है ।

बचाव:— इसमें मनुष्य को गर्म काफी या शराब पीना लाभदायक होता है। प्रभावित व्यक्ति को बाईकारबोनेट के घोल से कुल्ला करा देना चाहिए।

(३) आंसू लाने वाली गैसें:— इन गैसों का असर सीधा आंखों पर पड़ता है। इसमें सबसे अधिक प्रभावशाली गैस सी. बी. सी. है।

इसके प्रभाव से आंखों में चुभन व आंसू आना प्रारम्भ हो जाता है। पलकें भारी हो जाती हैं।

(४) फफोले पैदा करने वाली गैसें.— इन गैसों की पहिचान यह है कि परदे पर द्रव्य गैस की बूंद डालने से लाल धब्बे पड़ जाते हैं।

इस श्रेणी में तीन प्रकार की गैसें आती हैं:—

(i) मस्टर्ड गैस (ii) लेवी साइड गैस (iii) डिक गैस।

(५) रक्त में प्रभाव डालने वाली गैसें:— फेफड़ों के रास्ते से यह रक्त की शिराओं में असर डालती है।

बचने के सामान्य सिद्धान्त—

(i) यदि आप गैस के प्रभाव के समय कहीं मकान में हैं तो खुली जगह में मत जाइये।

(ii) यदि आप किसी खुले स्थान पर हैं तो हवा के रुख के विपरीत दिशा में भागिये ताकि प्रभाव क्षेत्र से शीघ्र बाहर जा सकें।

(iii) गैस से प्रभावित भोजन न किया जाये और न पीजिये।

(iv) दम घोटने वाली गैसों से प्रभावित व्यक्ति को इलाज के निमित्त सीधा पीठ के बल लिटाइये।

क्या आप जानते हैं ?

संकलनकर्ता · अयोध्या प्रसाद शर्मा "स्वदेश प्रेमी"

कक्षा दशम् 'ब'

साधारण नमक का रासायनिक नाम सोडियम क्लोराइड है। इसके लेटिन पर्याय सैलेरियम (Salarium) शब्द के आधार पर ही वर्तमान सेलरी (Salary) शब्द बना। प्राचीन काल मे रोमन सैनिको को नमक की थैलियों के रूप मे वेतन-सैलेरियम चुकाये जाने की प्रथा थी।

× × ×

मैसूर राज्य के माण्ड्या ग्राम मे एक नीम का पेड़ ऐसा है जिसकी कुछ शाखाए जो निकट के मंदिर की दीवार को छूती हैं, उनकी पत्तियां कड़वी नहीं हैं, जबकि अन्य पत्तियां कड़वी हैं। उसका अब तक कोई वैज्ञानिक कारण ज्ञात नहीं हो सका।

× × ×

दो दिल-एक शरीर। जी हां! एक शरीर मे दो दिल। नेपल्स के निवासी जिसूसेप-डी-माए का शरीर एक और दिल दो थे। दोनो हृदय सुचारु रूप से कार्य करते थे। लन्दन की एकेडमी ऑफ मेडिसन ने मरणोपरान्त उसका शरीर अनुसंधान के लिए मोल ले लिया।

× × ×

१. संसार का सबसे बड़ा सिनेमाघर रॉक्सी, न्यूयार्क है।

२. दुनिया का सबसे बड़ा शहर लंदन है।

३. विश्व का सबसे बड़ा पुस्तकालय लेनिन पब्लिक लाइब्रेरी, रूस है।

४. दुनिया का सबसे बड़ा गोल-गुम्बज बीजापुर का गोल गुम्बज, घेरा [illegible] फीट है।

क्या आप जानते हैं ?

संकलनकर्ता : अयोध्या प्रसाद शर्मा "स्वदेश प्रेमी"

कक्षा दशम् 'ब'

साधारण नमक का रासायनिक नाम सोडियम क्लोराइड है। इसके लेटिन पर्याय सैलेरियम (salarium) शब्द के आधार पर ही वर्तमान सेलरी (Salary) शब्द बना। प्राचीन काल में रोमन सैनिकों को नमक की थैलियों के रूप में वेतन-सैलेरियम चुकाये जाने की प्रथा थी।

× × ×

मैसूर राज्य के माण्ड्या ग्राम में एक नीम का पेड़ लगा है जिसकी कुछ शाखाएं जो निकट के मंदिर की दीवार को छूती है, उनकी पत्तियां कड़वी नहीं हैं, जबकि अन्य पत्तियां कड़वी हैं। इसका अब तक कोई वैज्ञानिक कारण ज्ञात नहीं हो सका।

× × ×

दो दिल-एक शरीर। जी हां! एक शरीर में दो दिल। नेपल्स के निवासी जिसेप-डी-माए का शरीर एक और दिल दो थे। दोनों हृदय सुचारु रूप से कार्य करते थे। लन्दन की एकेडमी ऑफ मेडिसन ने मरणोपरान्त उसका शरीर शल्य-परीक्षण के लिए मोल ले लिया।

× × ×

१. संसार का सबसे बड़ा सिनेमाघर रॉक्सी, न्यूयार्क है।
२. दुनिया का सबसे बड़ा शहर लदन है।
३. विश्व का सबसे बड़ा पुस्तकालय लेनिन पब्लिक लाइब्रेरी, रूस है।
४. दुनिया का सबसे बड़ा गोल-गुम्बज बीजापुर का गोल गुम्बज, घेरा १४४ फीट है।

५. ससार की सबसे बड़ी मीनार ऐफिल टॉवर जो २८४ फीट ऊची है ।

६. दुनिया का सबसे बड़ा भवन सोवियत प्रासाद, मास्को है ।

७. संसार का सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन मैराकोच है ।

८. दुनिया की सबसे बडी रेलवे सुरग स्विट्जरलैण्ड मे है ।

९. विश्व की सबसे बडी सडक ब्रॉडवे, न्यूयार्क है ।

१०. संसार की सबसे बडी झील टिटिकाका है ।

११. दुनिया की सबसे अधिक वर्षा चेरापूजी मे होती है ।

१२. विश्व की सबसे ऊची चोटी एवरेस्ट है ।

१३. मनुष्य का दिल दिन-रात मे एक लाख तीन हजार छः सौ नवासी बार धड़कता है।

१४. इस समय मे रक्त १६८ मील का सफर करता है ।

१५. रक्त पानी मे छः गुना भारी होता है ।

१६. पुरुष की नाडी एक मिनट मे ८० बार व स्त्री की नाड़ी ७२ बार चलती है।

१७. शरीर मे ५२० मांस-पेशियाँ एवं २०६ हड्डियाँ होती हैं ।

१८. अगर शरीर की खाल उधेडी जायँ तो वह १९ वर्ग फीट में फैल सकती है ।

१९ ससार मे सबसे बड़ा बाध फोर्टपेक, अमेरिका मे है। यह १३०४२१०१४ क्यूबिक गज मे है।

२०. विश्व का सबसे ज्यादा तापमान अजीजिया का है, १३६° फारेनहाइट।

२१. दुनिया मे सबसे बड़ी कृत्रिम झील, लेक मीड अमेरिका मे है ।

२२ विश्व मे सबसे बड़ा राजमहल, वेटिकन रोम मे है ।

२३ दुनिया का सबसे बड़ा गलियारा भारत मे है। यह ६,००० फीट है ।

२४. ससार मे सबसे बड़ी दीवार चीन मे है ।

२५. विश्व का सबसे बड़ा पार्क यलो स्टोन नेशनल पार्क अमेरिका मे है।

सबसे बड़ा म्यूजियम - ब्रिटिश म्यूजियम, लन्दन

सबसे बड़ा थियेटर—कैरेकिटा थिएटर (हवाना), १६५०० व्यक्ति बैठ सकते हैं।

सबसे लम्बी दीवार—चीन की दीवार, १५०० मील से अधिक लम्बा

सबसे बड़ा घंटा—जार कोलोकोल, क्रेमलिन (मास्को) ४८६० मन

सबसे ऊंचा वृक्ष—जेट सेकुइया वृक्ष हैम्बोल्ट स्टेट पार्क (कैलीफोर्निया, अमेरिका) ३६८ फीट

सबसे बड़ा जहाज - क्वीन एलिजाबेथ (रानी एलिजाबेथ)

सबसे बड़ा ग्रह—बृहस्पतिवार

पशु-पक्षी जगत की कुछ जानने योग्य बातें

कुत्ते की जाति में सबसे बड़ा जानवर—भेड़िया

सबसे लम्बा व सबसे लम्बी गर्दन का पशु—जिराफ

सर्वाधिक तेज गति से उड़ने वाला पक्षी - स्विफ्ट (२०० मील प्रति घण्टे की चाल से)

सबसे बड़ा, हिंसक व बिल्ली परिवार का जीव—सिंह

समुद्री चिड़ियों में सबसे बड़ी चिड़िया—अलबाट्रॉस (दक्षिणी समुद्र में पाई जाती है)

सबसे बड़ा समुद्री जीव—नीलह्वेल, ७५ फुट तक लम्बी होती है।

सबसे बड़ा अण्डा - शुतुरमुर्ग का अण्डा सबसे बड़ा होता है; यह ६-७ इन्च बड़ा और ४-६ इन्च व्यास का होता है।

सर्वाधिक दीर्घायु का पक्षी—शुतुरमुर्ग।

सबसे भारी चिड़िया—कोमोंडो, यह १२ फुट लम्बी २५० पौंड भार तक की पाई गई है। (दक्षिणी अमेरिका में यह पाई जाती है और गिद्ध की जाति की है)

सबसे बड़ा और भारी जानवर - ब्लू ह्वेल।

सर्वाधिक दीर्घायु जलचर—ब्लू ह्वेल (५०० वर्ष)

सबसे छोटा जीवित प्राणी—हमिंग बर्ड (भन-भन शब्द करने वाली एक प्रकार की चिड़िया)

मनुष्य से सर्वाधिक मिलता-जुलता जानवर—वनमानुष, गुरिल्ला।

थोड़ी दूर में सर्वाधिक तेज चाल से चलने वाला जानवर - चीता।

सबसे बड़ा पशु—अफ्रीका का हाथी।
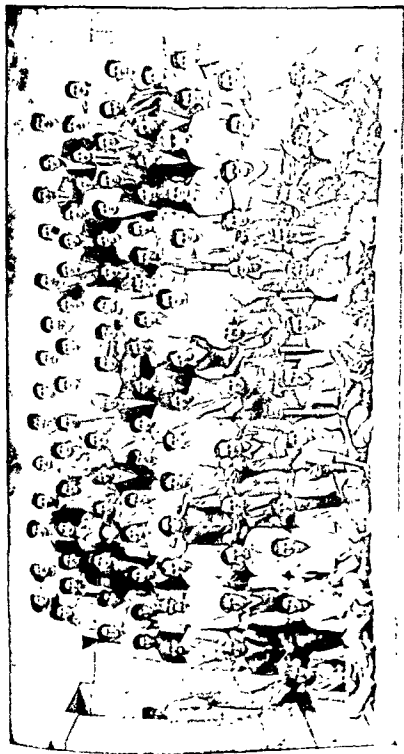
शिक्षा निरीक्षक कक्षा ११ (जीवविज्ञान) के मध्य

कक्षा ११ (कला विभाग)

करो और देखो - २

हाइड्रोजन सल्फाइड गैस से कुछ रोचक प्रयोग

विजय कुमार गुप्ता ११ ई

[बीकानेर जिला विज्ञान मेला १९६५ में विजय कुमार ने रसायन मे प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया ।—सं०]

आसुत जल मे हाइड्रोजन सल्फाइड गैस को घोल कर उसका विलयन तैयार कर लिया । यह विलयन ताजा होना चाहिए ।

पीले अक्षर बनाना

कैडमियम सल्फेट लवण को आसुत जल मे घोल कर उसका विलयन तैयार कर लिया । अब एक सफेद कागज पर इस विलयन मे कुछ भी लिख लिया । इसको सूखने दिया । जब यह सूख गया तो इस पर ब्रुश की सहायता से हाइड्रोजन सल्फाइड गैस का विलयन फेरा, तो हम देखेंगे कि वो अक्षर जो अब तक हमें नजर नहीं आ रहे थे, अब पीले रंग के अक्षरों मे साफ नजर आ रहे है ।

काले अक्षर बनाना

लैड नाईट्रेट को आसुत जल में घोल कर उसका विलयन तैयार कर लिया । अब एक सफेद कागज पर इस विलयन से कुछ भी लिख दिया । इसको अब सूखने दिया । जब यह सूख गया तो इस पर ब्रुश की सहायता से हाइड्रोजन सल्फाइड गैस का विलयन फेरा, तो हम देखते है कि जो अक्षर जो अब तक हमें नजर नही आ रहे थे अब वे काले रंग में साफ नजर आ रहे ।

नारंगी अक्षर बनाना

एन्टीमनी सल्फेट को आस्त्रुत जल में घोल कर उसका विलयन तैयार कर लिया। अब एक सफेद कागज पर इस विलयन से कुछ भी लिख लिया। इसको अब सूखने दिया। जब यह सूख गया तो इस पर एक ब्रुश की सहायता से हाइड्रोजन सल्फाइड गैस का विलयन फेरा तो हम देखते हैं कि वो अक्षर जो अब तक हमें नजर नहीं आ रहे थे, अब नारंगी रंग में साफ नजर आएंगे।

खिलौना बनाइये

रमेश चन्द्र गौड, १० ब

सामग्री.—$1\frac{1}{2}$ इंच लम्बा, $\frac{1}{2}$ इंच चौड़ा व $\frac{1}{2}$ इंच ऊँचा एक लकड़ी का टुकड़ा, व दो पथरी जो कि लाइटर के प्रयोग में लाई जाती हैं और एक ब्लेड का टुकड़ा।

विधि:—सर्व प्रथम लकड़ी के टुकड़े को जमीन पर सीधा रखकर उसके मध्य में थोड़ी थोड़ी दूरी पर कील व हथौड़ी की सहायता से दो छेद पथरी के नाप के कर देंगे। फिर उन पथरियों को उन छेदों में फंसा देंगे। यह ध्यान रखें कि पथरी ढीली न रह जाय। इस प्रकार यह छोटा-सा खिलौना बनकर तैयार हो गया। यह दिवाली के अवसर पर अधिक शोभा देता है। अब एक हाथ में लकड़ी का टुकड़ा लेकर तथा दूसरे हाथ में ब्लेड का टुकड़ा लेकर इन पथरियों के ऊपर रगड़ेंगे जिससे चिनगारियां उत्पन्न होंगी।

बिजली के खतरे से बचने के उपाय

विनय कुमार चौधरी, कक्षा ११ 'बी'

[विनय कुमार ने बीकानेर जिला विज्ञान मेला १९६५ में एक बिजली का लेम्प—"जय जवान, जय किसान" बनाकर प्रदर्शित किया। लेम्प की चिमनी पर घूमती हुई विभिन्न रंगों के प्रकाश की किरणें पड़तीं तो दर्शक मंत्र-मुग्ध हो उसको देखते रह जाते। चिमनी के आधे भाग पर सीमा पर लड़ने वाले 'जवान' की छाया थी तो शेष भाग पर 'किसान' की। इस उपकरण पर इनको भौतिकी में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। —सं०]

विज्ञान के सबसे बड़े आश्चर्यों में से एक बिजली भी है जो कि मनुष्य के जीवन में बहुत उपयोगी सिद्ध हुई है। आधुनिक युग में मनुष्य का प्रत्येक दैनिक कार्य बिजली के द्वारा ही सम्पन्न होता है। आज के युग में हम बिना बिजली के किसी कार्य के करने का स्वप्न भी नहीं देख सकते। मनुष्य के जीवन में बिजली जितनी उपयोगी सिद्ध हुई है उतनी ही हानिकारक भी।

यदि हम बिजली का उपयोग करना चाहते हैं तो हमें यह भी सीखना होगा कि कौन-कौन से कार्य [illegible] जिससे हम बिजली के खतरे से बचे रह सकें।

बिजली के खतरे से बचने के नियम निम्न लिखित हैं —

१. स्विच को गीले या नम हाथों से कभी नहीं छूना चाहिये। क्योंकि [illegible] बिजली का [illegible] है, इसके कारण बुरी तरह जल भी सकते हैं या बहुत [illegible] है। [illegible] बिजली के किसी उपकरण को छूने से पहले [illegible] है।

२. [illegible] पर बहुत अधिक लोड (लोड) [illegible] बिजली के सूत्र से उपकरण [illegible]

नाक होता है । इससे शार्ट हो सकता है या तारो के आपस में मिल जाने के कारण आग भी लग सकती है ।

३. बिजली के तारों को गलीचों और चटाइयों के नीचे कभी नही रखने चाहिये क्योंकि यदि किसी तार मे कही से शार्ट सर्किट हो रहा है, और गलीचा या चटाई गीली हुई तो उस में करन्ट आ सकता है और बैठने वाले को जोर का झटका भी लगने की सम्भावना रहती है ।

४. फ्यूज बक्स में पैसा कभी नही लगाना चाहिये । ठीक आकार के फ्यूज इस्तेमाल करने चाहियें ।

५ यदि रेडियो सेट का स्विच ग्रान हो तो उसके साथ छेड़-छाड़ कभी नहीं करनी चाहिये रेडियो सेट मे यदि कोई तार बिना आवरण (कवर) के होगा तो झटका लग सकता है या वह ह जला सकता है ।

६. यदि गीले फर्श पर खडे हों तो बल्ब जलाने के स्विच को कभी नही छूना चाहिये और फर्श पर खडे हो कर कभी भी बिजली से छेड-छाड नही करनी चाहिये क्योकि हम ऊपर बता चुके है कि वस्तु बिजली की संवाहक होती है ।

७. जब हम स्नान कर रहे हो या गीले हों तो बिजली के किसी उपकरण, स्विच या रेडि कभी नही छूना चाहिये ।

८. जब बिजली चमक रही हो और आंधी व वर्षा आ रही हो तो उस समय तालाब, भी नदी के भीतर कभी नही रहना चाहिये ।

९. आधी-पानी या तूफान मे अथवा उसके बाद टूट कर गिरे हुए बिजली के तार को भूलक नही छूना चाहिये ।

१० दीवार पर सॉकेट मे प्लग के अतिरिक्त कोई दूसरी वस्तु कभी नही डालनी चाहिए ।

११. जब बिजली चमक रही हो और बादल गरज रहे हों तो किसी पेड के नीचे या उसके नि कभी नही रहना चाहिये । उस पेड पर बिजली गिर सकती है क्योंकि कुछ बादलो पर धन विद्युत होती है पेड़ पर उस के विपरीत विद्युत उत्पन्न हो जाती है जिस के कारण ये विजातीय विद्युत आविष्ट बादल स आते हैं और एक दूसरे के आवेश को नष्ट करने के कारण ही पेड़ जल जाता है । इस लिये जो उस पेड़ के होगा वह भी जल जायेगा ।

१२. बिजली ठीक करते समय रबड के जूते तथा दस्ताने पहन लेने चाहिये । इन के का बिजली की धारा हमारे शरीर में प्रवाहित नही होने पाती और न ही धक्का लगता है । जूते तथा दस कुचालक होने के कारण विद्युत-धारा को प्रवाहित होने व उसका पृथ्वी में सम्बन्ध होने से रोकते हैं ।

विद्युत के तार से कोई जीवधारी उसी समय चिपकता है जब कि विद्युत का परिपथ (Circu पूर्ण हो जाता है । यह दो अवस्थाओं मे हो सकता है (१) कोई प्राणी दोनों तारों को पकड़ लेता है । (अथवा एक तार को पकड़ कर पृथ्वी पर खड़ा हो जाता है । इस परिपथ को अपूर्ण करने के लिये ही रबड़ के जूते तथा रबड के ही दस्ताने पहनते हैं ।

मौसम जानने के कुछ यंत्र

रानी भंवर करणी सिंह, ११ स

थर्मामीटर

थर्मामीटर तीन प्रकार के होते हैं । सेण्टीग्रेड, फारेनहाइट और रियूमर । इनमें हम सेण्टीग्रेड थर्मामीटर को काम मे लाते हैं। जब तापमापी की नली के निचले सिरे पर बनी घुंडी का पारा गरम हो जाता है तो वह फैलने लगता है । नली के पास बने पैमाने की संख्याओं से तापमान का अंश या डिग्री मालूम होता है ।

हवा-मुर्ग

हवा की दिशा मालूम करने के लिये हवा-मुर्ग या 'विंड वेन' को काम मे लाया जाता है । इसका तीर उस दिशा की ओर संकेत करता है जिधर से हवा आती है । इस प्रकार इससे हम हवा की दिशा ज्ञात कर सकते है ।

एनीमोमीटर (वायु वेग मापी)

इस यंत्र मे कटोरियां होती है, जो हवा से घूमती रहती है । जब हवा उन कटोरियों में भर [illegible] है तो उसकी रफ्तार के अनुसार धीरे-धीरे या अधिक वेग से घूमने लगती है । इससे हम वायु का [illegible] कर सकते है ।

एनेरॉयड बैरोमीटर

इस बैरोमीटर का उपयोग वायुमण्डल का दाब जानने के लिये किया जाता है । [illegible] डिबिया होती है जिस पर एक सुई लगी रहती है । डिबिया पर पड़ने वाले वायु के दबाव से [illegible] सुई घूमने लगती है, इस प्रकार हम वायुमण्डल का दाब ज्ञात कर लेते है ।

मेघ दिशासूचक (नेफोस्कोप)

यह प्रतिबिम्ब के जरिये बादलों की दिशा की सूचना देता है । आकाश में चलने वाली हवा की दिशा जमीन के पास चलने वाली हवा की दिशा से आम तौर से भिन्न होती है । इसलिये इससे बादलों की दिशा ज्ञात कर लेते हैं ।

आर्द्र-मापी

इस यन्त्र में थर्मामीटर की घुंडी पर गीला कपड़ा लपेट दिया जाता है । हवा में कितनी नमी है यह पानी के भाप बनने की रफ्तार से मापा जाता है । क्योंकि इससे तापमापी ठन्डा होता है । इस साथ ही लगे सूखी घुंडी वाले एक अन्य तापमापी तथा चार्ट के प्रयोग से सापेक्ष आर्द्रता मालूम हो जाती है ।

वर्षामापी

साधारणतया यह एक बेलनाकार बर्तन होता है जिसमें एक कीप लगी रहती है, इसको वर्षा होते समय बाहर मैदान में रख देते हैं तथा वर्षा बन्द होने पर इसमें एकत्रित हुए जल को नापने जार से नाप लेते हैं । इस जार पर इन्चों के निशान होते हैं । इससे हमें यह ज्ञात हो जाता है कि वर्षा कितने इन्च हुई ।

विज्ञान की बातें

शंकरलाल शर्मा, ११ ब

आलेस्सांद्रो वोल्टा (१७४५-१८२७), इटली, ने पहली बार वह सैल बनाया जिससे विद्युत धारा उत्पन्न हो सकी । आपने ही लीडन-जार की कार्य-विधि की नवीन व्याख्या की एवं नवीन स्थितिज विद्युत-उत्पादक मशीनें बनायीं ।

× × ×

आन्द्रे मारिए एम्पियर (१७७५-१८३६), फ्रांस, ने विद्युत पर महत्वपूर्ण खोज की तथा प्रसिद्ध 'तैरने वाला नियम' प्रतिपादित किया ।

× × ×

अलेक्जेन्डर ग्राहम बेल (१८४७-१९२२), अमेरिका, ने टेलीफोन, टेलीफोन-प्रोब, फोटोफोन, उपपादनतुला आदि आविष्कार किये ।

मेघ दिशासूचक (नेफोस्कोप)

यह प्रतिबिम्ब के जरिये बादलों की दिशा की सूचना देता है । आकाश में चलने वाली हवा की दिशा जमीन के पास चलने वाली हवा की दिशा से आम तौर से भिन्न होती है । इसलिये इससे हम बादलों की दिशा ज्ञात कर लेते हैं ।

आर्द्र-मापी

इस यंत्र मे थर्मामीटर की घुंडी पर गीला कपड़ा लपेट दिया जाता है । हवा मे कितनी नमी है यह पानी के भाप बनने की रफ्तार से मापा जाता है । क्योंकि इससे तापमापी ठन्डा होता है । इसके साथ ही लगे सूखी घुंडी वाले एक अन्य तापमापी तथा चार्ट के प्रयोग से सापेक्ष आर्द्रता मालूम की जाती है ।

वर्षामापी

साधारणतया यह एक बेलनाकार बर्तन होता है जिसमे एक कीप लगी रहती है, इसको वर्षा होते समय बाहर मैदान मे रख देते हैं तथा वर्षा बन्द होने पर इसनें एकत्रित हुए जल को नपने जार से नाप लेते हैं । इस जार पर इन्चों के निशान होते हैं । इससे हमें यह ज्ञात हो जाता है कि वर्षा कितने इन्च हुई ।

विज्ञान की बातें

शकरलाल शर्मा, ११ ब

आलेस्सांद्रो वोल्टा (१७४५-१८२७), इटली, ने पहली बार वह सैल बनाया जिससे विद्युत धारा उत्पन्न हो सकी । आपने ही लीडन-जार की कार्य-विधि की नवीन व्याख्या की एवं नवीन स्थितिज विद्युत-उत्पादक मशीनें बनायीं ।

× × ×

आन्द्रे मारिए एम्पियर (१७७५-१८३६), फ्रांस, ने विद्युत पर महत्त्वपूर्ण खोज की तथा प्रसिद्ध 'तैरने वाला नियम' प्रतिपादित किया ।

× × ×

अलेक्जेन्डर ग्राहम बेल (१८४७-१९२२), अमेरिका, ने टेलीफोन, टेलीफोन-प्रोब, फोटोफोन, उपपादनतुला आदि आविष्कार किये ।

इसके बाद एक कठिनाई और है कि हम बिना आक्सीजन के तो रह नहीं सकते
की ऊँचाई पर मनुष्य बिना आक्सीजन के २ मिनट में ही मर जायेगा। लेकिन इसको भी हल
हमारे पास दावानुकूलित केबिनें और ऐसे वस्त्र हैं जो अन्तरिक्ष में पहने जाने वाले मनुष्य
की अन्तरिक्ष दाब बर्दाश्त करने की क्षमता प्रदान करते हैं। इस प्रकार मनुष्य अपने वायुमण्ड
ले जायेगा।

जैसे-जैसे उपग्रह आकाश में भेजे गये वापिस आने पर वे एक चौथी और भय
सूचना लाये कि प्रोटोन या इलैक्ट्रोन अन्तरिक्ष मे ६०,००० या इससे भी अधिक मीलों त
और इसका प्रभाव प्रत्येक ६० मील पर दुगना होता जाता है। यह कठिनाई-अन्य सभी कठिना
भयंकर है। परन्तु अन्य कठिनाइयां भी तो हल किये जाने तक भयंकर थीं। मनुष्य इस कठिन
उपचार अवश्य ढूंढ निकालेगा।

चन्द्रमा से वापिस पृथ्वी तक सकुशल आने में अभी तक ऐसी भयंकर समस्याए
शीघ्र कर लिया जायेगा।

ये घातक कास्मिक रश्मियां !

पृथ्वी के चारो ओर मौजूद वायुमण्डल हमारी सुरक्षा अन्य तरीकों से भी करता है
व्याप्त कास्मिक रश्मियां घने वायुमण्डल के कारण हम तक पहुँच नहीं पाती हैं। अल्ट्रावायले
वायुमण्डल में छनने २ प्रति न्यून मात्रा में हम तक पहुँचती हैं। अतः पृथ्वी पर रहने
कास्मिक रश्मियों तथा तीक्ष्ण अल्ट्रावायलेट रश्मियों को सहन करने की क्षमता नहीं है।
तीक्ष्ण रश्मियां हमारे शरीर में प्रवेश करेंगी तो इनकी विकीर्ण उर्जा के प्रभाव से शरीर
जायेंगे। अतः अन्तरिक्ष में जाने के लिए हमें ऐसे वस्त्रों की आवश्यकता होगी जिन्हें भेद कर
हमारे शरीर तक पहुँच न सकें।

प्रचण्ड ताप से सुरक्षा !

अन्तरिक्ष यात्रा में एक और कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। जिस समय
यान तीव्र वेग से पृथ्वी से आकाश की ओर उठेगा, वायुमण्डल के घर्षण से बहुत गर्मी उत्पन्न
कि समूचा यान जलकर राख हो सकता है। यदि यान उतना गर्म होकर नहीं भी जला तो उस
यात्री तो कम से कम भुलस कर मर जायेंगे। किन्तु जब यान किसी ग्रह की अथवा पृथ्वी की
तब उसे गर्मी प्राप्त करने का कोई साधन नहीं रहेगा। तब वह अत्यन्त ठण्डा हो जायेगा। उस
भी हमारी जीवनलीला समाप्त हो सकती है। इसलिए यान की इस प्रकार रचना करनी होगी
परिस्थितियों में उसके अन्दर का ताप हमारे लिए उपयुक्त बना रह सके। ये सब ऐसी सम
हमारा आज का विज्ञान सन्तोषप्रद रूप से हल कर चुका है। इनके अतिरिक्त और भी समस्याए
जिन्हें आधुनिक विज्ञान को हल करना होगा।

चन्द्रमा की दूरी एक प्रकाश सैकेन्ड और सूर्य की दूरी आठ प्रकाश मिनट है। प

तारा "अल्फा सेन्टौरी" हमसे चन्द्रमा तक पहुँचने की गति द्वारा भी १३०,००० वर्ष की दूरी पर है तो मनुष्य की यात्रा का कुछ भी महत्व नहीं रह जायेगा। परन्तु इसमें कोई शक नहीं कि यान्त्रिक मनुष्य इतनी लम्बी दूरियों तक जाने के लिए तत्पर रहेगा। वैज्ञानिक आयन-रॉकेटों के सिद्धान्त का अध्ययन रहे हैं। न्यूक्लियर प्रतिक्रियाएं अधिक से अधिक रासायनिक प्रतिक्रियाओं से लाखों गुनी अधिक शक्तिशाली हैं। विद्युत् चार्ज युक्त परमाणु त्वरित किये जाने पर प्रकाश के वेग जितने तीव्रगामी हो सकते हैं। हम अर्थ में कह सकते हैं कि आधुनिक विज्ञान के सामने कल के विज्ञान की कल्पनाएं टिक नहीं रही हैं। वे तो भूत काल की बातें बन रह गई हैं।

विज्ञान का भविष्य पृथ्वी पर असीमित सम्भावनाओं से भरा हुआ है और जब समय आयेगा तो ऐसे विशाल अन्तरिक्ष-यान अन्य ग्रहों पर जाकर आबादी बसा देंगे।

विज्ञान-वार्ता

आर्किमिडिज (२१२ बी. सी.) इटली, ने जल उत्प्लावन पर खोज की तथा आर्किमिडीज का सिद्धान्त नामक प्रसिद्ध नियम प्रतिपादित किया। यह अपने समय के सबसे बड़े वैज्ञानिक व गणितज्ञ माने जाते हैं।

× × ×

अल्बर्ट आइन्सटीन (१८७९-१९५५) जर्मनी, जाति से यहूदी थे जिसके कारण महायुद्ध में इन्हें भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। आपने सापेक्षिकता-सिद्धान्त, ऊर्जा व द्रव्य, ब्राउनियन गति का सिद्धान्त, निःसरण और शोषण का क्वांटम सिद्धान्त, ठोस पदार्थों के विशिष्ट ताप का सिद्धान्त आदि आदि क्रान्तिकारी आविष्कार किये।

× × ×

जार्ज साइमन ओहम (१७८७-१८५४), जर्मनी, ने प्रतिरोध के विषय में अपना प्रसिद्ध नियम प्रतिपादित किया।

(४) पहले आप कोई संख्या सोच लें। उसमें आप ९ की गुणा कर दें। गुणा करने पर जो
उसके एक अंक को छोड़ कर बाकी को जोड़ लें। अब उसमें ९ का भाग देदो। परन्तु भाग इस प्रकार
कि जितनी बार भाग जावे उससे १ बार ज्यादा तक दो। अब नीचे वाली में से ऊपर वाली संख्या घटा
देने पर आवे वही अंक आपने छोड़ा है।

क्रिया:—माना आपने एक संख्या २४६८१ सोची। अब उसमें ९ की गुणा कर दो। गुणा
से संख्या २२२१२९ आयी। इसमें से एक अंक माना १ छोड़ा अब संख्या जोड़ लो। जोड़ने पर
लो। अब ९ का भाग दो। भाग १ बार जाता है पर आप भाग २ बार दें। आपकी संख्या १८ आयी
१८ में से १७ घटाने पर १ आया। और आपने १ ही छोड़ा था।

गणित के खेल [प्रथम] का उत्तर = २ सतरे

विज्ञान के चमत्कार

जेम्स वाट् (१७३७-१८१९), स्काटलेंड, ने भाप का इंजिन बनाया।

×

लुईजि गाल्वानी (१७३७-१७९८), इटली, ने पता लगाया कि रासायनिक क्रिया
द्वारा बिजली उत्पन्न करना सम्भव है। एक बार जब आप अपनी बीमार पत्नी के लिए मेंढक
का शोरबा बना रहे थे, तो आपने ताजा मारे गये मेंढकों की टांगों में एक प्रकार के तार लगे
स्पन्दन को देखा। इसी घटना से यह महान् खोज सम्भव हो सकी।

×

विल्यु एल्मो मार्कोनी (१८७४-१९३७), इटली, ने ही पहले रेडियो तरंगों द्वारा
संदेशों को भेजा तथा रेडियो का आविष्कार किया।

×

सर जार्ज व्हीटस्टोन (१८०२-१८७५) इंगलैंड, ने टेलीग्राफी के विषय में अनुसंधान
किया। आपने स्टीरियोस्कोप, टाइप-राईटर, रिहोस्ट, प्रतिरोध मापने वाले यन्त्र, बिजली
से चलने वाली घड़ियां तथा टेलीग्राफ मीटर का आविष्कार किया।

भारत में परमाणु-शक्ति पर अनुसंधान

विजय कुमार गोस्वामी, कक्षा ११ स

भारत मे परमाणु शक्ति पर अनुसधान के हेतु सन् १९४८ ई० में एक आणविक शक्ति कमीशन (Atomic Energy Commisson) की स्थापना हुई। श्री होमी जहांगीर भाभा इसके अध्यक्ष चुने गये थे। उनकी देख रेख में अत्यन्त ही महत्वपूर्ण कार्य हो रहा था। हमारा देश केवल मानवहित से सम्बधित उपयोगों पर ही अनुसधान कर रहा है हालांकि भारत इस समय इस अवस्था मे है कि वह अगर चाहे तो परमाणु बम भी बना सकता है।

परमाणु शक्ति प्राप्त करने के लिए हमारे पास यूरेनियम धातु पर्याप्त मात्रा मे है इसके अतिरिक्त "थोरियम" (Thorium) नामक धातु केरल के पूर्वी तथा पश्चिमी तटों पर मोनेजाइट (Monezite) बालू के रूप मे भी बहुत मिलती है। अतः इस हमारे पास अनन्त भडार है परन्तु अंत में हमे यही थोरियम परम ईधन के रूप में लेना होगा। इस 'थोरियम" धातु का विघ निम्न प्रकार से हो सकता है :—

$$Th^{232}_{90} + n \rightarrow Th^{233}_{90} - e \rightarrow Pa^{233}_{91} \rightarrow U^{233}_{92}$$
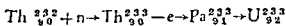
अर्थात् २३२ परमाणु भार वाले थोरियम का Nucleus एक न्यूट्रोन अपने मे मिला एक अस्थाई थोरियम २३३ बन जाता है। इसमे से एक बीटा कण (particle) निकल जाता है प्रोटोएक्टीनियम (Protoactinium) जिसका परमाणु भार २३३ तथा परमाणु सख्या ९१ होती बन जाता है। इसमे से भी एक बीटा कण निकलता है जिससे कि यूरेनियम २३३ बन जाता है यूरेनियम का यह समस्थानीय U238 की भाति विखडित होकर शक्ति पैदा कर सकता है।

दूसरा परमाणु ईधन प्लूटोनियम है जो U238 से प्राप्त होता है।

इन परमाणु ईंधनों का उपयोग परमाणु भट्टी में किया जाता है जो कि निम्नलिखि नाम से पुकारी जाती है:—

(१) अप्सरा।

(२) कनाडा-भारत परमाणु भट्टी ।
(३) जरलीना ।

उपरोक्त तीनो रिऐक्टर बम्बई के पास ट्राम्बे स्थान पर एटामिक एनर्जी संस्थान में स्थित है।

अप्सरा (APSARA)

४ अगस्त १९५६ को इसका उद्घाटन हुआ । यह एक प्रकार की भट्टी है जिसे स्वीमिंग पूल रिऐक्टर कहते हैं । यह पानी का एक तालाब है जिसमें अल्युमिनीयम के आवरण में लपेट कर यूरेनियम की छड़ें लटकाई गयी हैं । इन छड़ो के U^{235}, ५० % हैं । इनमें न्यूट्रोन शोषण के लिए कैडमियम से प्राप्त चार छड़ें काम में लाई गयी है भारी पानी का उपयोग किया गया है । इस रिऐक्टर के चारों ओर सीमेंट की दीवार है जिसकी मोटाई नीचे की ओर ९ फुट है । यह दीवार ऊपर की ओर पतली की गयी है । इस रिऐक्टर में रेडियो आइसोटोप्स तैयार किये जाते हैं जिन्हें देश के विभिन्न अस्पतालों तथा प्रयोगशालाओं में भेजा जा रहा है, जहां पर उनका उपयोग रोगियों के उपचार तथा अनुसंधान में किया जा रहा है ।

कनाडा-भारत परमाणु भट्टी

इस रिऐक्टर ने १० जुलाई सन् १९६० को कार्य शुरू किया । यह कोलम्बो प्लान के अंतर्गत तथा कनाडा के सहयोग से लगभग १० करोड़ रु० की लागत से तैयार हुआ है । इसमें ११ टन प्राकृतिक यूरेनियम तथा २७५० गैलन या १५ टन भारी पानी का इस्तेमाल किया गया है ।

इस समस्त भट्टी को एक इस्पात के आवरण से ढक कर रखा गया है, जिसकी मोटाई ... इंच है, जिससे रेडियमधर्मी विकिरण बाहर नहीं आ सकें । इस आवरण का गुम्बद १३८ ... का व्यास १२० फुट है । एक ३२८० फुट लम्बी तथा ४० इंच व्यास की पाइप लाइन ... भट्टी को समुद्र से जोड़ती है । इसमें से होकर समुद्र से प्रति मिनट १५,००० गैलन पानी ... है जो ताप-विनिमायकों तक पहुँचता है । भट्टी के (Air-cooled) विभाग में भी वायु के ... ठंडा करने की व्यवस्था की जाती है तथा वहां पर जो ताप पैदा होता है उसे इस वायु द्वारा हटा ... जाता है । इस वायु को ४०० फुट ऊंची चिमनी से निकाल दिया जाता है । भट्टी स्वयं एक ... बेलनाकार तालाब है । इसके चारो ओर विभिन्न प्रकार के यंत्र इसके नियंत्रण तथा ... करने के लिए लगे हुए है । परमाणु ईंधन .यूरेनियम की १९२ छड़ें जिनका भार १½ टन ... है कार्य शुरू करने के लिए भट्टी में डाल दी जातीहै। इनमें से प्रत्येक छड़ एल्युमिनीयम में ... है और १० फुट लम्बी ,डेढ़ इंच व्यास की तथा भार में १२० पौंड है । इन छड़ों को ... प्राप्त किया गया है तथा इनमे-में कई छड़ो को भारत ने ही ट्राम्बे में तैयार किया है । ... के बाद केवल एक भारत ही ऐसा देश है जिसने परमाणु भट्टी के लिए ईंधन स्वयं तैयार ... है। ... जिसका भारत मे अपार भंडार है, अनुसंधान हेतु इस भट्टी में इस्तेमाल किया ... के लिए ३० थोरियम की छड़ों के ऊपर न्यूट्रोन्स के आघात का प्रभाव जानने के लिए

भट्टी में पर्याप्त स्थान रखा गया है।

इस परमाणु भट्टी में लगभग ४५ लाख रुपये का रेडियो कोबाल्ट, जो कि कैन्सर निदान के लिए अत्यंत आवश्यक है, विदेशों को प्रति वर्ष भेजा जाता है। इस रिएक्टर में प्रयुक्त भारी पानी के जरिये भारत सरकार ही परमाणु भट्टी बनाने की योजना पर विचार कर रहा है।

जरलीना Zerlina

यह भट्टी अभी तैयार की जा रही है। आशा है कि यह इस वर्ष में ही बन कर पूर्ण तैयार हो जायेगी।

प्रथम विद्युत स्टेशन:— भारत के प्रथम बिजली-घर का निर्माण आजकल जोरों से चल रहा है। यह बम्बई तथा अहमदाबाद के बीच तारापुर गाँव के समीप स्थित है और यह दोनों क्षेत्रों को बिजली देगा। अनुमान किया जाता है कि यह स्टेशन बहुत अधिक बिजली उत्पन्न करेगा। यहां पर शक्ति प्राप्त करने के हेतु दो परमाणु भट्टियाँ बनाई जा रही हैं जिनमें से प्रत्येक १५०,००० किलोवाट शक्ति देगी।

इसके साथ ही ईंधन के लिए बिहार में एक खान से यूरेनियम निकाला जायेगा। इस यूरेनियम खनिज से शुद्ध यूरेनियम प्राप्त करने के लिए एक मिल ट्राम्बे में बनाई जा रही है। बन जाने के उपरान्त इसे खान के समीप ही लगा दिया जावेगा।

कृषि में उपयोग

दिल्ली स्थित भारतीय कृषि-अनुसंधान संस्था में एक विशेष प्रकार का उद्यान लगाया गया है, जिसे गामा उद्यान कहते हैं, इसका उद्घाटन हाल ही में हुआ है। यहां पर पौधों पर रेडियमधर्मी विकिरणों के प्रभाव का अध्ययन किया जावेगा।

काल ने डाक्टर होमी जहांगीर भाभा को समय से पहले ही उठा लिया परन्तु आज भारत सरकार उनकी स्मृति में एक परमाणु भट्टी और खोलने का विचार कर रही है। यह भट्टी भी ट्राम्बे के नजदीक ही होगी।

तडाग वर्णनम्

श्याम सुन्दर शर्मा, कक्षा ९ द

तडागतोयं मधुरं प्रसन्नं
गभीरं गभीरं घननीलवर्णम् ।
तडागतीरं तरुभिः परीतं
श्यामलिमान् ह्वयतीव पान्थान् ॥ १ ॥

पिबन्ति पद्मेषु मधु द्विरेफाः
खादन्ति वृक्षेषु खगाः फलानि ।
जलेषु मत्स्या विहरन्ति नित्यं
छायासु पान्थाः सुखमारमन्ति ॥ २ ॥

रटन्ति भेकास्तटमाश्रिता वै
गुञ्जन्ति भृङ्गाः कमलेषु मञ्जु ।
निन्दां स्तुतिं [illegible]
परोपकारे निरतास्तडागाः ॥ ३ ॥

वाणी वन्दनम्

अर्जुनसिंह पुरोहित, ९ स

सम्फुल्लाम्बुजसंस्थिता सिततनुः वस्त्रैः सितैर्भूषिता
रम्यो हृद्गतवल्लकीक्वणनतः सम्पोषयन्ती स्वरान् ।
भास्वत् स्फाटिकमालिकाजपपरा ग्रन्थं दधाना करे
विद्याबुद्धिमहत्त्वदाननिरता श्री शारदा सेव्यताम् ॥ १ ॥

तव चरणकमलाभ्यां स्फाटिकी[illegible]
मम शिरसि[illegible] दाडिमी बीज [illegible] ।
प्रतिपलमनुकम्प्येन [illegible] [illegible]
स भवतु भवमूर्त्यं वाणि ! ते मन्दहास ॥ २ ॥

भानुदयाल पुरोहित, कक्षा १० ई

जानीथ मां भ्रातः ? को ऽहमस्मीति ? पुनः यानि प्रीणयन्ति फलानि, मिष्टान्नानि कीणीथ तानि तानु ममैव कृपा अहमस्मि युवकानां जीवनं यद्धनाख्यं माहात्म्यम् । अहो ! मे सौन्द विलोक्य कस्य मनो न विचलति । गौराकारं चन्द्र इव शुभ्रम् । वदत को ऽहमस्मि ? अहमस्मि रूप्यकम् ! रूप्यकम् !! रूप्यकम् !!!

जगति सर्वे ममैव दासाः । सर्वे दूरतो नृत्यन्ति धावन्ति च अहञ्च नर्तयामि तान् । ममर्थमेव जना दूराद्दूरं यान्ति, युध्यन्ते, तरन्ति तरन्ति च वारिषु । गुणः, विद्या, कीर्तिश्च स्वकरेण मामेव सर्वथाऽर्जयन्ति । यस्मै चाहं कुप्यामि तस्य समाजे न किमपि क्रियते । ईश्वरा वरेण्योऽस्मि तत्रैव गुणस्य शान्त्याः विनाशः । न बीजानि स्फुरन्ति च । अहमुत्तमान-धमान स्माश्चोत्तमान् कर्तुं समर्थः । अहमेव नीचा उच्चांश्च नीचैः करोमि । दीना धनिका राजानश्च ममैव सी

मधुरमधुरो हि मे स्वरः । न किमपि वाद्यं, वाणी, विहगो वा यस्य रसनाया माधुर्यम् । संसारे शुभाशुभानां कर्मणामहमेव कर्ता । अमृतादपि मधुरो हि मे रसः । न वा तुला मे धिरोहति । पश्यत यदि नो चेद् विश्वासः । कथं खलु मन्नामोच्चारणमात्रमेव धावन्ति आबाल वृद्धाः ।

किं मह स्वमुखेन आत्मानं प्रशंसामि, वस्तुत एवाहम् ईश्वरमप्यतिक्र परमहं वदामि । ईश्वरो न चलति परमहं चलामि । ईश्वरो न दृश्यते, पर दृष्टं स्मर्यते, मम तु सर्वेषां जिह्वासु नाम । ईश्वरं केऽपि न मन्यन्ते । नास्तिकेषु ।

वसुधा प्रताप्यते

रघुवर दयाल मोदी, कक्षा १० 'अ'

चीना हि नीचाक्षर संयुक्ताः नराः
मैत्रीं तिरस्कृत्य विहाय सौहृदम् ।
गूढं समाक्रम्य कृतं निहत्य यै—
स्तैर्भारतीय वसुधा प्रताप्यते ॥१॥

शान्तिप्रिया मानव वाद तत्परा
श्री केनेडीनामधरा नृनाय काः ।
तान्निर्दयं भक्षयता नृरक्षसा
तेनास्मदो या वसुध प्रताप्यते ॥२॥

हिरण्यम् सांख्याकरं प्रकाशकं
श्री भारतं सर्व समृद्धिसंयुतम् ।
तदेव रुग्णं विगतप्रभं स्थितं
तेनाद्य सर्वा वसुधा प्रताप्यते ॥३॥

पूर्वं मतप्रार्थनया ऽतिदीनता
पश्चात्मद स्यैरभिमान-पूर्वता ।
यैर्दं शिता राष्ट्रहितैक चिन्तकै—
स्तेनैव नूनं वसुधा प्रताप्यते ॥४॥

दिने दिने या प्रियसंगनिर्वृता
रात्रौ न रन्तुं रविणा समाहता ।
तेनैव दुःखेन तमस्सु दुःखिता
वियोगविद्धा वसुधा प्रताप्यते ॥५॥

[illegible]

रामेश्वर प्रसाद, कक्षा ११ म

संस्कृत में वैसे तो कई नियम होते हैं अनुवाद करने के लिए, परन्तु मैं कुछ नियमों का निम्न तालिका में वर्णन कर रहा हूं:—

१. संस्कृत में चतुर्थी विभक्ति सम्प्रदान का चिह्न है (को, के लिए) नियमः—यदि हम किसी को भी ऐसी चीज देवें कि देने के बाद उस पर हमारा अधिकार न हो वहां चतुर्थी विभक्ति आती है । जैसेः—अहं मोहनाय आम्रं ददामि ।

२. सोहनः रामाय पुस्तकं ददाति इत्यादि ।

लेकिन हम कुछ वस्तुएं दूसरों को इस प्रकार देवें कि इस पर हमारा अधिकार हो तो वह षष्ठी विभक्ति (सम्बन्ध कारक) प्रयोग करना चाहिये इसका चिह्न है (का, की, को) ।

जैसेः—अहं रजकस्य वस्त्राणि ददामि ।

३. त्वं रजकस्य वस्त्राणि ददासि इत्यादि ।

४. संस्कृत का यह नियम है कि बिना के योग में द्वितीया व सहयोग में तृतीया होती है ।

जैसेः—मोहनः पुस्तकं बिना न पठति ।

५. अहं रामेण सह गमिष्यामि इत्यादि ।

मूरती रो ब्याव

दलीप कुमार महरा, कक्षा ७ 'अ'

एक सेठ हो वेरे एक बेटी ही बेटी धीरे-धीरे बडी होगी सेठ सेठाणी ने वेरे ब्याव री चाना मोचण लाग्या एक दार बठे एक जोगी मायो बीदेने वे कीया थारी बेटी रो ब्याव कैसे होगी जणे वो जोगी कीयो एरो ब्याव तो एक पत्थर री मूर्ती से होसी वो सेठ कीयो ब्यारो होगी मूर्ती से वेने बारे नीकलवा दीयो कई दिना बाद मे वे एक गढ देखण ने गया। वो गढ सुनो सानो हो बीये रे मायां एक राजा और वेरी सारी सेना पत्थर री बणोडी पडी ही बीये राजा रे सारे सरीर मे सूया गडोडी ही। सेठ और सेठाणी गढ देख'र बारे निकल गया वा बीये राजा ने ही देखती री सेठ सेठाणी बेने हेलो पाडयो अबे आजा बाई पण बा कोनी आयी वा कीयो अबार आऊँ, इते मे बीये गढ रा फाटक बन्द होग्या वा छोरी माया रेगी बेरा माँ-बाप बारे रेग्या बीया फाटका ने खोलण री घणी कोशीस करी पण कोनी खुल्यो वा छोरी माया ही रेवण लागगी बठे खावण पीवण रो सारो सनान पडयो हो घणो ही धन पडयो हो बठे वा खाती पीती और बेठी बीये राजा री सुया काडती रेती इयो करता करता केई दीन बीत ग्या। बीये छोरी ने बीये गढ मे आवाज सुणीजी की राजा री आम्या री सूया मत काढये। वा सारे सरीर री सूया काडती और आम्या री सूया कोनी काडती एक वार बीये गढ रा फाटक खुल्या पण वा जाणती कोनी ही थी म्हारा मा बाप कठे है वा बठे ही री बठे कर एक ग्वाळीयो नीकळयो वा बीये ने घणो सारो धन दे के वेरे सनेउ एक छोरी लेली जीकी बीये ग्वाळिये री बेटी ही वा बेने बठे राखती और वेरे सनेउ सुया कढाती और खुद ही काडती। एक बार वा कीयो मैं रोटी करू तू ए सुया काड आख्या री सुया मत काडये पण वा तो गयी परी रोटी करण ने वा लारे से बीये राजा रे आँम्या री सुया काढ दी इते मे राजा जिन्दो होग्यो वेरी सेना-जिन्दी होगी वो खुद रे सने बीये ग्वाळिये री छोरी ने खडी देख वेसे ब्याव कर लीयो और कीयो तू मने जीयायो है इये वास्ते मैं तो थारे से ही ब्याव करूलो थोडी देर मे वा रोटी करके आयी तो वा देखी की वे तो सब जिन्दा होग्या। जगे वो राजा बी ग्वाळिये री बेटी ने पूछयो आ कुण है तो वा के दियो आ दासी है। पच्छे वा तो दासी रो काम करती और वा राणी रे। घणा दीना रे बाद बीये गढ रा दरवाजा खुलग्या जणे वो राजा जीया सब ने पूछयो मैं आज

कुंवर प्रभूसिंह भाटी कक्षा १० म

मां रे माथे छाई बादळी, इने दूर हटाणो है ।
घणी स्याह अंधियारी छाई, उजली बेग बणाणो है ।।

आवो रे भायाओ आपां, सब सूरज बणो जावां रे ।
एक-एक किरणों सूं, सौ-सौ बादल दूर हटावां रे ।।

सूरज में चमका रे, चांद-तारों री जोत जगाणी है ।
घणी स्याह अंधियारी छाई, उजली बेग बणाणी है ।।

मां रे माथे दाग लगावा, यो कुण चायो उचकायो ।
यो सूरज क्यूं सोच करंनी, काल म्हारं माथे छायो ।।

ई दुश्मण री राह मिटावा, जड़ ही काट गिराणो है ।
मां रे माथे छाई बादली, ईने दूर हटाणो है ।।

आवो री बहिणां ओ आवो, थे भी हाथ बढ़ाओ थे ।
मा री लाज बचावण ने थे, पगल्या आज बढ़ाओ ।।

काली आयी मेटणे ने, काली ने आज मनाणी है ।
मां रे माथे छाई बादली, ईनें दूर हटाणो है ।।

महलां में रह्यो छोड़ो, सब रण-खेतों में चालो रे ।
मा रो माथो झुकनी जावे, ईनें आज बचाओ रे ।।

दुश्मण री गर्दन माथे, तलवार री तेज चलाणी है ।
मा रे माथे छाई बादली ईनें दूर हटाणो है ।।

भारत मां रा वीर लाडलो, रणबांकों बणो आवो रे ।
जो भी दुश्मण सामे आवे, ऊं नें काट गिरावां रे ।।

मा री मान बढ़ावा वाळो, धम धम धम धमकाणो है ।
मा रे माथे छाई बादली, ईनें दूर हटाणो है ।।

संसद परिपाटी

शाला में छात्र-संसद के सदस्य शपथ ग्रहण करते हुए

संसद के नए सत्र के उद्घाटन का एक दृश्य

शाला-संसद के उद्घाटन समारोह में महाराजा बीकानेर डॉ. करणी-सिंहजी, एम० पी० छात्रों को सम्बोधित करते हुए

आफत आ पड़ी

किशोर कुमार, कक्षा ६ वी

बाड़ नै कांटो खुद खावै
बीज नै धरती गिट ज्यावै
रूखाली जड़ कुतर खावै
मोरियो मगरे कुरला वै

रतणादे धरती मे ऊंची आकड़ी
बाड़ खेत नै खावै आफत आ पड़ी

काजली काली रातां मै
रूखाला खुद जद घातां मै
मिनख रो जोही दांता मैं
लुण चा देवै आंतों मै

फिकर घुमे-पोल, गली जद साकड़ी
बाड़ खेत नै खावै आफत आ पड़ी

न्याय री नगरी न्यारी है
भला रै खातर खारी है
सांचा रै पायँ भारी है
निजर पिछवाड़ बारी है

निरख न्याव चांदी तुल तोड़ी ताखड़ी
बाड़ खेत नै खावै आफत आपड़ी।

काळ री बात

सतीशचन्द्र गौड़, कक्षा ११ वी

बात केतां बार लागे
हुंकारे बात मोठी लागे
सार बाबा सार
एई बातां रा विचार
कई नगर सूत्य कई नगर जागे
फौज में नगाड़ो करे आगड़ चीं, आगड़
ऊपर खीचड़ो नीचे घी।

केर रो कांटो साटी सोलह हाथ
नंमें बसे तीन गांव
दो तो उजड़या एक बस्यों नहीं
जिके में रहै तीन कुम्हार
दो तो ठोठ एक घड़े ही नहीं
जिका घड़ी तीन हांड्या
दो तो खोखरी एक बाजे ही नहीं

जिके में रोध्या तीन चावल
दो तो कोरड्डू एक भीज्यो नहीं
जार नेत्या तीन बामण
दो तो ग्यारसिया एक जीमे ही नहीं
जिकाने दिखण में दिया तीन रुपिया
दो तो ठोस एक बाजे नहीं
जार दिखाया सराप नै
सराप कवै मने रात रो,
रातींदो दिन में सूझे ही नहीं।

...री बेटो

एक गाव में एक मोटो सेठ रैवतो हो। सेठ रो नाम लाडू सिंह हो। बी सेठ रे एक बेटो हो। एक दिण सेठ आप रे बेटे स्यूं कीयो की तू कठेऊ कमा ला। नीतो थने आज खाणा कोनी मिलसी जण पछे छोरो रोवतो रोवतो खुदरे मा कने गियो। मा खुदरे बेटाणें रोवतो देख, बीरो कारण पूछ्यो, कि तू क्यों रोवे है। जण पछे छोरो कियो कि मा—म्हने बापूजी कवे है के कठेऊ कमाके ला नितो थणे आज हू घरे जिमण कोनी देऊ। बाद में छोरा री मा एक सोनो रो सिक्को निकालयो। फेर बीने बो सिक्को दे दियो। रात ने सेठ बेटा स्यूं पूछीयो को तू काई कमा कर लायो। जण पछे सेठ रो लडको सेठ देणीक जेब में स्यू सिक्को निकाल कर दे दियो।

सेठ कियो की—थू इने कुवे में फेंक आ।

...डको फट देणीक सोने रो सिक्को कुवा में फेंक आयो। फेर बाद में सेठ समझ गया कि ...यो हो। और फेर सेठ खुद री बहू ने पियर [माव के] भेज दियो। दूजे दिन सेठ ...यो की तू आज फेर कमा के ला, नितो थन खाणा कोनी मिलसी। सेठ रो लडको ... कने गीयो और बीने आपणे दुख रो सगलो कारण बता दियो। ... टावरे मेड काढ कर दियो। छोरो बी ... ने जेब में ... ...या पछे सेठ ... बेटा स्यूं कीयो की तू आज काई कमाकर लायो ... ...यो काढ कर दे दियो। सेठ ... रुपियो ने देख कर कियो की तू ... ...टो फट देणीक बी रुपीया ने फेंक आव। सेठ तुरन्त ही समझ गियो ... ...बो दिन बीत्या ही आपरी बेटी ने ससुराल भेज दियो। फेर सेठ ... ...तू कमा के ला। नी तो थने हू आज रोटी जिमण ...

सिक्को देस्यू । जण पछे धणी सेठ रो वेटों बी सन्दूक ने उठार कन्धा माथे राख्यो ग्रौर बीं सन्दूक मुसाफिर रे घरे पहुँचा दियो। लेकिन बी छोरा रो पांव कांपण लाग्यो, वीरा गर्दन दुखण लागी और पसीणों घ्यूं भीग कर कर तर होग्यो।

जब छोरो घरे ग्रायो तो, छोरा रो बाप पूछियो की तू ग्राज काई कमा कर लाया। सेठ रो बेटे धीरे सीक एक चवन्नी निकाल कर दे दियो। सेठ बी चवन्नी ने ख कर कियो की तु इने कूग्रो मे डाल ग्रा सेठ रो वेटो ने गुस्सो ग्रायो ग्रौर वीरे आख मे स्यूं आग निकलण लागी तब छोरो ग्रापणे बाप ने कीयो की- म्हारी गर्दन टूट गी ग्रौर थू कवे है की इने कुग्रो मे डाल ग्रा। फेर सेठ समझ गियो की छोरो चवन्नी कमा कर लायो है। फेर सेठ ग्रापणे वेटाने घर रो सारो काम सौप दियो।

आयो शुभ प्रभातजी

सुरेश चन्द्र पत, कक्षा १० ब

चूं चूं चिड़कल्यां बोली–आयो शुभ परभात जी
जाग्या मां का लाल लाडला, धरती हुई निहाल जी
जुग जुग सो रह्‌या पड़्या नींद मे, सुधबुध दी बिसराय जी
अब आयो है चेतण रो जुग, गयो अलस रो राज जी,
धरती मां ने सिणगारां ला, नहरां बांध बणाय जी
नवो जगत निर्माण करो, म्हें ब्रह्मा का अवतार जी,
बांझ धरा ने करो उर्वरा, घर घर गंगा बहाय जी,
जो बोयेगो वो पावेगो गयी जुलम की रात जी।
हालो हाथां में कुदाल ले, नहीं आज तलवार जी,
आज वार सूं नहीं उरांला, प्यार सूं जीतालां संसार जी,
आयो शुभ परभात जी।

कर्णो करता और बींही शराब नितियाँ हो खूब विरोध करता इरे वास्ते बे (ध्यामजी) गिरफ्तार क ा। आ थोरी पैली जेल यात्रा हीं।

जेल सा छूटणे रे बाद वे फेर सत्याग्रो में भाग लेवण लागग्या और दूसही बार वे ब्यावर में गिरफ्ता गया। एक साळ जेल में काटने रे बाद वे दिल्ली गया। और २-३ साल बठे ठेरिया। बरे बाद ा परा।

सन् १६३५ में बम्बई में वीयो "अखंड भारत" नाम ही पत्रिका री सम्पादन करतो शुरु कियो ापरा जोशीला भाषण, रियासतों रे राजाओं रे विरोध में प्रचार और देश ही राजनितिक स्थिति लिखता ऐ वास्ते रियासतों में बोन जावण री रोक लागगी।

इयें तरह देश भक्ति रा बींयोंवणाई काम करिया और आपारे जीवण रो सारो समय लोक-हि ायो।

जद आपोरो देश आजाद हुयो जणे सन् १६४८ में बोने आपारी रियासत में ही प्रधान-मन्त्री बणाय ापरे कार्य-काल में वीयों आपरी रियासत में घणा ही रचनात्मक काम करिया। जद् राजस्थान-सघ ा हुयो जणे वे राजस्थान रा मुख्य-मन्त्री बणग्या पण कई राजनैतिक-कारणों सू बोने सन् १६५४ में णो पडियों।

अगर कुर्बानी अर् लोक प्रियता ही किसे ई वडें पद ने प्राप्त करणे री कसौटी हूंवती तो वे सारे ई पद पर रेवता। पर स्वार्थों रो शिकार बोने हुवणों पडयो !

पण ईंता पर ही लोक प्रियता घटी कोयनी अफूटी वढगी। वे बड़ा साहसी और गम्भीर आदमी ाजनितिक होणे साथ-साथ विनोदी, नटखट और बडा मिलणसार आदमी हा।

कणरी माँ अजयो खायो

मोहनलाल बाँटिया कक्षा ११ ई

कुणरी माँ अजमोखायो, जो रोके गगाधार जो।
भरत शक्ति सु टक्कर लेवे कुण री इसी मजाल जो॥

इन्द्रपुरी सूं उतरी गंगा धरती कानी चाली जो
ठंडी ठंडी जाण जटा में, शिव महाराज रसाली जो
पदवा कद रुकणों वाली थी, निकली आरमपार जो
कुणरी मां अजमोंखायो, जो रोके गगाधार जो।
भरत शक्ति सूं टक्कर लेवे कुणं री इसी मजाल जो॥

सिकन्दर ने पोरुष सु जब टक्कर खाई जो
पर पोरुष हो नहीं कम, वो भी खाई टक्कर जो
टक्कर टक्कर सूं हुयो घमासान युद्ध जो,
अंत में सिकन्दर मार खाइ,
भाग गयो छोड़ भारत री धरनी जो
कुणरी मां अजमोखायो जो रोके गगाधार जो
भरत शक्ति सूं टक्कर लेवे कुण री इसी मजाल जो

सिंह धड़के वन गजरे वो वन राज कहावे जो
सारा पशु देख सिंह ने, नत मस्तक हो जावे जो
राज करे वन में वो, अपनो मनमानी चलावे जो
कुणरी मां अजमोखायो, जो रोके गगाधार जो
भरत शक्ति सू टक्कर लेवे कुणरी इसी मजाल जो

आयोफिर मोहम्मद गोरी, भारत ने जाण कमजोर जी,
पण भारत में नहीं कम वीर, राखी देश री लाज जी,
सोलह बार ठोकर लगायो, निकाळ दियो भारत सुं जी,
कुणं री मां अजमोखायो, जो रोके गंगाधार जी
भरत शक्ति सूं टक्कर लेवे कुणरी इसी मजाल जी

चीन शत्रु देख भारत ने कमजोर, करयो हमलो जी,
हुयो घमसान युद्ध, म्हारां वीर वां बलिदानी जी,
अंत में हुई जीत हमारी, चीन ने मुंह री खाई जी,
कुण री मां अजमो खायो जो रोके गंगाधार जी
भरत शक्ति सूं टक्कर लेवे कुनं री इसी मजाल जी

भारत री शक्ति सबक सिखायो कई दे ं जी,
देश कई हैं मूर्ख, भारत री शक्ति नहीं जाणी जी,
चीन री थोथी धमकी में आ, पाक ने करयो हमलो जी,
म्हारां वीर था नहीं कम, उड़ादिया सेवरजेट, टेंक जी,
घणी मार खायो पाकिस्तानी, लाहौर-करांची कांनी जी,
कुणंरी मां अजमोखायो जो रोके गंगाधार जी।
भरत शक्ति सुं टक्कर लेवे कुणंरी इसी मजाल जी ॥

जो कोह देवे टक्कर भारत सूं वो मिट्टी में मिल जावे जी,
हिन्द केशरी भड़क उठे तो, दुष्टांरी नहीं खेर जी,
भारत तो शांति चावे, जण ही अपणायो पंचशील जी,
सब हिलमल कर करो काम, करो देशां रो विकास जी,
कुणंरी मां अजमोखायो जो रोके गंगाधार जी
भरत शक्ति सूं टक्कर लेवे कुणंरी इसी मजाल जी,

भायां रो प्रेम

विनोद कुमार व्यास, कक्षा १० ब

आ बात जदरी है । जणे म्हे जयपुर रे कने रेवतो । मारे घर कने दो भाई रेवता । बियारो नाम राजेन्द्र र जितेन्द्र हो । राजेन्द्र तो सीधो साधो पर जितेन्द्र घणो बदमाश हो । एक दिन वो आपरी दडी ले'र बारे रमण ने गयो । जणे वे खेल रिया हा तो एक जणे दडी रे सूट मारी । दडी मोटर नीचे आयगी अर फूटगी । अबे जितेन्द्र वी छोरे माथे टूट पड्यो अर बीने ठोकण लाग्यो । इतो ठोक्यो के वो मरग्यो । पछे काई हो ई घटना सूं बठे पुलिस आयगी । वो दोडतो घरे आगग्यो । जद बीरे भाई देख्यो के ईरा कपड़ा खून सूं भरोडा है । जणे बी सोच्यो के ओ जरूर कोई आफत लेर आयो है । वी बीसू सगली बात सुणी । अर सोचण लाग्यो के अबे काई करा । बीरे दिमाग मे एक विचार आयो वी आपने छोटे भाई ने कयो क तू म्हारा कपड़ा पहनले म्हू थारा पहन लू । थोड़ी क ताल ने बीरे घरे पुलिस आयगी । जद वे राजेन्द्र ने खून रा कपड़ा पहर्‌या देख्या तो बीने पकड़'र लेयगी । मामला अदालत में चालण लाग्या । राजेन्द्र ने कानून खूनी बनायो र'बी ने फांसी री सजा मिली । फांसी मिलती जणे बी एक ले'र कागद माग्यो'र आपरे भाई ने लिख्यो ।

प्रिय भाई जितेन्द्र,

राजी रहो ।

थारे गले री रस्सी म्हारे गले मे डाल नी है पर अब भी तूं समझ जा ।

थारो बड़ो भाई,

राजेन्द्र ।

ओ कागद पढता ही जितेन्द्र दोड़तो आयो । पण बठे बीरे भाई री लाश दिखी । पछे बी फेरूं इसो काम कोनी कर्‌यो ।

आ म्हारा भायला कूकरा

हरीश कुमार गौड़, कक्षा ११

आ म्हारा भायला कूकरिया लाड़ लड़ाऊं,
खोले रमाऊं तने गुरु बणाऊं म्हारा कूकरिया,
नान्ही पूंछ मुड़ें पर मूछयां मिनखां री थोड़ी रेसी,
गया जमांरा हार अटे नेता अफसर सगला काटी ॥
मरजादां मनखा री राखो बलि बलि जाऊं म्हारा
आ म्हारा भायला कूकरिया लाड़ लड़ाऊं,
आव रे अट्ठारा आ म्हांरा बीसां काला भूरा चितकबरा
बीस नखां रा बीस भायला अठारे रा परपटिया ।
राती जीभ सूं लक लक चाटे दूध पिवाऊं थांने कूकरिया
आ म्हांरा भायला कूकरिया···
मिनखांचारे गुरु थूं म्हारो भीख ओजा केरी,
दे दे बेगो उठ कर करुं पढ़ाई पास होऊं झटपट हूं रे ।
मां रो दूध लजायो नारे मालिक री ठकराई ।
देश री सेवा बहादूरी साधुजी थां सूं सुवपाई ।
मिले जके सूं करे गुजारो सरब संतोषी कूकरिया ।
आ म्हारा भायला कूकरिया ··········
धोले रूप धर धरमराज रे लारे उतरया खण्ड
राती सगलां रे मन भायो काले रो काशीवाद भयो ।
अलशेषण मन हे सण जबर ओ तरियो कूकरियो ।
आ म्हारा भायला कूकरिया ····· ·········

...लाल जोशी, कक्षा 11 अ

म्हारा राजस्थान भारत रे उतरी पच्छिमी भाग मे टिक रयो है। ओ ४०० वर्ग मील री छेतर आपरे माय पणी नुई, जूनी बाना राखं ही ई रे म.यने आम, केळा, अ गूर उगे। बठे काटी, बगरो, पोगडी देखणे मे आवे। राजस्थान रो उतरादी भाग सूखो रेत रे धोरा सू भरियोडो हो अठे उतरादी भाग गगानेर गगानगर रे भाग न हर्‌यो भर्‌यो कर्‌यो हो पण बाकी बीकानेर, जोधपुर, जैसलमेर रो सगळो भाग सूखो रेगिस्तानी भाग हो रात मा ठड पडे और दिन रा आंध्यां चालै। डागरा ने ३-३ दिन पाणी नसीब नीं'हुवे। मिनखा ने रेत री टवया सू पाणी पुचायो जावे। ईने प्रदेश रे खने चम्बल री नीली धारा आपरी चिलकती चचल लहरा सू लोगा रो मनडो मोवती धरती रो पेट हर्‌यो करती हवलै हवलै गज गामणी री चाल सू हाल'र राजस्थान री धरती माय गोनो उपजाय रयी है, और ईरे खनै नितनुआ कळ कारखाना भी ...यो हो अब तो अणु री भट्टी रो भी कारखानो भी खुल रह्‌यो हो जी मां अणु सू बिजळी ...गी।

...रे खातिर ई चम्बल नदी रो घणो महत्व समझ'र इये माथे बाध बांध्यो। बिसू बिजळी ...। ईरे सागे २ सिचाई रो काम भी हुसी। इसू सिचाई कर घणो धान पैदा होसी और ...रो रेगिस्तानी भाग हर्‌यो भर्‌यो कर देसी। इये तर्‌या आ राजस्थान री गगा हो जासी ...सरकार और मध्य प्रदेश सरकार दोनो ई मिल परा'र ई देश री सगळा सूं बडी नदी माथे ...बहादुर जी री दियोड़ी दया रो फायदो उठासो। इये माथे सरकार रो १ अरब ६० ...र ४ बडा बधा हो वी माय सू एक ओ है।

(१) गाधी सागर बाध.— ओ बाध कोटा नगर सू ६५ मील परया उत्तराद मे हो और ...राजस्थान री काकड़ मे बणयोडो हो इये बाध री लम्बाई १६८५ फीट और ऊचाई २०६

ई माय ६८.५ लाख एकड़ पाणी इकठो हो इये बांध रो पाणी ८७०० मील छेतर मे हो इये
दो नहरां निकाळी गई हो ।

(२) राणा प्रताप सागर बाधः— ओ बाध कोटा सूं ३२ मील दिखणाद और चुळिया
ताप'र खनै ही वणयोड़ो हो ओ ३८०० मील लम्बो और १३५ फीट ऊचो हो इये बाध रो छेतर
वर्ग मील हो इये बाध सू ३ लाख एकड़ भूमि मे पाणी सिंचाई होसी और ६६ हजार किलोवाट
मिलसी ।

(३) कोटा बाध.— ओ बाध कोटा रे गढ खनै ही सैर सू ६ मील परिया हो ओ बाध
० फीट लम्बो और ८३½ फीट ऊचो हो तथा बाढ रो पाणी निकालण खातिर १६ बाडा हो इसूं
लाख एकड भूमि मे सिंचाई होसी और इये बाध सूं दोनों खानी दो नहरा निकाळी गई हो ।

(४) कोटा सिंचाई बाधः— ओ बाध कोटा सूं ६० मील दिखणाद मे चबल री पगडण्डी
बणयोड़ो हो इरे सारे ही बिजळी घर बणयोडो हो ई माये ३·८० करोड़ ६० खर्च हुयो ।

इये योजना सू घणाई लाभ हो, राजस्थान रे कोटा, बूदी, भरतपुर और सवाई माधोपुर
ला री १६ तहसीला और मध्य प्रदेश री १२ तहसीला मे सिंचाई होसी इसूं २ लाख किलोवाट
बिजळी मिलसी । कोटा, लाखेरी, सवाई माधोपुर, अजमेर, ब्यावर और रस्ते माय आवण वाळा सगळा
ावा ने बिजळी मिलसी । इये री सिंचाई सू १·२५ टन धान हरेक साल पैदा होसी और सागे २
छोटा ओर मोटा उद्योग धन्धा स्थापित होसी । इये सूं ओ सूखो भाग सोनो उगलसी । सस्ती बिजळी
मिलसी । ओर कारखाना सू गरीबी और बेकारी मिट जासी ।

आंधी आयी और गाजे २ मे भी आयो थी सुं मोर नीचे पड गयो और मर गयो। तड़के जद राजकुवांरी मोर ने मरोड़ो देख कर रोणे लाग गई और बीन बाळण ताई लकड़ी चुगण लाग गई।

किस्मत री वात सूं ‹ो टेम शिवजी व पारवती जी निकलरया हा। राजकुवारी री दशा दे कर पारवती जी ने दया आगी और शिवजी ने बोली। इयाने देखो बापड़ा ने जिवादो। इं पर शिवजी बोल मैं केने'र जिवाडो किं। तो पारवतीजी सौन चीड़ी बण कर उड़गी और पेड़ पर वेठगी। जद शिव आपणी जटा खेंचण लाग्या और बोल्या तू आजा मैं इने जिवा दे सूं जद पारवतीजी पाछी औरत बण व आगयी। और बोली जिया मेरे बिना थे दु:खी हुआ वियां थासुं ज्यादा वा दु:खी है। क्यूं कि बीरे आगे ल ओई मोर है। पारवतीजी री वात मान'र शिवजी बो मोर ने जीवतो कर परो आदमी वणा दियो और बि नाम राजा मोर धर राख दियो।

अठे सुं वो राजकुवारी ने ले'र चाल्यो। वो एक शहर में पूग्यो। बठे रो राजा मरग्यो। दूसर राजा थरपण ताई हाथी घूम रहयो हो। बो भी बठे खडो हो गयो। हाथी माला ले'र बीरे गले में घाल दी बठे रा लोगा राजा मोरधर ने आपरो राजा मान लियो और छोटी राजकुमारी ने महारानी मान लियो बियाने इस्नान करा'र कपडा परा'र बीया री राजतिलक कर दियो। अब राजा राणी खुशी सुं रेण लाग्य पुराणा दु:ख भूल गया। प्रजा री सेवा करण लाग्या।

बीने बीये राजा आपरी राजकुवांरीयारो ब्या अच्छो घराणे में कर दियो। और सब वठे ही रहता और ऐस करता। छोटी राजकुवारी ने सब भूल गया। एक दिन बीयारी पाडोसी राजा बीयारा ऐस आराम देख परा हमलो कर दियो। कई दिन ताई तो राजा और वियारा जवाई लडया। पछे पकडीज गया। और वाने गोला बणालिया। अब वे गधे ज्यूं काम करता तो भी बियाने रोटी पूरी कोनी मिलती बी राजा ई चकवे राजा न हरा परा'र दास बणा लियो बी राजा ने राजा मोरधर जीत लियो।

एक दिन राजा राणी बेंली माथे चढ़्या जाता हा कि राणी आपरे बाप ने व बेना'ने लकड़ी चुगता देख्या। जका रा कपडा मेंला व फाटोड़ा हा। राणी बियारे खने गई। बाप वेटी ने देख कर बीरे पगा पडग्यो। वेना बीरे लिपट गी। राणी ने दया आगी। और वा बीने आपरे महल मे लेगी। वठे राणी बाप और वेना ने पूछ्यो मे केरे भाग से खाऊ हुं। तो सब एक साथ बोल्या दुनिया सारी आपणे २ भाग रो खावे। तू थारे भाग रो खाव। मैं म्हारे भाग रो खावा। म्हारे भाग मे एक दिन टुकडा खावणा लिखयोड़ा था। और थारे भाग मे मोर सुं राजा लिखयोड़ो है। सबरे भाग मे अप गो अपणो ही सो लिखयोडो है।

ई ताईं आपणा बुढा वड़ेरा कवे है कि जको भाग में लिखयोड़ो है वो टले कोनी चाहे कितो ही उपाय कर तो। ‹के रे जीया लिखयोड़ो होसी बीयो ई होजा सी।

ECTION

EDUCATIONAL-ANTHEM

Where the mind is without fear and the head is held high;
Where Knowledge is free;
Where the world has not been broken up into
fragments by narrow domest c walls;
Where words come out from the depth of truth;
Where tireless striving stretches its arms towards perfection;
Where the clear stream of reason has not
lost its way into the dreary desert sand of dead habit;
Where the mind is led forward by thee into
ever widening though: and action—
Into that heaven of freedom, my Father
let my country awake.

—Rabindra Nath Tagore

PLEDGE

India is my country, all Indians are my brothers and sisters. I love my country and I am proud of it. I shall always strive to be worth of its rich and varied heritage. I shall give my parents, teachers and all elders respect and treat everyone with courtesy.

I shall be kind to animals. To my country and people, I pledge my devotion in their well-being and prosperity done lies my happiness.

'He won a war and died for peace of heart attack at Tashkent at 1.32 a. m on 11th [illegible]ary 1966. He was conferred the greatest distinction of 'Bharat Ratna' by President pos[illegible]mously.

He played the role of an untiring and a true national hero. Under his leadership India ahead and occupied her rightful place among the other nations. He was snatched from us at a time when he was needed most. The Tashkent Summit will go down in as an outstanding example of political maturity and statesmanship of Shastri who belongs to the ages.' He was cremated at Vijay Ghat.

True ease in writing comes from Art, not chance.
As these move easiest who have learned to dance

—A. Pope

'Flower o' the broom
Take away love and our earth is tomb'

—Browning

'As flies to wanton boys are we to the gods
They kill us for their Sport'

—Hardy

'Breathes there the man with soul so dead
who never to himself hath said,
This is my own, my native land'

—Walter Scott

The Passing away & Last Rites
SHRI LAL BAHADUR SHASTRI

Collected by **kr. udai singh**
Class XI C

SHASTRI in 19 months of office proved a fittir cessor to Nehru by holding aloft the highest ideals of democracy.

When Tashkent Conference was over Mr. Kosygin a banquet on the night of 10th Jan. 1966 in honour of triji and President Ayub. Mr. Shastri returned to his villa the banquet at about 10 p. m. and dined along at 10-30 and went to bed at 11 p. m. but could not sleep. He suffered two previous heart attacks. At about 1-20 a. m. or 11, 1966 he was seized with bad coughing and stumbled his bed room into the hall way crying, 'Doctor, doctor' Shastri's personal staff, packing their luggage for a pla departure for Kabul put Shastri back to bed and called his sonal physician Dr. R. N. Chugh. At 1-32 a. m doctor c feel no pulse. He gave mouth to mouth artificial respira but could not succeed. In next half hour a dozen Russian physicians came and labo ove him. But it was too late. Thus he died of heart attack at 1-32 a. m. less than nine a half hours after the signing of the historic Tashkent declaration.

President Ayub and Premier Kosygin with others carried the casket bearing the body Mr. Shastri to a giant Soviet airliner. In Tashkent thousands stood silently along the r as the cortege made its way to the airport.

The plane carrying Shastri touched the ground at Palam airport at 2-30. p. m. on 11th J 66.Shouts of 'Lal Bahadur Shastri ki Jai' mingled with mournful cries.

Dr. Radhakrishnan, Zakir Hussain, Nanda and his cabinet colleagues stood in rever tial silence with their heads bowed and grief writ large on their faces as his body draped in tri-colour, was brought out of the aircraft. Shastri's eldest son Hari Kishan broke down

एन० सी० सी० कैडेट्स

शिक्षा-सचालक व निरीक्षक के साथ शाला परिवार
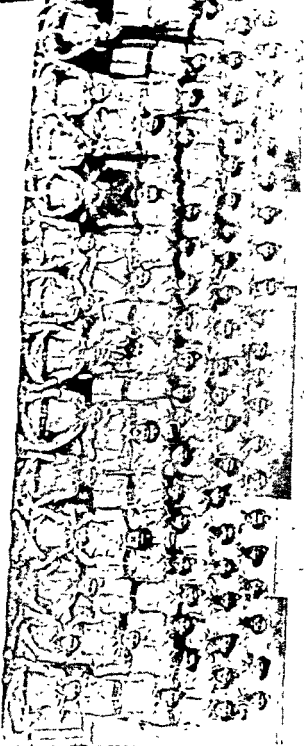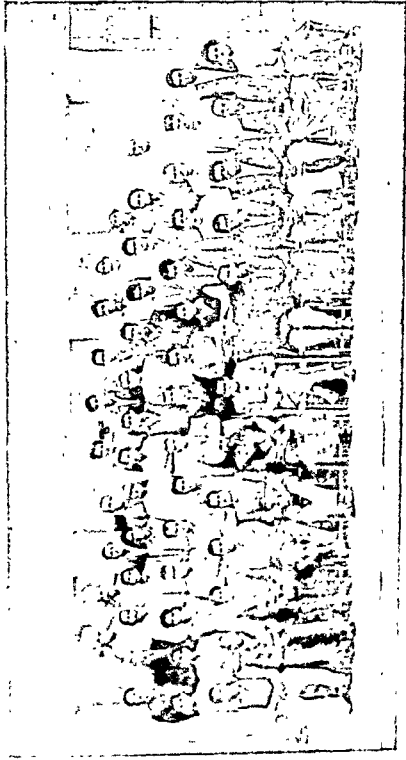
...he saw his father. The three services chiefs, General J N. Chaudhuri, Air Marshal ... (chief of-air staff) and Vice Admiral B. S. Soman (chief of Naval staff) brought ... out of the aircraft. Wreaths were placed on it on behalf of President, Vice President ... acting Prime Minister Nanda. A combined services guard of honour formed up and ... arms as the cortege was carried by six army commanders and led to flower bedecked ... carriage. Mrs. Lalita Shastri received her husband's body at no. 10 Janpath.

A platform was prepared in the portico where his boby was placed. The catafal... there until the funeral procession with Shastri's body on a gun carriage, started for ... near Shantivan on 12th Jan. 1966 at 9.40 a. m. A helicopter flew over the ... taking aerial photographs and showering petals on the body of Shastri. The ... staff of the Army, Navy and Air force were the chief pall bearers in the funeral ... The Navy band played 'Abide with me.' The birds of peace pigeons and doves ... from trees on hearing the Requiem played by muffled band.

When religious rites were over Hari Kishan walked round the body thrice and lit ... funeral pyre at 12-32 p. m. on January 12 as the small arms fired three volleys in ...

Three services chiefs of staff stood to attention and the army buglers sounded the ... Priests chanted hymns from ancient scriptures. Thousands sobbed, some stood ... heads bowed, others raised folded hands in respectful tribute as his body was consigned ... on the bank of Jamuna. As the flames from sandalwood pile leapt ... 'Lal Bahadur amar rahen' rent the air.

'Nor once nor twice is our rough island story,
The path to duty is the way to glory' — Tennyson

'A learned fool is more foolish than an ignorant ...' — ...

...lowing Tributes Paid to Lal Bahadur Shastri

PRESIDENT Dr. Radhakrishnan on 11 th Jan. (... said that Mr. Shastri was 'a determined nationalist' At Tas-kent he died pledging India and Pakistan to end the bitterness. 'A grateful nation is in deep mourning.' Mr. Shastri served for 18 months as Prime Minister 'at a very difficult time in the history of the country.' The void caused by the passing away of Nehru was difficult to fill. But Shastri ji proved a fitting successor to Nehru. He was a quiet unostentatious but determined nationalist. I announce the award the greatest distinction of Bharat Ratna to him now with a sad heart and confer on him the Bharat Rat[na] posthumously.

× × ×

President Johnson of America said—Shastri's tragic death was a grievous blow to the hopes of mankind for peace and progress. President said world would be a smaller place without Mr. Shastri. Shastri with only 19 months in office proved a fitting successor to Nehru. As the leader of the world's largest democracy, he had already gained a special place in American hearts. I am very disappointed that I had never had a chance to meet him.

× × ×

Mr. Kosygin said, 'I have come to Delhi at a time of profound grief. The Soviet peo[ple] are deeply grieved at the loss of Shastri. Mr. Shastri died at his post, but he did all he co[uld] to enable people to live in peace and to make peace stronger.

× × ×

President Ayub Khan of Pak said that Shastri died in the cause of peace. Shastr[i]

had established very good understanding with each other. I know he wanted peace and ...also want peace............I convey my condolences and sympathies to the Government and people of India.

Queen Elizabeth II sent a message—

"I have learned with profound regret of the tragic demise of the Premier. As head of the ...monwealth I send my deep and sincere sympathy to the Government and people of India ...to his family. My husband shares with me the sense of loss which will be felt through... the world."

× × ×

...e Minister Harold Wilson of Britain said—

Prime Minister Shastri's tragic and sudden death on the very day that an agreement had ...reached that could assist a stable peace between India and Pakistan will be mourned by his friends in Britain especially all of us who have had the opportunity and pleasure of ...ing him and talking with him, so, many times in the past year. His loss will also be felt ...throughout the commonwealth and indeed every where. His qualities of statesmanship, sincerity ...integrity are valued. India and Commonwealth deeply mourn his passing.

× × ×

...tier Gandhi—Abdul Ghaffar Khan said—

It is a matter of great sorrow that Shastri Sahib died at a time when I was expect... ...meet him and know each other's views but this was not realised. Shastri Sahib was my old ...Congress colleague and he was a great nationalist. The nation and country have suffered a great ...through his death. The world is mortal and every one passes away. May God shower ...

...on him and give patience to his dependents.

× × ×

...Hubert Humphrey, Vice president, United States —

A perceptive observer of India has described Shastri as 'an earthen ... ...When the blazing sun of Nehru had set for ever Mr. Shastri did the very best ... ...the way for his people in a time of great trouble. No man could have ... ...a gentle and an unassuming man, a son of the people who ... ...And he never for a moment lost touch with them ... ...to even higher courage than that which was required of ...

'Who, if not mankind's brother was Lal Bahadur Shastri ?'

'What, if not the cause of mankind, did he die for ?'

× × ×

Acharya Vinoba Bhave said, 'Lal Bahadur gave his best in the worst time in our national history. Poor Shastri strained himself, in one and half years' time, more than his mortal frame could bear.

× × ×

Shastriji's last message to the Nation—

'We fought in this (Indo-Pak) war with all our strength. Now, we have to fight for peace with all our strength.'

Give me good mothers, I will give you a good nation.

—Napolean

He who finds elevated and lofty pleasures in the feeling of poetry is a true poet, though he has never composed a line of verse in his entire life-time.

—Mme. Dudevant

A nation is built in its educational institutions.

—Dr. S. Radhakrishnan

...s. Indira Priyadarshini

...aiypal singh

GIFTED India's Indira was born to Nehru and Kamla one year after their marriage on 19 th November 1917 at Anand Bhavan, Allahabad. 'Priyadarshini' means dear to the sight, but she was dearer still to Nehru when the sight was denied. She was not born with a silver spoon in her mouth but with a jail ticket in her hand In her childhood she used to deliver political speeches before her dolls Sarojini Naidu hailed her as the 'new-soul' of India. She belongs to the one family in India which has given a three generation line of Congress Presidents, including herself. At the age of twelve she organised a 'Charkha Sangh' and a 'Vanar Sena.' At Shanti Niketan Tegore called her a charming child. She got education at Allahabad, Poona, Visva Bharti, Oxford and in Switzerland. She never took a degree. On March 26, 1942 she married Feroze Gandhi against the wishes of Nehru [illegible] ...andhi. For long seventeen years she worked as a confidential personal adviser [illegible] ...ravelled widely with her father. According to her old servant she [illegible] ...rd according to Mrs. Vijaylakshmi she remains a bit sick.

...e president of the Indian National Congress in February 19[illegible] ...fter Nehru's death she became Central minister for Information and ...w all the main statesmen and international leaders.

...death of Shri Lal Bahadur Shastri, 49 years old Indira became [illegible] ...minister of India—the world's largest democracy and [illegible] ...nation. She is the only lady who leads [illegible]

oath of prime ministership on 24 th Jauuary 1966. She is the only example of a daughte emulating her father by also being prime minister. She is a lovely person, a unique perso and a dedicated woman. According to Kamath she is the most beautiful prime minister i the world. She has proved that a skirt or a sari is increasingly acceptable at the summ of public life. Prob.bly no woman in history has ever assumed such responsibility as no rests on India's Indira. She lives at 1 Safdarjang Road in New Delhi. She rides on Chevro iet Impala. She rises at six each morning. Shortly after nine she comes out to greet th crowd. Action plus her secret weapon being a woman—are just right for India now. She stands remarkably alone. She is the second woman to lead a modern nation after Mrs Sirimavo Bandaranaike of Ceylon. She is first and foremost a seasoned professional politi cian. Indira has grown up into a brave soldier in India's service. She considers no sacri fice large enough for the nation. Her two sons Rajiv and Sanjay are studying in the Unite Kingdom.

Never part without loving words to think of during your absence. It may be that we may not meet again in life.

— Richter

It is the vice of a vulgar mind to be thrilled by mere bigness.

—E. M. Forster

Education improves the qualities which nature has bestowed on us.

Every stone of Chittorgarh tells some tale of heroism or romance. The steep tower of Victory built by Rana Kumbha stands sentinal over the historic fort as a silent memorial to the glory of Rajputs who never bowed before the moghul kings. It was built to commemorate Rajput victories over the moghuls. Forlorn off the beat Jaisalmer, with its temple vaults and hordes of manuscripts has a rugged charm and spell of its own.

Udaipur—the beauty queen of the East, also known as city of sunrise and Venice of east is worth a visit for its [illegible] charm as well as antiquities. Udaipur has the gift [illegible] r. Little island palaces are set in the middle like [illegible]

Very near from the lake-fringed city of Udaipur—the Haldi Ghati valley stands as a shining testimony of the heroic land that gave birth to a magnificent personality like Maharana Pratap—the unconquered hero of Hinduism—who always called Akber a 'Turk'.

Mewar is the land of Padmini—the Helen of Indian History who was shown to Allauddin Khilji in a mirror. It is also the land of immortal Meeran whose songs of devotional fervour have drifted down the waters and are sung in every Indian home.

A city of parks and palaces of a magnificent river front Kota—the southeastern gateway of Rajasthan—is fast coming up as a giant industrial complex.

In fact Kota is hub of Rajasthan industries. Masooria cloth manufactured in Kota is unrivalled. India's second atomic power plant at Rana Pratap Sagar dam is 32 miles away from Kota. Ranathambhore at Sawai Modhopur is also a worth seeing place.

Culture is like a honey comb, which gives you sweetness and light.

Character, the greatest national strength is built on play-fields.

Our President

. S. RADHAKRISHNAN

Jugalkishore singh
XI C

DR. Sarvapalli Radhakrishnan was born on 5th Sept. 1888 in Andhra Pradesh. On 5th September, 1966 his 78th birth annivarsary was celebrated. As Mr. Nehru's birthday 14th Nov. is observed as childrens'day, Mrs. Sarojini Naidu's is celebrated as women's day, Acharya Vinoba Bhave's birthday September 11 is celebrated as villagers'day similarly teachers' day on 5th September synchronizes with the birthday of our President himself a distinguished teacher.

Today two million teachers are custodians of the future citizens of India. Distinguished teachers are given [illegible] and awards on this day. There is an interesting incident about [illegible] was leaving to start for the station of Madras to join Calcutta University. [illegible] removed the horse from the carriage and themselves pulled his coach up to the [illegible] shows how much popular and a successful teacher he was.

[illegible]dent is educated—a friend, philosopher and guide. Tall and [illegible] [illegible] of his own with a new type of turban and a [illegible] He [illegible] [illegible] best of India and the best of the West. He is an outstanding [illegible] philosopher of the world. He is an orator of first rank. In May [illegible] he was [illegible]eted highest office of the President of India.

IMPORTANCE OF TIME

vijay kumar gupta
Class XI E

TIME is very valuable thing. There is a great importance of time in the world. Those who spend their time in right way reap the fruit of it. They get health, wealth & power. They can succeed in every sphere of their life. It is only time from which name and fame can be earned. Time is on the wing and it flies swiftly. So we should make good of every moment of time. Every minute wasted is wasted for ever. According to this principle we should not waste the time in useless things. "Work is long after all and life is short". A minute saved is a minute gained. Hence those who want to accomplish something good in this world, should make the best use of every minute they have at their disposal. "Money once wasted can be regained, health once lost can be recovered but time once wasted can not be got back."

We should use our time in proper things The first duty of every man is to be punctual in his duties. We can get success by punctuality. An unpunctual person can never succeed whether he is a student or a businessman. Great men could not succeed in their life without punctuality. They did every work at fixed time.

The second enemy of time is idleness. We know that "Idle man's brain is devil's workshop." If we are idle, we are enmeshed with doubts, desires and sorrows. If the mind is not busy without something good, it would think of some evil. Idle men can never succeed in their life.

Often it is seen that the men postpone their work for the next day. is also a

SCIENCE

hansraj
Class XI C

"All those wrongs shall all be righted
Good shall dominate the land,
For the darkness now is lighted
By the torch in science's hand."

ACHIEVEMENTS of man surpass those of gods and demons. If like Rip Van Winckle our forefathers were to wake up after a long sleep they will fail to recognise the present world. The twentieth century is the 'age of science.' Science has worked wonders. It has revolutionised our life. Time and space has been conquered. Communication has become easy. Science has promoted internationalism. Globe seems to have shrunk in size.

The blind can see, the deaf can hear, the lame can walk. Man can fly like a bird and swim like a fish. New things in medicines and surgery have been invented. It has added to human longevity. Plastic surgery can change an ugly girl into a beauty queen. Science has made possible even change of sex.

Gone is the age of steam: We are in the age of electricity. Electricity changes night into day. Cooler is there to cool us, heater is there to warm us. Cinema entertains us. Radio recreates and amuses us besides it gives latest news Television even transmits moving

s together with the voice. Wireless telegraphy helps in talking from distant people. lift heavy weights. Tractors plough fields, sow seeds, reap harvests. Cookers cook d. Trains are run by electricity. Electricity runs flour grinding machines, saw mills, s etc. Electric printing press prints papers. Crematorums cremate dead bodies. Electric sell tickets. Electricity milks cows. There are electric calculating machines.

Thus electricity is the maid-of-all-work. To-day Satelites move round the earth. man hopes to reach the moon. Space traval is an ordinary thing. Nuclear bombs made world peace more secure. Due to science, to day man is better fed and clad. y victory does not go to superior soldiers but to superior scientists

But there is other side of the picture too It has divorced man from nature. It has fed dy but starved the soul. It takes away with another hand what it gives with one If a thermonuclear war occurs it will be a victory of dying over the dead. Science is d servant but a bad master. Manual work has been replaced by machines. Computers thrown workers out of employment. We have become weak and unhealthy. Industries have created two classes in society—haves and havenots. Class struggle between lists and exploited labourers has started. Man's reasoning power has increased so le at faith in God. Science in itself is neither a curse nor a blessing. It is its use which s it a use or abuse.

The DAYS OF WEEK

fateh mohd. panwar

Class XI D.

Solomon Grundy
Born on Monday.
Christened on Tuesday.
Married on Wednesday
Ill on Thursday.
Worse on Friday.
Died on Saturday.
Buried on Sunday.
That was the end of Solomon Grundy.

SCIENCE

hansraj
Class XI C

"All those wrongs shall all be righted
Good shall dominate the land,
For the darkness now is lighted
By the torch in science's hand"

ACHIEVEMENTS of man surpass those of gods and demons. If like Rip Van Winckle our forefathers were to wake up after a long sleep they will fail to recognise the present world. The twentieth century is the 'age of science.' Science has worked wonders. It has revolutionised our life. Time and space has been conquered. Communication has become easy. Science has promoted internationalism. Globe seems to have shrunk in size.

The blind can see, the deaf can hear, the lame can walk. Man can fly like a bird and swim like a fish. New things in medicines and surgery have been invented. It has added to human longevity. Plastic surgery can change an ugly girl into a beauty queen. Science has made possible even change of sex.

Gone is the age of steam: We are in the age of electricity. Electricity changes night into day. Cooler is there to cool us, heater is there to warm us. Cinema entertains us. Radio recreates and amuses us besides it gives latest news. Television even transmits moving

in foreign countries.

My hobby is gardening and horticulture. Its pursuit leads me from 'Joy to Joy'. It fills my vacant hours with pleasure and amusement. I take delight in digging the hard soil, manuring it, watering the plants, picking out weeds, and coarse grass. I trim flower-beds and cover the fruits and vegetables to shield them from insects.

I have learnt the art of grafting and transplanting the plants. Soothing delicious fragrant smell and the show of golden flowers dancing in the breeze brings me wealth and fills my heart with pleasure, as it flashes upon my inward eye which is the bliss of solitude. A garden forms a quiet retreat where one can rest, 'far from the madding crowd's ignoble strife'.

Duty & Discipline

To obey God's orders as delivered by conscience that is duty, to obey man's orders as issued by rightful authority—that is discipline. The foundation of both alike is denial of self for a higher good. Unless the lesson of duty be first well learned, the lesson of discipline can be but imperfectly understood.

madanlal

Class XI E

'Blessed is the man who has his hobbies'.

—Lord Brougham

'What is this life, if full of care,
'We have no time, to stand and stare'.

THE poet stresses the importance of leisure in th above lines. All work and no play makes Jack a dull boy Hobby is that pursuit or pastime which we carry on in ou leisure hours Its aim is not to earn money.

Different people have separate hobbies according t their tastes and means. Collecting curios, writing of books stamp collection, coin collection, gardening, star gazing fishing, pen friendship, painting, shooting, swimming, photography are well known hobbies. Some girls have knitting as their hobby. A good hobby is like our friend in need. A hobby provides a change from the daily routine and thus relieves us from boredom and monotony of daily work. It gives something to occupy our minds. We should never allow a hobby to interfere with our main occupation.

Indians waste their time in idle gossip and care a little to adopt a healthy hobby. Hobby

a very popular in foreign countries.

My hobby is gardening and horticulture. Its pursuit leads me from 'Joy to Joy'. It fills my vacant hours with pleasure and amusement. I take delight in digging the hard soil, manuring it, watering the plants, picking out weeds, and coarse grass. I trim flower-beds and cover the fruits and vegetables to shield them from insects.

I have learnt the art of grafting and transplanting the plants. Soothing delicious fragrant smell and the show of golden flowers dancing in the breeze brings me wealth and fills my heart with pleasure, as it flashes upon my inward eye which is the bliss of solitude. A garden forms a quiet retreat where one can rest, 'far from the madding crowd's ignoble strife'.

Duty & Discipline

To obey God's orders as delivered by conscience that is duty, to obey man's orders as issued by rightful authority—that is discipline. The foundation of both alike is denial of self for a higher good. Unless the lesson of duty be first well learned, the lesson of discipline can be but imperfectly understood.

SHASTRI JI

akbar zafar khan
Class X A

SHRI Lal Bahadur Shastri our beloved ex-pri minister died on duty. He must have had a weak hea When he took over as prime minister he had suff red mild heart attack. Yet he dared the strain of a long ar tiresome journey to Russia just to establish lasting pea between India and Pakistan. The meeting place Tashkent now famous all over the world for the reason that India ar Pakistan agreed not to use forces in settling their pr blem "Tashkent spirit" has become a noble sentiment and applicable in every phase of human existence.

He followed a very great man Nehru, the founder of modern India and any othe immediate successor of Nehru ji would have remained in total eclipse but Shastri j gained immence popularity by his unassuming and humble approach to all the problems tha arose during his prime ministership.

The challenge posed by Pakistan in the delusion that Shastri ji may succumb to the bombast of Pakistani rulers and possibly agree to accede to their illegal demands met with a daring bold and courageous rebuff by Shastr ji. He never yielded to a false cause. So our army fought bravely and won.

Shastri ji was religious minded and most honest. His honesty bred courage and gave him vision. Shastri ji never lost temper, never lost courage. We missed Nehru ji but Shastri ji filled ably Nehru ji's place and in him there was fitting reply to the query 'After Nehru who ?'

Born in not a very rich family of humble origin Shastri ji led an ideal life and rose to be a great man and died a hero.

Jai Jawan ! Jai Kisan !!

पुस्तकालय व वाचनालय

इस संस्था का निजी पुस्तकालय है—जो संख्या की दृष्टि से ही नहीं बल्कि ज्ञान-विज्ञान के प्रतिष्ठित ग्रन्थों के कारण बीकानेर की अन्य शिक्षण संस्थाओं की तुलना में विशेष महत्व रखता है। सन् ६५ तक छात्रों व शिक्षकों को पठन हेतु दी गई पुस्तकों की संख्या लगभग १०,००० है। पुस्तकों की संख्या में उत्तरोत्तर बढ़ोतरी हुई है। स्थानाभाव के कारण पुस्तकालय व्यवस्था को चलाने में काफी कठिनाई उठानी पड़ती है। फिर भी संस्था प्रधान द्वारा इस दिशा में काफी सुविधाजनक स्थिति तैयार की गई है। वाचनालय का लाभ संस्था के छात्र तो अधिकाधिक उठाते जा ही रहे हैं। किन्तु रात्रि के समय आसपास का श्रमिक वर्ग भी बौद्धिक ज्ञान की इस गंगा में गोता लगाने में किसी से पीछे नहीं रहता। दैनिक पत्रों के अलावा ४३ प्रकार की पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। सच पूछा जाय तो वाचनालय को सर्व-साधारण के लिये अधिकाधिक लाभकारी बनाने का श्रेय वर्तमान अतिरिक्त शिक्षाध्यक्ष श्री बोर्दिया जी को है जिन्होंने प्रौढ़ शिक्षण संस्था को जन्म देकर इसके द्वारा प्रौढ़ लोगों का बड़ा फायदा किया है।

खेल-कूद

बौद्धिक विकास का आधारस्थल शारीरिक विकास पर निर्भर है। खेल-कूद के अभाव में शिक्षा निश्चित रूप से निष्प्राण कही जा सकती है। स्वस्थ शरीर में ही उत्तम मस्तिष्क का निर्माण होता है। छात्रों को बौद्धिक व चारित्रिक क्षेत्र में आगे बढ़ाने का श्रेय खेल-कूदों को ही दिया जा सकता है। शिक्षा विभाग इस प्रवृति को विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से गतिशील बनाने का भागीरथ प्रयत्न कर रहा है।

मैदान की कमी को देखते हुए भी यहां के छात्र नियमित खेल-कूदों में बराबर भाग लेते हैं। दूर स्थित छात्र प्रधानाध्यापक महोदय द्वारा दिये गये उदार सहयोग का सामूहिक रूप से लाभ उठाते हुए स्कूल द्वारा प्रदत्त खेल-सामग्री लेकर अपने मोहल्लों में स्थित मैदानों में ही खेल कर अपनी रुचि को पूरा कर पाते हैं।

यह विद्यालय खेलकूदों की दृष्टि से सम्पूर्ण राजस्थान में फुटबॉल में गत तीन वर्षों तक अग्रणी रहा है। इस वर्ष भी नागासर में आयोजित जिला-स्तरीय खेल-कूद प्रतियोगिताओं में इसने फुटबॉल व कबड्डी को छोडकर प्रायः सभी खेलों में विजयी होकर पुरस्कार प्राप्त किये है, साथ में जनरल चैंम्पियनशिप भी अर्जित की है। इस शाला के सर्वोत्तम खिलाड़ियों में मगन सिंह, नोमेश त्यागी, नाल्खाँ, जोन राजेन्द्र जोन आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इन खिलाड़ियों ने सुदृढ़ खेल-कौशल का परिचय दिया है, इसमें सदेह नहीं। पूर्व शिक्षाध्यक्ष श्री मेहता के शब्दों में फोर्ट स्कूल के यशस्वी खिलाडियों ने फुटबॉल की दृष्टि से पूरे प्रान्त का नाम उज्ज्वल किया है। अतः इनके खेल-कौशल पर गौरव अनुभव करना स्वाभाविक ही है।

एन. सी. सी. व हवाई प्रशिक्षण

देश की स्वतन्त्रता के पश्चात् सन् १९४८ में इस प्रवृत्ति का शुभारम्भ छात्रों में अनुशासन व राष्ट्रीय सुरक्षा की भावना सुदृढ़ करने की दृष्टि से किया गया जो अपने उद्देश्य की पूर्ति में सचमुच एक प्राणवान संगठन सिद्ध हो रहा है। चीनी व पाकिस्तानी आक्रमण के समय एन. सी. सी. के छात्रों ने देश की

आंतरिक शांति को बनाए रखने व जनता के मनोबल को ऊंचा उठाने में जो महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है, उसकी जितनी सराहना की जाय थोड़ी है। समय-समय पर आयोजित अनेक कैम्पों में भाग लेकर इस शाला के छात्रों को अनुशासन की दृष्टि से ही नहीं बल्कि सर्वोत्तम सम्मान गौरव भी हमारे [illegible] हुआ। स्टेडियम में राष्ट्रीय समारोहों पर आयोजित सैनिक परेड में यहां के छात्रों का प्रदर्शन भी प्रशंसनीय रहा। इस स्कूल के छात्र एन. सी. सी. के अधिकारी वर्ग द्वारा दिए गये सफल प्रशिक्षण के फलस्वरूप सेना के उच्च पदों पर आसीन हो चुके हैं।

शिक्षा सत्र ६५-६६ में राज्य के शिक्षा मन्त्री माननीय श्री बृजसुन्दर जी शर्मा को शाला परिवार ने ११११) रुपये राष्ट्रीय सुरक्षा कोष हेतु प्रदान किये। शाला के [illegible] अपने ग्रन्थ 'नेहरु महान्' की १०० वर्षों तक की रायल्टी राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में देते रहने का [illegible] कर भारतीय लेखकों के लिये अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया। साथ [illegible] सुरक्षा कार्य में भी तत्परता दिखाई। शिक्षा मन्त्री महोदय ने छात्रों द्वारा प्रदर्शित गतिवि[illegible] भूरि-भूरि [illegible] करते हुए राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में दी गई राशि के लिये आभार पत्र भेजा।

संस्था के छात्रों की सैनिक दक्षता से प्रभावित होकर ही सरकार ने इस सत्र से [illegible] योजना' प्रारम्भ की है, जिसमें लगभग १०० छात्रों की प्रथम टोली प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है। [illegible] उत्साह को देखते हुए यह प्रवृत्ति भी उत्तरोत्तर विकासोन्मुख स्थिति में निश्चय ही पहुंच सकेगी।

स्काउट्स

समाज सेवा व जनकल्याण की भावना को मूर्त रूप देने के लिए इस [illegible] महोदय व सहायक अध्यापक श्री भगवान सिंह आदि की देख-रेख में स्काउटिंग की [illegible] है चल रही है। छोटी-बड़ी आयु के छात्रों में इस कार्य के प्रति जो उत्साह दिखाई दे रहा है [illegible] शिक्षा विभाग के लिए गौरव की वस्तु है। समय-समय पर यहां के छात्रों [illegible] परीक्षा ही उत्तीर्ण नहीं की है बल्कि प्रेसीडेंट स्काउट प्रमाण पत्र भी प्राप्त किया। [illegible] का विकास भी आशानुरूप चल रहा है। प्रसन्नता की बात है कि इस [illegible] शिविर में भाग लेने हेतु शाला की ओर से जा रहे हैं।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

शिक्षा के [illegible] मानदण्ड में पुरुषार्थ [illegible] सांस्कृतिक चेतना को जागृत करने की दृष्टि से [illegible] [illegible] है। इसी ए [illegible] [illegible] [illegible] सहिष्णुता व बौद्धिक क्षमता [illegible] [illegible] का परिचय [illegible] राष्ट्र व समाज के प्रतिरोध की भावना का [illegible]

प्रगति का सही मूल्यांकन करने की क्षमता व राष्ट्र रक्षा की भावना बलवती हुई। अध्यापकों व विद्यार्थियों के बीच पारिवारिकता व कौटुम्बिक भावना का विकास करने के साथ-साथ समाज के निर्माता शिक्षक की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः पल्लवित व पुष्पित करने की दृष्टि से 'अध्यापक दिवस' का आयोजन विशेष महत्त्व-पूर्ण रहा यह भी सत्य है कि विचारों के आदान-प्रदान का सही माध्यम होने के साथ-साथ भावनात्मक एकता की दृष्टि से एक भाषा का राष्ट्रीय दृष्टि से विकास जरूरी है। गांधीजी के शब्दों में "बिना राष्ट्र भाषा के राष्ट्र गूंगा है।" पंचवर्षीय योजनाओं में जनसहयोग पाने की दृष्टि से राष्ट्रभाषा हिन्दी का विकास जरूरी है। इस बात को ध्यान में रख कर ही राजस्थान सरकार ने हिन्दी दिवस' को महत्त्व दिया। छात्रों ने इस आयोजन के फलस्वरूप प्रथम बार हिन्दी के बहुँमुखी स्वरूप व देश-विदेश में उसके बढ़ते हुए गौरव-शाली विकास-क्रम से परिचय प्राप्त किया।

इस प्रकार विद्यालय छात्रों के बौद्धिक, नैतिक व सांस्कृतिक विकास की दृष्टि से अधिकाधिक सफलता प्राप्त करता जा रहा है। इसके लिए संस्था के प्रधानाध्यापक व अन्य सहयोगियों का उत्साह सचमुच प्रशंसनीय है। विद्यालय परिवार सम्माननीय अतिरिक्त शिक्षाध्यक्ष श्री बोर्दिया साहब का बहुत आभारी है जिनके पुनीत सहयोग से प्रयोगशाला का एक कक्ष बनकर तैयार हो सका। आशा है इस संस्था की प्रगति आशानुरूप होती जाएगी।

स.अ की उल्लेखनीय बातें

★ भारती पत्रिका ने गत दो वर्षों में अखिल राजस्थान प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

★ जिला व मंडलीय और राज्य-स्तरीय फुटबॉल में लगातार तीन वर्षों तक प्रथम स्थान मिला।

★ इसी प्रकार टेबिल-टेनिस में भी गत दो वर्षों तक प्रथम स्थान प्राप्त किया।

★ हॉकी खेल में जिला व मंडलीय में प्रथम तथा राज्य-स्तरीय में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

★ बैडमिन्टन खेल जिला व मंडलीय में प्रथम स्थान मिला।

★ उद्योग की ट्राफी गत वर्ष शाला को प्राप्त हुई।

★ जिला स्तरीय विज्ञान मेला शाला में आयोजित हुआ जिसमें छात्रों ने अद्वितीय प्रयोग प्रदर्शित किए।

★ एन० सी० सी० व स्काउट की सेवाएं प्रशंसनीय रहीं।

एजूकेशनल प्रेस,बीकानेर